उल्लू तन्त्र
कौवा तन्त्र
और पशु-पक्षी तन्त्र

(सम्पूर्ण तीनों खण्ड)

लेखक :

के. एल. निषाद (भैरमगढ़ी)

संस्थापक : यक्षिणी तन्त्र, वनस्पति तन्त्र एवं उल्लू और पशु-पक्षी तन्त्र शोध केन्द्र

तथा

आदिवासी क्षेत्रों की प्राचीन लुप्त विद्याओं के गहन अध्ययनकर्ता

और

छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश के तन्त्र शिरोमणि

मूल्य : ₹ 200.00

आवश्यक सूचना

हमारी प्रकाशित पुस्तकों में सभी विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्राचीन मान्यताओं, प्रचलित किवदंतियों और दुर्लभ तथा लुप्तप्राय ग्रन्थों के आधार पर इन मन्त्र-तन्त्र विद्याओं और यन्त्रों को बनाने व उनके प्रयोग करने के ढंग का वर्णन पुस्तकों में किया हुआ होता है। प्रत्येक पुस्तक में दिए गये वर्णन उस विषय की जानकारी के लिए हैं। यदि कोई पाठक कोई भी उचित या अनुचित प्रयोग करता है तो वह उसके हानि-लाभ का स्वयं उत्तरदायी होगा। जानवरों व पशु-पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अत: पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

प्रकाशक, मुद्रक व विक्रेता को विषयवस्तु की जानकारी नहीं होती। अत: तत्संबंधी विस्तृत ज्ञान के लिए अन्य पुस्तकें पढ़ें।

कुछ प्रसिद्ध व पुरानी पुस्तकों के लेखक जो स्वर्गवासी हो चुके हैं अथवा जिनका लेखकों व तन्त्रिकों का कोई स्थाई पता नहीं है और फोन या मोबाइल नम्बर नहीं है, उसके लिए प्रकाशक व मुद्रक की मजबूरी है। अत: इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं कि उनसे सम्पर्क नहीं करवा सकते।

इस पुस्तक के पृष्ठ १ से ८० तक की जानकारी के लिए—इसी लेखक की पुस्तक **तान्त्रिक तरंग** पढ़ें। प्रस्तुत पुस्तक उपरोक्त पुस्तक का ही एक भाग है।

प्रकाशक-लेखक-मुद्रक

अनुक्रम

उल्लू तन्त्र
कौवा तन्त्र
और पशु-पक्षी तन्त्र

(सम्पूर्ण तीनों खण्ड)

लेखक :

के. एल. निषाद (भैरमगढ़ी)

संस्थापक : यक्षिणी तन्त्र, वनस्पति तन्त्र एवं उल्लू और पशु-पक्षी तन्त्र शोध केन्द्र

तथा

आदिवासी क्षेत्रों की प्राचीन लुप्त विद्याओं के गहन अध्ययनकर्ता

और

छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश के तन्त्र शिरोमणि

मूल्य : ₹ 200.00

आवश्यक सूचना

हमारी प्रकाशित पुस्तकों में सभी विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्राचीन मान्यताओं, प्रचलित किवदंतियों और दुर्लभ तथा लुप्तप्राय ग्रन्थों के आधार पर इन मन्त्र-तन्त्र विद्याओं और यन्त्रों को बनाने व उनके प्रयोग करने के ढंग का वर्णन पुस्तकों में किया हुआ होता है। प्रत्येक पुस्तक में दिए गये वर्णन उस विषय की जानकारी के लिए हैं। यदि कोई पाठक कोई भी उचित या अनुचित प्रयोग करता है तो वह उसके हानि-लाभ का स्वयं उत्तरदायी होगा। जानवरों व पशु-पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अतः पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

प्रकाशक, मुद्रक व विक्रेता को विषयवस्तु की जानकारी नहीं होती। अतः तत्संबंधी विस्तृत ज्ञान के लिए अन्य पुस्तकें पढ़ें।

कुछ प्रसिद्ध व पुरानी पुस्तकों के लेखक जो स्वर्गवासी हो चुके हैं अथवा जिनका लेखकों व तन्त्रिकों का कोई स्थाई पता नहीं है और फोन या मोबाइल नम्बर नहीं है, उसके लिए प्रकाशक व मुद्रक की मजबूरी है। अतः इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं कि उनसे सम्पर्क नहीं करवा सकते।

इस पुस्तक के पृष्ठ १ से ८० तक की जानकारी के लिए—इसी लेखक की पुस्तक **तान्त्रिक तरंग** पढ़ें। प्रस्तुत पुस्तक उपरोक्त पुस्तक का ही एक भाग है।

प्रकाशक-लेखक-मुद्रक

अनुक्रम

उल्लू तन्त्र कौवा तन्त्र एवं पशु-पक्षी तन्त्र

तन्त्र जगत में पशु पक्षियों को भी विशेष स्थान प्राप्त है। कुछ पशु-पक्षियों के अंग-प्रत्यंग में धन समृद्धि प्रदान करने की चमत्कारी शक्ति होती है। कुछ ऐसे भी पशु-पक्षी भी हैं जिसके अंग-प्रत्यंग को तांत्रिक विधियों से सिद्ध करके अनेक तन्त्र प्रयोग किए जाते हैं। कुछ पशु-पक्षियों में आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण की शक्ति होती है। इस पुस्तक में कुछ ऐसे ही पशु-पक्षियों के सम्बन्ध में तान्त्रिक प्रयोग प्रस्तुत हैं जो कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए सफल व सार्थक सिद्ध होंगे। पीड़ित व्यक्ति प्रयोग करके अपना जीवन सुखी बना सकता है। एक बात और भी लिखना चाहूँगा कि प्रस्तुत तन्त्र प्रयोग सरल लगते हुए भी एक विस्फोटक विलक्षण शक्ति से परिपूर्ण हैं।

कृपया साधक और पाठक ध्यान दें

यह पुस्तक केवल उन्हीं श्रद्धावान व्यक्तियों के लिए है जो भारतीय प्राचीन गुह्य विद्याओं में पूर्ण रूप से आस्था रखते हैं। अत: जिस किसी के पास भी यह पुस्तक रहे उसे चाहिए कि वह इसको पवित्रता से रखे तथा किसी ऐसे व्यक्ति के हाथ में न दें जो इस विद्या का अपमान करता हो। पुस्तक का सम्मान करना एवं इसे साफ-सुथरा रखना; इसमें दिए प्रयोगों में सफलता पाने के लिए अनिवार्य है। पुस्तक को जहाँ भी रखें रेशमी वस्त्र से सुन्दर ढंग से आवेष्टित करके रखें एवं उसी प्रकार से किसी अन्य को भी रखने के लिए प्रेरित करें।

—लेखक

विशेष—

पुस्तक में दिए गये किसी भी प्रयोग के हानि-लाभ के उत्तरदायी प्रकाशक या लेखक नहीं हैं। जानवरों से सम्बन्धित किसी भी सामग्री के लिए प्रकाशक को फोन न करें। ये प्रतिबन्धित हो चुकी हैं। पुस्तक को केवल भारतीय पुरातन विद्या की जानकारी के लिए अध्ययन करें।
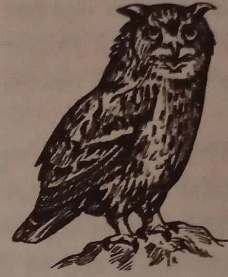
उल्लू तन्त्र

उल्लू तन्त्र जगत का महान चमत्कारी, चर्चित, रजनीचर पक्षी है। इसके सम्बन्ध में अधिक विस्तार से लिखना चाहूँगा क्योंकि इस पक्षी को सभी वर्ग के लोग जानते हैं। उल्लू को हमारे देश के निवासी आज भी अशुभ मानते हैं परन्तु इसी रजनीचर पक्षी को विदेशों में बड़े आदर के साथ शुभ माना जाता है। वैसे इसकी बोली भयानक और डरावनी होती है, हमारे अध्यात्म जगत में इसे लक्ष्मीजी का वाहन माना गया है। जहाँ तक मेरे अनुभव में ऐसा आया है कि उल्लू ज्यादातर शुभ फल ही देता है। जैसे कि उल्लू का मकान के अन्दर घोंसला बनाकर निवास करना यह युति अतिशुभ होती है। इसके उस घर में निवास करने वाले पर सदा ही लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी, यदि उल्लू मकान के ठीक दरवाजे की ओर बोल रहा हो तो कोई बाहरी मेहमान कुछ लेकर आने वाला है ऐसा संकेत मिलता है। यदि उल्लू मकान के पीछे की ओर बोल रहा हो तो उस दिशा से लाभ होने के संकेत मिलते हैं। उल्लू किसी के सिर पर आकर बैठ जाए तो समझो वह व्यक्ति कुछ ही दिनों में महान व्यापारी बन सकेगा। इस बारे में एक ऐसा भी अनुभव आया है कि उल्लू का सिर पर बैठना उस व्यक्ति को यह बताता है कि उस व्यक्ति को शीघ्र ही कोई नौकरी मिलने वाली है। पर ऐसा होना आज दुर्लभ है। उल्लू किसी नारी के सिर पर बैठे तो समझो वह नारी को पुत्रवान होने की ओर संकेत दे रहा है। उल्लू की चोंच को यदि दुकान में गाड़ दिया जाए तो उस दुकान की बिक्री बढ़ जाती है। नख को धारण करने का प्रचलन आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में है। नख धारण करने से आकस्मिक धन प्राप्ति होने की

संभावना बनी रहती है। उल्लू के पंखों को आग में जलाकर भभूत तैयार भी किया जाता है। इस भभूत की कुँवारी कन्या तिलक लगा ले तो उसे सुन्दर वर की प्राप्ति होती है। यदि उल्लू के दाहिने पैर को तिजोरी में रखा जाए तो तिजोरी खाली नहीं होती।

अब कुछ अशुभ लक्षण भी बता देते हैं। उल्लू का बायाँ पैर शत्रु के घर में डाल देने पर उस शत्रु का उच्चाटन हो जाता है पर हमें इस बात को समझना पड़ेगा कि उल्लू का दाहिना पैर शुभ और बायाँ पैर अशुभ क्यों? इसका एक कारण यह है कि उल्लू हमेशा खराब काम के लिए जैसे साँप, चूहा आदि को अपने बाएँ पैर से ही पकड़कर मार डालता है। मैंने यहाँ तक देखा है कि उल्लू श्मशान में जाकर बाएँ पैर पर ही खड़े होकर रुदन करता है। उल्लू बाएँ पैर से अपने अंग को नोचता है आदि अनेक उदाहरण इसके बाएँ पैर के हैं। शायद इसी कारण से उल्लू के बाएँ पैर को उच्चाटन प्रयोग में लाया जाता है।

उल्लू में एक और भी अचरज भरी विशेषता है कि मादा उल्लू जब बच्चा देती है और बच्चा कुछ बड़ा हो जाता है उस वक्त मादा उल्लू अपने बच्चों को दाहिने पैर से पकड़कर रात को जमीन में उतार देती है और फिर तत्काल अपने पैरों से पकड़कर अपने घोंसले में ले जाती है, तो वह ऐसा क्यों करती है? इसका भी कारण है। मादा उल्लू बच्चों को रात में इसलिए जमीन पर उतारती है कि उल्लू के बच्चे के पैर जमीन में लगें और बच्चा शीघ्र से शीघ्र बढ़े। कभी-कभी ऐसा देखने में आया है कि उल्लू अपने बच्चों को किसी मन्दिर के पास लाती है उसे वहाँ छोड़कर दूर चली भी जाती है। यह भी एक शुभत्व की निशानी है। मैनें यह भी देखा है कि उल्लू अपना पंख उस जगह फड़फड़ाती है जहाँ पर भूतों का वास होता है। कभी-कभी उल्लू अपना पंख नदी संगम में भी फड़फड़ाती है और एक या दो पंख उल्लू के शरीर से गिरकर जमीन पर पड़ा रहता है। यदि किसी भाग्यवान व्यक्ति को ऐसा पंख मिल जाता है तो उस व्यक्ति को चाहिए की उसे तिजोरी में रख ले तो धन की बढ़ोत्तरी होगी।

कुछ तान्त्रिक ग्रन्थों में लिखा भी गया है कि उल्लू के मांस को किसी

स्त्री या पुरुष को खिला दिया जाए तो वह खिलाने वाले के वश में हो जाते हैं। उल्लू के गर्दन में जो बाल होते हैं उसे जलाकर राख कर ली जाए, फिर उसे अपने चेहरे पर लगाने से चेहरे की सुन्दरता बढ़ती है।

उल्लू अकस्मात किसी गम्भीर बीमारी वाले के शरीर को छू ले तो वह निरोग होने लगता है। किसी के खेत खलिहान में उल्लू बैठकर बोले तो समझो उसकी आर्थिक उन्नति अतिशीघ्र होने वाली है। उल्लू नववधू को स्पर्श कर दे तो समझो वह कन्या अतिशीघ्र पुत्र को जन्म देगी। कहते हैं कि इस तरह के बालक को गर्भ से दाँत निकला हुआ होता है पर ऐसा कहीं-कहीं हुआ होगा तभी तो गाँव के बुजुर्ग कहा करते हैं कि अमुक घर की नववधू को उल्लू छू दिया है उसकी सन्तान की दाँत गर्भ से होगी। इस सच्चाई का पता लगाना चाहिए क्योंकि यह एक शोध का विषय भी है। मैंने अभी तक ऐसा होना पाया नहीं है।

उल्लू का कलेजा चाँदी की डिब्बी में रखकर रखने वाला लक्ष्मीवान बनता है। ये बात अन्धविश्वास नहीं है क्योंकि मैंने एक व्यक्ति के पास उल्लू का कलेजा देखा है और वह सुखी-सम्पन्न है। वैसे तान्त्रिक अपनी सिद्धि के लिए उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके रखा करते है। मैनें स्वयं भी अपने सिद्धि के लिए उल्लू का सहारा लिया और कुछ साधनाओं में सफलता भी प्राप्त की। अब उल्लू से कैसे साधना सम्पन्न की जाती है, इसके लिए पता लगाएँ कि उल्लू का बसेरा कहाँ पर है? पता लग जाने के पश्चात अमावस्या के दिन किसी युक्ति से उल्लू को पकड़कर पिंजड़ा में डालकर बन्द कर देना चाहिए।

यहाँ सोचना होगा जब तक उल्लू पिंजड़ा में बन्द रहेगा, किसी के द्वारा दिए गए खाना को नहीं खाएगा। उल्लू के सामने तेल का दीपक जलाकर स्वयं उसके सामने बैठ जाना चाहिए और उल्लू की आँख पर अपनी आँख गड़ाकर एकटक त्राटक करना करना चाहिए। ये प्रयोग रात्रि को निशाकाल (अंधेरे पक्ष) में ही करना चाहिए। एकटक त्राटक में देखते रहने पर उल्लू की आँख की रोशनी साधक के आँख में आती है। उस समय एक दिव्यानुभव होता है, कुछ-कुछ परछाँई दिखाई देने लगती है, दूसरे दिन फिर

त्राटक करने से और भी कई अनुभूति होने लगती है, तीसरे दिन जब उल्लू के आँख में त्राटक करने बैठें उसी वक्त उल्लू बोलने लगता है, उसकी आवाज इस तरह होती है—हूँ हूँ हूँ हूँ अं अं हूँ। जब ऐसी आवाज उल्लू बोलने लगे तो उस वक्त सतर्क हो जाना चाहिए कि किसी अदृश्य शक्ति का आगमन हो रहा है। साधक एकटक त्राटक करते रहे तो अन्त में उल्लू अपना सिर घुमा देती है। बस उसी वक्त दिव्यशक्ति साधक को मिल जाती है। इस दिव्य शक्ति के सहारे साधक अनसुलझे कार्य को सुलझाकर समाज का कल्याण व प्रयोग अच्छे कार्यों के लिए कर सकता है।

लक्ष्मी साधना में उल्लू

विश्व में उल्लू ही एकमात्र ऐसा पक्षी माना गया है जो दिन में देख नहीं सकता। उसकी आँखों की बनावट की कुछ इस प्रकार की है कि वह सूर्य की रोशनी या प्रकाश में देख नहीं सकता, उसकी आँखें चौंधिया जाती हैं। वह केवल अन्धकार में देख सकता है। बिल्ली से ७५ प्रतिशत अधिक उल्लू की दृष्टि रात्रि में कार्य करती है। उल्लू की उड़ान सुनसान, भयानक स्थानों, खंडहरों आदि में ही अधिक होती है। ऐसे ही स्थान उसे प्रिय भी हैं। शकुन शास्त्र के अनुसार जिस भवन पर उल्लू या चील बैठती है वह शीघ्र ही अपशकुनों और आपदाओं की परिधि में आ जाता है। उल्लू एक डरावना परन्तु सुन्दर पक्षी माना गया है। उसकी बोली अशुभ है। कहा जाता है अगर उल्लू किसी का नाम लेकर पुकारे तो उसकी मृत्यु लगभग निश्चित होती है। उल्लू निर्जनता और विपदा का प्रतीक भी है। मुहावरा बन गया है···और वहाँ उल्लू बोलने लगे। उल्लू के सम्बन्ध में यह न केवल भारत में वरन विश्व के अनेक देशों में भी अपशकुनी के रूप में अनेक बातें प्रचलित हैं। उल्लू को बेवकूफ के लिए इसी रूप में लिया गया है। लेकिन तन्त्र में उल्लू बहुत ही महत्त्वपूर्ण जीव है।

कुरूप, डरावनी, विकृत और तमाम अपशकुनों के बावजूद उल्लू लक्ष्मी का वाहन माना गया है। धन की देवी इसी को वाहन रूप में प्रयोग करती है। अपनी आकृति और व्यवहार के कारण उल्लू का तन्त्र, मन्त्र में

बड़ा महत्त्व माना गया है। सच तो यह है कि उल्लू की छिपी उपयोगिता को केवल तान्त्रिकों ने ही पहचाना है। इसी कारण एक अलग ही शाखा 'उलूक तन्त्र' के नाम से स्थापित हो गई है।

उल्लू वास्तव में लक्ष्मी का प्रतीक है। लक्ष्मी के साथ घनिष्ठता के कारण लक्ष्मी साधना में इसका विशेष महत्त्व है और इसी कारण उल्लू को तन्त्र में अजीब सा रहस्यमय स्थान दिया गया है। 'उलूक साधना' एक अति रहस्यमय, जटिल तान्त्रिक प्रक्रिया है और श्मशान से सम्बन्ध रखती है। उल्लू सिद्ध तान्त्रिक का पथ प्रदर्शन करता है। आज के युग में इस प्रकार की साधना करना असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है।

कई वर्ष पूर्व उत्तराखण्ड (हिमालय) की यात्रा के अवसर पर एक सिद्ध तान्त्रिक से परिचय होने पर उसके द्वारा उलूक साधना की वास्तविक विधि का पता चला था। उल्लू की विशेषता है वह जीवित अवस्था में और मरने के बाद दोनों ही स्थितियों में तन्त्र में उपयोगी सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त तान्त्रिक लोग उल्लू के हर अंग का तन्त्र साधना में उपयोग करते हैं।

उलूक साधना प्राय: दीपावली के अवसर पर ही की जाती है। श्रद्धा, निष्ठा और एकाग्रता के साथ इसको सम्पन्न कर आप लाभान्वित हो सकते हैं।

दीपावली से पूर्व कभी भी किसी भी समय उल्लू के पंख का एक हिस्सा प्राप्त कर लें। दीपावली के दिन उस पंख को लक्ष्मी की प्रतिमा के तले रख दें। पूजा उपासना के उपरान्त हवन कुण्ड में डालकर भस्म कर दें। जब तक वह पंख भस्म हो आप '**ॐ उलूकाय नमः**' का निरन्तर जाप करते रहें। पंख जलने पर दुर्गन्ध तो अवश्य होगी। आप उस ओर ध्यान न दें। इसके बाद वह भस्म एकत्रित कर लाल रंग के कपड़े में बाँध दें। अब यह तिलस्मी भस्म तैयार है। इसे घर के किसी कोने में छिपा कर रख दें।

जब तक यह पोटली आपके घर में रहेगी धनाभाव कदापि न होगा, इसकी किसी से चर्चा न करें। यह अत्यन्त सरल साधारण किन्तु उपयोगी साधना है, प्रत्येक गृहस्थ बिना किसी भय के कर सकता है। आप इस साधना

को करें, आपका कोई कार्य धनाभाव से न रूके, यही हमारी कामना है।

उल्लू वास्तव में लक्ष्मी का प्रतीक है। इसका प्रमाण आज भी है। जिन व्यवसायियों ने इसका प्रयोग व्यापार-चिह्न के रूप में किया है, वह करोड़पति बन गए हैं। विश्व प्रसिद्ध हथियार सौदागर औनासिस और राष्ट्रपति की सुन्दर पत्नी जैकलीन कैनेडी से विवाह करने वाला अरबपति है। उसका व्यापार-चिह्न उल्लू है। समाज में उल्लू हँसी-व्यंग्य का प्रतीक है, पर धनदायक है।

प्रिय साधकों! अगर आपके पास प्रचुर समय और साधना की शक्ति है तो आप निम्न मन्त्र का जाप भी कर सकते हैं—

''ॐ नमो उलूकराजे, नमो लक्ष्मी वाहने मम अभिलाषां पूर्ण कुरु अमुकस्य उच्चाटनं कुरु कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं फट् स्वाहा।''

उल्लू के विषय में एक अन्य चर्चित और प्रसिद्ध व्यक्ति के विचार भी देखें—

उल्लू का तन्त्र शास्त्र में विशद विवरण है। उसकी कुछ साधनाएँ इस प्रकार हैं—उल्लू एक मध्यम आकार वाला कुरुप पक्षी है। इसके रोम तथा पंख सफेदी लिए मटमैले ढंग के होते हैं। इसकी गर्दन छोटी होती है तथा सिर और नेत्र गोल होते हैं। चोंच छोटी तथा थोड़ी नीचे की ओर झुकी होती है। इस पक्षी की अनेक प्रकार की जातियाँ पाई जाती हैं।

इस पक्षी को सूरज की रोशनी में दिखलाई नहीं देता अर्थात् यह उजाले में अन्धा रहता है। रात के अन्धेरे में इसे खूब दिखलाई देता है। इसी कारण यह दिन के समय अपने घोंसले में ही बैठा रहता है और किसी को दिखलाई नहीं देता है। यह हमेशा रात के समय निकलता है और ऊँची जगहों पर बैठा दिखलाई देता है। पृथ्वी पर नीचे उतरकर नहीं घूमता। यह पक्षी सारे संसार में पाया जाता है। भारत में इस पक्षी को मनहूस, मूर्ख तथा अशुभ समझा जाता है। इसी कारण यहाँ इसके नाम पर अनेक गालियाँ भी प्रचलित हैं। यूरोप में इस पक्षी को शुभ माना जाता है और कई स्थानों पर इसके चित्र भी टाँगे जाते हैं। उल्लू के द्वारा भी शुभाशुभ का विचार तथा तान्त्रिक प्रयोग किए जाते हैं।

उल्लू के बोलने के शुभ-अशुभ फल

- अगर प्रातः उल्लू पूर्व दिशा में किसी वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ बोल रहा हो तो धन का लाभ होता है और चिन्ताएँ भी दूर होती हैं। अगर प्रातः उल्लू पक्षी नैऋत्य कोण में किसी ऊँचे स्थान पर बैठकर बोल रहा हो तो सुनने वाले को शारीरिक कष्ट होता है तथा वह बीमार भी पड़ता है। अगर प्रातः में उल्लू उत्तर दिशा में किसी खंडहर पर बैठकर बोल रहा हो तो उसका शब्द सुनने वाले को भय होता है तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्र में रोगी हो तो उसकी मृत्यु तक हो जाती है।
- अगर प्रातःकाल में उल्लू ईशान कोण में बैठा बोल रहा हो तो सुनने वाले के व्यवसाय में वृद्धि होती है और वह रोग-मुक्त भी हो जाता है।
- अगर प्रातःकाल में उल्लू पश्चिम दिशा में किसी सूखे वृक्ष पर बैठा हुआ हो तो सुनने वाले के धन का नाश होता है। अन्य स्थितियों में विभिन्न दिशाओं तथा कोणों में उल्लू पक्षी के बोलने का कोई विशेष फल नहीं होता है।
- अगर प्रातःकाल में उल्लू दक्षिण दिशा में किसी ऊँचे स्थान पर बोल रहा हो तो सुनने वाले के शत्रुओं का नाश होता है।
- मंगलवार को प्रातःकाल में अन्य किसी भी दिशा में उल्लू की बोली सुनाई देने का फल अशुभ बताया गया है।
- मंगलवार की सुबह में उल्लू पूर्व दिशा में किसी वृक्ष पर बैठा बोल रहा हो तो सुनने वाले को सन्तति-लाभ होता है और अगर पश्चिम दिशा में किसी सूखे वृक्ष पर बैठा बोल रहा हो तो सुनने वाला कठिन रोग का शिकार होता है।
- मंगलवार के दिन प्रातः में पूर्व दिशा के अतिरिक्त अन्य किसी दिशा में उल्लू की बोली सुनाई दे तो सुनने वाले को चाहिए कि वह निम्नलिखित मन्त्र का २१०८ की संख्या में जप करे तथा दान करे।

मन्त्र इस प्रकार है—"**ॐ नमो उलूक वाहिन्यै भगवती लक्ष्मी कृपां कुरु कुरु स्वाहा।**"

- ❖ दिन के प्रथम प्रहर में उल्लू बोल रहा हो तो भयंकर वर्षा होने की संभावना रहती है। दिन के तीसरे प्रहर में उल्लू बोल रहा हो तो अतिवृष्टि के कारण भीषण अकाल पड़ने की सम्भावना रहती है तथा अन्न मँहगा होता है।
- ❖ दिन के दूसरे प्रहर में उल्लू जिस स्थान पर बोल रहा हो, वहाँ कोई रोग फैलता है अथवा सुनने वालों के घर के बीमार पड़ते हैं।
- ❖ दिन के चौथे प्रहर में उल्लू बोल रहा हो तो मुखिया की मृत्यु अथवा अन्य प्रकार से संकट आता है।
- ❖ अगर यात्रा के समय घर अथवा गाँव से बाहर निकलते ही उल्लू बाईं ओर को बोले अथवा दिखाई दे तो सुख प्राप्त होता है।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू यात्री की पीठ के पीछे चले तो यात्री की मनोभिलाषा पूर्ण होती है।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू सामने की ओर बोले तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए। सुनने वालों को अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू दाईं ओर को बोले अथवा दिखाई दे तो वह अशुभ फलकारक होता है।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू पीछे-पीछे की ओर बोले तो शत्रु भय होता है।

रात्रि के विभिन्न प्रहरों में उल्लू के बोलने का सुनने वाले पर क्या प्रभाव होता है, उसे इस प्रकार समझना चाहिए।

- ❖ अगर रात्रि के द्वितीय प्रहर में उल्लू पूर्व दिशा में बोले तो सुनने वाले का धन-नाश, पश्चिम में बोले तो मानसिक चिन्ता, उत्तर में बोले तो रोग और दक्षिण में बोले तो नाना प्रकार की हानि होती है। अन्य दिशाओं में बोलने का कोई विशेष फल नहीं होता।
- ❖ अगर रात्रि के प्रथम प्रहर में उल्लू पूर्व दिशा की ओर किसी पेड़ की

डाली पर बैठा बोलता हुआ दिखाई दे तो सुनने वाले को धन का लाभ होता है तथा व्यवसाय में वृद्धि होती है। अन्य दिशाओं में बोलने का कोई विशेष फल नहीं होता।

- ❖ अगर रात्रि के तीसरे प्रहर में उल्लू किसी भी दिशा में बोले तो उसका भी कोई विशेष फल नहीं होता है।
- ❖ दक्षिण-पश्चिम कोण में बोलने पर मानसिक कष्ट होता है। उत्तर पूर्व कोण में बोलने पर किसी बिछुड़े हुए से मिलन होता है। दक्षिण-पूर्व कोण में बोलने पर आक्रमण होता है तथा उत्तर-पश्चिम कोण में बोलने पर सुनने वाले को शोक, चिन्ता एवं रोग आदि अशुभ फल होते हैं।
- ❖ अगर रात्रि के चौथे प्रहर में उल्लू पूर्व दिशा में बोले तो परदेश गया हुआ घर लौटकर आता है। अगर पश्चिम दिशा में बोले तो कृषि का नाश होता है। अगर उत्तर में बोले तो सुनने वाले को कष्ट होता है और अगर दक्षिण में बोले तो सुनने वाले के घर का कोई बीमार पड़ता है।

दिन में उल्लू दिखाई देने का फल

- ❖ अगर दिन की तीसरी घड़ी में उल्लू किसी ऊँचे स्थान, मकान, वृक्ष आदि पर बैठा दिखाई दे तो यात्रा सफल होती है तथा लाभ भी होता है। सुख-सम्मान की उपलब्धि होती है।
- ❖ अगर दिन की पहली घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा दिखाई दे तो यात्रा में सफलता मिलती है तथा चिन्ताएँ दूर होती हैं। अगर दिन की दूसरी घड़ी में उल्लू किसी सूखे वृक्ष की कोटर में बैठा दिखाई दे तो यात्रा असफल होती है।
- ❖ अगर दिन की पाँचवीं घड़ी में उल्लू किसी सूखे वृक्ष पर बैठा हुआ दिखाई दे तो किसी रोग अथवा दुर्घटना का शिकार बनना पड़ता है।
- ❖ अगर दिन की छठी घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा दिखाई दे तो सुख-शान्ति, व्यवसाय में सफलता एवं यात्रा में लाभ

होता है।

- अगर दिन की चौथी घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो व्यय में वृद्धि होती है तथा यात्रा सफल होती है।
- अगर दिन के सातवीं घड़ी में उल्लू किसी खण्डहर पर बैठा दिखाई दे तो पत्नी वियोग, शारीरिक कष्ट आदि अनेक प्रकार के अशुभ फल प्राप्त होते हैं।
- अगर दिन के आठवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो बिछुड़े हुए प्रेमी से मिलन होता है।
- अगर दिन की नवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो कोई परिजन लौटकर आता है।
- अगर दिन की ग्यारहवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले का किसी युवती से मिलन होता है। अगर किसी स्त्री को दिखाई दे तो किसी युवक से मिलन होता है।
- अगर दिन की बारहवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले का वियोग होता है। अगर किसी विवाहित स्त्री को दिखाई दे तो उसका पति से वियोग होता है।
- अगर दिन की दसवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले को असफलता हानि अथवा मुकदमें में पराजय मिलती है। अगर कोई रोगी देखे तो उसकी मृत्यु की सम्भावना रहती है।
- अगर दिन की तेरहवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले को किसी दुर्घटना का शिकार बनना पड़ता है अथवा उसे कोई विषैला जन्तु काटता है। अगर दिन की पन्द्रहवीं घड़ी में उल्लू किसी निर्जन स्थान अथवा कोटर में बैठा हुआ दिखाई दे तो मित्र वियोग चिन्ता एवं शारीरिक-कष्ट आदि फल प्राप्त होते हैं।
- अगर दिन की चौदहवीं घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ दिखाई दे तो धन का लाभ होता है। अगर गर्भवती हो तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है।

रात्रि में उल्लू के दिखाई देने का फल

- अगर रात्रि की पहली घड़ी में उल्लू किसी डाली पर बैठा दिखाई दे तो धन लाभ होता है। अगर देखने वाला नौकरी करता हो तो पदोन्नति होती है। अगर रात्रि की दूसरी घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली से उड़कर शोर मचाता हुआ भागता दिखाई दे तो परिवारजन की मृत्यु होती है।
- अगर रात्रि के चौथी घड़ी में घर के पश्चिम की ओर कोई उल्लू किसी वृक्ष की डाल पर बैठा हुआ दिखाई दे तो चोरी का भय होता है। अगर उसी समय उल्लू उड़कर उत्तर दिशा की ओर चला जाए तो डाकुओं के भय के साथ जीवन-हानि की सम्भावना भी रहती है।
- अगर रात्रि के तीसरी घड़ी में उल्लू किसी मकान की छत पर बैठा हुआ दिखाई दे तो व्यवसाय में लाभ अथवा मुकदमें में विजय प्राप्त होती है।
- अगर रात्रि की पाचवीं घड़ी में उल्लू अपने मकान के समीप किसी अन्य मकान पर बैठा दिखाई दे तो वह भयंकर आग लगने के भय का सूचक होता है।
- अगर रात्रि की छठी घड़ी में उल्लू किसी नीम के वृक्ष पर बैठा बोलता हुआ दिखाई दे तो पारिवारिक कलह तथा चिन्ताओं का सूचक होता है।
- अगर रात्रि की आठवीं घड़ी में उल्लू किसी मकान के मुंडेर पर बैठा हुआ दिखाई दे तो उस घर में श्री लक्ष्मी का आगमन होगा।
- अगर रात्रि की नवीं घड़ी में उल्लू आकाश में उड़ता हुआ दिखाई दे तो शारीरिक कष्ट होते हैं और उसे कोई लम्बी यात्रा करनी पड़ती है।
- अगर रात्रि की दसवीं घड़ी में कोई उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ दिखाई दे तो धन की वृद्धि होती है।
- अगर रात्रि की सातवीं घड़ी में उल्लू किसी दीवार पर बैठा दिखाई दे तो उस मकान के गिर जाने का भय होता है।

❖ अगर रात्रि की ग्यारहवीं घड़ी में कोई उल्लू कोटर में बैठा दिखाई दे तो घर में भूत-प्रेतों का उपद्रव होने अथवा चिन्ताएँ बढ़ने की सम्भावनाएँ अधिक रहती है।

❖ अगर रात्रि को बारहवीं घड़ी में उल्लू किसी मकान के भीतर घुसकर इधर से उधर फिरे तो उस मकान में रहने वालों के ऊपर संकट आ जाते हैं। उल्लू का इस प्रकार उड़ना या बोलना अशुभ बताया गया है।

❖ अगर रात्रि की चौदहवीं घड़ी में उल्लू किसी खेत में बैठा दिखाई दे तो उस खेत की फसल नष्ट हो जाती है।

❖ अगर रात्रि की पन्द्रहवीं घड़ी में कोई उल्लू किसी ऊँची जगह पर बैठा दिखाई दे तो अनेक चिन्ताएँ एवं कठिनाइयाँ दूर होती है।

❖ अगर रात्रि की तेरहवीं घड़ी में उल्लू किसी ऊँचे स्थान पर बैठा दिखाई दे तो घर से गया हुआ कोई अपने साथ धन लेकर लौट आता है।

उल्लू सम्बन्धी शकुन

❖ अगर किसी के मकान में घुसकर लगातार उल्लू बोलता रहे तो उस घर की सम्पत्ति को चोर ले जाते हैं।

❖ अगर उल्लू दिन के समय बोले तो वह अनिष्ट सूचक होता है।

❖ अगर उल्लू शब्द कर रहा हो तो उसे अशुभ समझना चाहिए, लेकिन अगर वह मैथुनार्थी होकर ऐसा कर रहा हो तो नष्ट नहीं होता।

❖ अगर उल्लू लगातार कई रात तक किसी के घर पर बोलता रहे तो उस घर का नाश हो जाता है।

❖ अगर उल्लू रात्रि के समय किसी के घर में बोले तो उसे दुःखदायक समझना चाहिए। वह श्रोता की मृत्यु का सूचक भी हो सकता है।

❖ अगर उल्लू कई रात तक किसी एक ही स्थान पर बैठकर बोलता रहे तो उसे उस देश के लिए अनिष्टकारक समझना चाहिए।

❖ अगर उल्लू 'चल चल' शब्द कर रहा हो तो उसे कलह की सूचना समझनी चाहिए।

❖ अगर उल्लू सामने की ओर बोले तो सुनने वाले के अनेक शत्रु होते

हैं। अगर पीछे पीछे की ओर बोले तो भी शत्रु भय होता है।

❖ अगर उल्लू किसी मकान के भीतर कोटर बनाकर रहना आरम्भ कर दे तो उस मकान की गरीबी दूर हो जाती है। अगर किसी बगीचे में रहे तो वहाँ के वृक्षों में अत्यधिक फल आते हैं। किसी भण्डार घर में रहे तो वहाँ पर किसी वस्तु की कमी नहीं पड़ती।

❖ अगर उल्लू किसी घर में पानी रखने के स्थान पर जा बैठे तो घर का स्वामी जलाशय का निर्माण कराता है।

❖ अगर उल्लू कोर्ट में जाते हुए किसी व्यक्ति के सामने से उड़ता हुआ चला जाए तो उसकी विजय होती है।

❖ अगर उल्लू किसी के रसोई में प्रवेश कर जाए तो उस घर में अन्न की कमी नहीं रहती।

❖ अगर उल्लू रात के समय किसी कुँआरे सोते हुए युवक के बिस्तर पर आ बैठे तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है और अगर विवाहित हो तो परिवार में वृद्धि होती है।

❖ अगर उल्लू किसी गर्भवती स्त्री के शरीर का स्पर्श करता हुआ चला जाए तो वह पुत्र को जन्म देती है। अगर उल्लू उसके पास ही बैठ जाए तो कन्या का जन्म होता है।

❖ अगर उल्लू रात के समय किसी रोगी के बिस्तर पर आ बैठे तो वह रोगमुक्त हो जाता है।

❖ अगर उल्लू किसी अविवाहित के शरीर के किसी अंग का स्पर्श करता हुआ चला जाय तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

❖ अगर उल्लू किसी मकान में आकर मर जाए तो जिस की दृष्टि उसकी देह पर पहले पड़ेगी वह भी मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा अथवा उसे कोई भयंकर रोग होगा।

❖ अगर प्रातः में उल्लू किसी मनुष्य के शरीर का स्पर्श करे तो उसे अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

❖ अगर किसी मकान की छत पर उल्लू के पंख बिखरे दिखाई दें तो वह घर बर्बाद हो जाता है और वहाँ बेवजह कलह उत्पन्न हो जाता है।

- ❖ अगर किसी दिन दोपहर के समय कोई उड़ता हुआ उल्लू किसी पुरुष के सिर पर आ गिरे तो उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है और स्त्री के सिर पर गिरे तो उसका पति मर जाता है।
- ❖ अगर दिन के समय उल्लू किसी मकान की छत पर बैठकर बोलना आरम्भ कर दे तथा उड़ाने पर भी वापस वहीं आकर बैठ जाया करे तो उस मकान में रहने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।
- ❖ अगर किसी नौकरी करने वाले मनुष्य के सिर पर उल्लू आ बैठे तो नौकरी छूट जाती है। अगर किसी मुकदमे के बारे में न्यायालय जाने वाले व्यक्ति के सिर पर उल्लू आकर बैठ जाए तो उसकी हार होती है।
- ❖ अगर किसी अभियुक्त के सिर पर उल्लू बैठे तो उसे सजा होती है।

तन्त्र ग्रन्थों में उल्लू द्वारा सिद्ध होने वाले अनेक प्रकार के तान्त्रिक प्रयोग पाए जाते हैं।

उल्लू के तान्त्रिक प्रयोग

१. रविवार के दिन उल्लू को पकड़कर बन्द कर लें। फिर उसे केवल देसी शराब पिलाएँ तथा उसे सोने न दें। पिंजरे में बन्द उल्लू को खाने के लिए कुछ नहीं देना चाहिए, पीने के लिए देसी शराब ही देनी चाहिए। उल्लू को जगाए रखना चाहिए। जगाने वाले व्यक्ति को उल्लू के सामने बैठा रहना चाहिए। इस प्रकार जागते रहने के बाद चौथे दिन उल्लू स्वयं मनुष्य की बोली में बोलने लगता है। इसके बाद उससे अनेक प्रकार के काम लिए जा सकते हैं। लेकिन तन्त्र में यह प्रयोग वर्जित माना गया है।

२. उल्लू के लगभग सात पंखों को अपने हाथ में लेकर **'ॐ नमो कालरात्रि'** इत्यादि मन्त्रों द्वारा ३१ बार अभिमन्त्रित करके जिस घर में डाल दिया जाए वह घर सूना हो जाता है।

३. उल्लू के पंख को अभिमन्त्रित करके अपने हाथ में बाँधने तथा **'ॐ नमो कालरात्रि'** मन्त्र का जप करने से भूत-प्रेतादि का दोष

दूर होता है।

४. उल्लू के पंख तथा पूँछ को **'ॐ नमो कालरात्रि'** मन्त्र द्वारा ३१ बार अभिमन्त्रित करके अपनी भुजा में बाँधने से दुष्ट ग्रहों का प्रभाव शनैः-शनैः शान्त हो जाता है।

उल्लू द्वारा गड़े धन का पता लगाना

अगर आपको किसी स्थान पर गड़े हुए धन के बारे में पता न चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रयोग करने से उस स्थान का पता लग सकता है।

कार्तिक की अमावस्या को मध्य रात्रि के बाद एक उल्लू पकड़ लाएँ। फिर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसके शरीर पर २१७ बार जल के छींटे मारें। हर बार एक मन्त्र का उच्चारण करने के बाद जल का एक छींटा मारना चाहिए। पानी का छींटा मारने के लिए कुशा का प्रयोग करें। मन्त्र निम्न हैं—

'ॐ नमः शिवाय, नमः विश्वरूपाय, नमः कामाक्षा देव्यै, नमः लक्ष्मी वाहनाय, नमः पक्षिराज उलूकराय, ॐ क्रां क्रीं क्रौं श्रां श्रीं श्रौं ह्रीं ह्रीं ह्रौं हुँ फट् स्वाहा।'

उक्त मन्त्र द्वारा उल्लू को अभिमन्त्रित करने के पश्चात उसके डैने से छह पंख नोंचकर उन्हें रख लें तथा उल्लू को उड़ा दें। शुक्ल पक्ष की एकादशी को दिन में उपवास रखकर रात के समय श्मशान समीप मृगछाला बिछाकर उसके ऊपर पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाएँ तथा उल्लू के छः पंखों को अपने सामने रखकर, पूर्वोक्त मन्त्र का २१७ बार जप करें। इसके बाद नदी के जल में स्नान करके तथा पंखों को साथ लेकर वापस आ जाएँ।

इसके बाद चार मास तक प्रत्येक एकादशी को उपवास रखते हुए पूर्वोक्त क्रिया करें। जब पाँच एकादशी के उपवास हो जाएँ, तब अमावस्या की रात के समय श्मशान जाकर लौटकर उन पंखों को अपनी शय्या पर तकिए के नीचे रखकर सो जाएँ। उस दिन स्वप्न में किसी दिव्यात्मा के आपको दर्शन होंगे। और वे जिस स्थान पर धन गड़ा हुआ होगा उसके विषय में विस्तारपूर्वक सब कुछ बतला देंगे।

उल्लू का ताबीज बनाना

शुक्ल पक्ष की द्वितीया से आरम्भ करके पूर्णिमा तक नित्यप्रातः स्नानादि से निवृत होकर निम्नलिखित मन्त्र का दस हजार संख्या में जप करते रहें। फिर अमावस्या की रात के समय एक पात्र में जल भरकर तथा बीट और पंख के हाथ में लेकर श्मशान में जाएँ और वहाँ किसी धधकती हुई चिता के सामने कुश के आसन पर पूर्वाभिमुख, सिद्धासन लगाकर मौन बैठ जाएँ तथा जल के पात्र एवं उल्लू के पंख और बीट वाली भस्म को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का जप करना शुरू करें। हर बार मन्त्र पढ़ने के बाद जल लेकर बीट तथा पंख पर थोड़ा सा छिड़क देना चाहिए।

'ॐ नमो लक्ष्मी वाहनाय, पक्षिराजाय, उलूकाय अं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं त्रं त्रां क्रीं क्रौं स्वाहा।'

उक्त मन्त्र को दो लाख जपना चाहिए। जप पूरा हो जाने पर पंख तथा बीट को चिता की गरमी से सुखा लें, फिर उन्हें लेकर लौट आएँ तथा ताबीज में बीट एवं पंख को भरकर मुँह बन्द कर दें तथा उसमें पीले रंग का डोरा भी बाँध दें।

जब भी स्त्री के मन का भेद जानना हो, वह जब सो रही हो, उस समय उस ताबीज को उसकी छाती पर रख दें। ताबीज के प्रभाव से वह सोती हुई ही बड़बड़ा कर अपने मन का भेद खोलना शुरू कर देगी।

उल्लू के द्वारा विद्वेषण

उल्लू के रोम, पंख, जीभ, चोंच, टाँगें, आँखें तथा सम्पूर्ण शरीर की हड्डियों को अलग-अलग करके रख लें।

उल्लू के अंग-प्रत्यंग को सावधानी से रख लें। इसके बाद मंगलवार के दिन वाली अमावस्या को रात के समय श्मशान में जाकर किसी धधकती हुई चिता में उन सब अंगों को जलाकर भस्म कर लें तथा उस भस्म को किसी पात्र में भर लें फिर चिता के समीप ही, कुश के आसन पर सिद्धासन लगाकर, पूर्वाभिमुख हो बैठ जाएँ तथा भस्म को अपने सामने रखकर निम्न मन्त्र का एक लाख जप करते हुए प्रत्येक बार मन्त्रोच्चारण के बाद भस्म पर

फूँक मारते हुए भस्म को अभिमन्त्रित करें।

'ॐ नमः शिवाय। नमः कालिका देव्यै। नमो उलूकराजाय। नमो लक्ष्मी वाहनाय। क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रों क्रं फट् स्वाहा।'

जप पूरा हो जाने पर, भस्म को लेकर लौट आएँ। फिर दूसरे ही दिन अवसर पाकर, जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेषण कराना हो, उन दोनों के घरों के सहन में अभिमन्त्रित भस्म फेंक दें। पन्द्रह दिन के भीतर ही उनका विद्वेषण हो जाएगा।

उल्लू द्वारा भाग्य वृद्धि

अमावस्या की रात के समय किसी उल्लू के जितनी बीट, पंख एवं अण्डे के छिलके मिलें, उन सबको कपड़े में बाँधकर घर ले आएँ। फिर पूर्णिमा को रात के समय किसी नदी तट पर जाकर, पोटली को दाएँ हाथ में लेकर स्नान करें। यह ध्यान रहे कि स्नान करते समय पोटली को जल की सतह से ऊपर उठाए रखें, ताकि भींग न जाए। इसके बाद नदी तट पर कम्बल का आसन बिछाकर, उस पर पूर्वाभिमुख हो, सिद्धासन लगाकर बैठ जाएँ तथा पोटली को अपने सामने रख लें। अब हवन-कुण्ड बनाकर हवन करें। हवन-सामग्री में काले तिल, जौ, चावल, सफेद चन्दन का चूरा, लाल चन्दन का चूरा, गूगल, छार छबीला, कपूर कचरी, खांड, लौंग, गाय का घी, सुपारी, पान के पत्ते, आम, बेल, अमरूद, गूलर, शरीफा की समिधा तथा देशी कपूर लें। इनके अतिरिक्त एक कलश, सुवा तथा एक चौमुखा दीपक भी साथ ले आना चाहिए। सर्वप्रथम कलश में पानी भरकर सामने रखें। फिर समिधा को चुनकर हवन कुण्ड तैयार करें तथा हवन-सामग्री को एकत्र कर लें। फिर पान के पत्तों को पानी के कलश में डाल दें और चौमुखा दीपक जलाएँ। इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए हवन आरम्भ करें।

हर बार हवन सामग्री की चुटकी डालने के बाद एक चम्मच गाय के घी की आहुति भी देते रहना चाहिए। हर बार आहुति डालने तथा शुद्ध घी चढ़ाने के बाद जल के कलश में पड़े हुए पान के पत्तों की सहायता से दो-दो बूँद जल पूर्व दिशा की ओर छिड़कते जाना चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो पक्षिराजाय, काकारि, लक्ष्मी वाहनाय, उलूकराजाय, विघ्न-विनाशनाय, दुर्भाग्य नाशनाय, क्रां क्रीं क्रू क्रें क्रों क्रं फट् मम सौभाग्य वर्द्धन कुरु कुरु कुरु स्वाहा।'

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१६ आहुतियाँ देनी चाहिए। अन्त में एक पूर्णाहुती देना ना भूलें। जब हवन समाप्त हो जाए, तब पूर्ण आहुति के रूप में पोटली में बँधे उल्लू की बीट, पंख, अण्डों के छिलके आदि को एक साथ मन्त्रोच्चारण करते हुए हवन कुण्ड में डाल देना चाहिए। जब हवन कुण्ड में डाली गई सब सामग्री जल जाए और अग्नि शान्त हो जाए तब कुण्ड की भस्म को एकत्र कर पोटली बाँध लेनी चाहिए।

इसके बाद पोटली को हाथ में लेकर, नदी को प्रणाम करें, तदुपरान्त लौट आएँ तथा उस भस्म में से आधी भस्म को निम्न मन्त्र पढ़ते हुए घर के आँगन में छिड़क दें। **'ॐ नमो उलूक राजाय, लक्ष्मी वाहनाय, दुर्भाग्य नाशनाय, मम सौभाग्य वृद्धि कुरु कुरु कुरु श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।'**

पूर्णिमा के बाद जो भी गुरुवार आए, उस दिन उल्लू को पकड़ लाएँ तथा उसे पिंजड़े में बन्द करके रख दें। सात दिन तक उसे खाने के लिए हड्डी का चूर्ण, चावल तथा कौए का मांस दें। फिर जब अमावस्या आए तब उस दिन आधी रात के समय उल्लू के पिंजड़े को लेकर किसी निर्जन स्थान में बहने वाली नदी के तट पर जा पहुँचें। वहाँ सर्वप्रथम पिंजड़े को नदी के जल में डुबकी लगवाएँ, ताकि उसमें कैद उल्लू का भी स्नान हो जाए। फिर साधना कर सिद्ध कर लें। इसके बाद उसके पंख उखाड़कर उसकी भस्मी बना लें। उस भस्म को सदैव अपने पास रखें। सब प्रकार से भाग्य उदय होगा।

उल्लू द्वारा वशीकरण

'उल्लू कल्प' के अनुसार माघ शुक्ला चतुर्दशी के दिन उल्लू को पकड़ कर पिंजड़े में बन्द कर लें। फिर—

'ॐ नमो भगवते रुद्राय आगच्छ आगच्छ प्रविशय प्रविशय धुन धुन आकर्षय आकर्षय मण्डलं प्रविशय प्रविशय स्वाहा।'

इस मन्त्र को सवा लाख जप कर सिद्ध कर लें। फिर उल्लू का पूजन कर, पूर्वोक्त मन्त्र ५१ बार पढ़कर उसके ललाट तक पंखों का स्पर्श करें। फिर—

'ॐ कुरु कुरु महेश्वरीं अंगवर्द्धिनी प्रियेश्वरी नमः।'

इस मन्त्र का ३१ बार जप करें। नित्यप्रति चावलों को उल्लू के शरीर पर मारते हुए जप करना चाहिए।

मनुष्य की हड्डी का चूर्ण तथा मृत का ताम्बूल इनका चूर्ण बनाकर चावल के चूर्ण में या फिर मांस में मिलाकर उल्लू को खिलाना चाहिए। फिर उसे मिट्टी शकोरे में पानी पिलाकर मन्त्र का जप करना चाहिए। ४१ दिन तक इस क्रिया को करते हुए उसकी पूँछ से एक पंख उखाड़ लेना चाहिए। फिर उस पंख को **'ॐ उलूकायै नमः'** इस मन्त्र द्वारा ११०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने पास रख लेना चाहिए।

उक्त अभिमन्त्रित पंख को थोड़ा-सा भी भाग जिस किसी व्यक्ति को खिला दिया जाएगा, वह तुरन्त वशीभूत हो जाएगा। दूसरा प्रयोग इस प्रकार है—किसी भी मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन पवित्र होकर **'ॐ नमो भगवते रुद्राय आगच्छ आगच्छ प्रविशय प्रविशय धुन धुन आकर्षय आकर्षय मण्डलं प्रविशय प्रविशय स्वाहा।'** उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए उल्लू को पकड़ कर किसी प्रकार उसे बन्धन में कर लें, ताकि वह उड़ न जाए। फिर उल्लू को किसी पात्र में बैठाकर **'ॐ उलूकायै नमः'** इस मन्त्र का ११०८ बार जप करके ग्यारह बार प्रदक्षिणा करें। तदुपरान्त उल्लू की पूँछ को पकड़कर उसे ऊपर की ओर उठा लें ओर उसकी पूँछ से एक पंख निकाल कर, पंख का पूर्वोक्त विधि से पूजन करें।

उक्त पूजित तथा अभिमन्त्रित पंख का एक भाग जिस व्यक्ति को खिला दिया जाता है, वह तुरन्त वशीभूत हो जाता है।

अदृश्य होने का प्रयोग

माघ शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को उल्लू पकड़ कर, उसे किसी पात्र में बैठाकर पूजन करें। जब भी उल्लू का अश्रुपात हो उन आँसुओं की बूँदों को किसी पात्र में भर लें। फिर उसमें शुद्ध गोरोचन तथा काली गाय का

घी मिलाकर अंजन तैयार कर लें। उक्त अंजन को आँखों में लगाने वाला व्यक्ति अदृश्य होता है। इसके बाद जब आँखों को गोमूत्र से धो लिया जाता है, तब वह पूर्व स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

वशीकरण प्रयोग

किसी भी वर्ष माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को उल्लू पकड़कर ले आएँ और उसे किसी पिंजरे में बिठाकर निम्नलिखित मन्त्र का ११०८ बार जप करें।

'ॐ नमो रुद्राय ह्रीं हूं हें फट् नमः'

जप पूरा हो जाने पर पात्र में रखे हुए उल्लू को मार दें तथा उसके शरीर को अलग हटाकर पात्र में जो रक्त हो उसमें अपनी अनामिका अंगुली के रक्त को मिलाकर उस मिश्रण को किसी पात्र में भर लें। आवश्यकता के समय उक्त मिश्रण का मस्तक पर तिलक लगाकर, जिस किसी के सम्मुख पहुँचा जाएगा वह वशीभूत हो जाएगा।

शत्रु-गृह शून्य कारक

उल्लू के सिर को सुखाकर, चूर्ण करके रख लें। इस चूर्ण को शत्रु के घर में डालने पर, उसका घर सूना हो जाता है।

शत्रु-नाशक प्रयोग

उल्लू का सिर, हरताल और मैनशिल इन तीनों को लेकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण की एक चुटकी शत्रु के सिर पर डाल देने से वह शनैः शनैः समाप्त हो जाता है।

निधि दीपिका

उल्लू का कपाल, मनुष्य का रक्त, श्रोतांजन और अन्तर्धूम इन सबको पीस लें। फिर उसको अपनी आँखों में लगाएँ तो धरती के भीतर गढ़ी हुई सारी निधियां दिखाई देने लगती हैं।

विद्वेषण एवं उच्चाटन

उल्लू की जीभ को धतूरे के रस में पीस कर जिस किसी को खिला दिया जाए, वह उच्चाटन को प्राप्त होता है।

अदृश्य गुटिका

उल्लू की जीभ तथा वरांग का चूर्ण मालती के पुष्प के चूर्ण में गोरोचन के साथ मिलाकर गुटिका तैयार करें। उस गुटिका को ताबीज में भरकर मुँह में रखने से अदृश्यीकरण हो जाता है।

उल्लू की नाभि, हृदय, कलेजा और फेफड़ा इन चारों में गोरोचन मिलाकर गुटिका तैयार करें, फिर उसे निम्नलिखित मन्त्र द्वारा ११०८ बार अभिमन्त्रित करें।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय'।

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र का सवा लाख जप करें—

'ॐ नमो कालरात्रि त्रिशूल हस्त धारिणी महिष वाहिनी नर कपाल माल शिरे आगच्छ आगच्छ भगवती अन्तरिक्ष कारिणीम् मम सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा'।

इस मन्त्र का सवा लाख बार जप करके पूर्वोक्त गुटिका को आँखों में आँजने वाला व्यक्ति अनेक रूपधारी विद्याधरों में को भी देख सकने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

पाताल-दर्शन

रविवार के दिन उल्लू की जीभ को काली गाय के शुद्ध घी में पकाकर तथा ताबीज में भरकर, उस को अपने कंठ में बाँधने से पाताल-दर्शन करने की सामर्थ्य प्राप्त होती है।

स्तम्भन प्रयोग

अगर उक्त जिह्वा को ताबीज में भरकर रविवार की रात्रि में ताबीज को अपनी कमर में बाँधकर रमण करें तो सफल स्तम्भन होता है।

अदृश्यीकरण

उल्लू के नेत्रों को सुखाकर चूर्ण करें, फिर उस चूर्ण को अपनी आँखों में आंजें तो व्यक्ति अदृश्य होता है।

पूर्वजन्म-स्मृति

उल्लू के नेत्र को श्रोतांजन में मिलाकर पुष्य नक्षत्र वाले दिन नीचे लिखे मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके आँखों में आंजें तो पूर्वजन्म की स्मृति आती है।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय'।

वशीकरण

उल्लू के दोनों कान तथा एरण्ड को मिलाकर काली गाय के दूध में पीसकर चूर्ण बनाएँ। इस चूर्ण को जिसे भी खिलाया जाएगा वह वशीभूत हो जाएगा।

इसके लिए चूर्ण को पहले अभिमन्त्रित कर लेना आवश्यक है।

दिव्य-दृष्टि अंजन

उल्लू की आँख, गुदा, केशर और देशी कपूर इन सब को लेकर शुद्ध मधु में पीसकर आँखों में आंजने से दिव्यदृष्टि मिलती है। इसके लिए निम्न मन्त्र का पहले २१०८ बार जप करना चाहिए। बाद में प्रयोग के समय ५१ बार जप करना चाहिए।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय। ॐ लमेह हुलु हुलु बिहुलं बिहुलं हरं हरं यक्ष रक्ष पूजिते यं कुमार्यो तु लोचने स्वाहा।'

शतयोजन-गमन

केवल रविवार के दिन उल्लू की चोंच तथा नख को घिसकर अपने शरीर पर लेप करने वाला व्यक्ति दूर तक पैदल चलने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। परन्तु लेप करने से पूर्व निम्न मन्त्र जप करते रहना आवश्यक है।

मन्त्र—'ॐ नमो कालरात्रि'।

नजर उतारने के लिए

प्रयोग-१

शुक्रवार के दिन किसी बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू के तीन पंख लेकर आएँ। इसके पश्चात् तीनों पंखों को धोकर सुखा लें। इसके पश्चात् तीनों पंखों पर सफेद रंग का कच्चा रेशम बाँध लें। इन पंखों को सम्बन्धित व्यक्ति अथवा बच्चे के सिरहाने रात्रि भर के लिए रख दें।

प्रात:काल पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा एक पंख को काले रंग के रेशम से बाँधकर बच्चे के वस्त्रों में रख दें। दूसरे पंख को लाल रंग के रेशम से बाँधकर घर के आँगन में गाड़ दें तथा तीसरे पंख को पीले रेशम से बाँधकर घर के बाहर मुख्य द्वार में गाड़ दें। इस प्रकार करने से नजर उतर जाती है।

प्रयोग-२

शनिवार की रात्रि को किसी आम के वृक्ष पर रहने वाले उल्लू के सात पंख लेकर आएँ। पंखों को लाल वस्त्र में लपेटकर सम्बन्धित व्यक्ति अथवा बच्चे के सिरहाने रख दें। प्रात:काल पंखों को धोकर छाया में सुखा लें। इसके पश्चात् सात हाथ लम्बे सफेद सूत को सात भागों में विभक्त करें।

इसके पश्चात् सूत को सात रंगों में रंग लें किन्तु काले और सफेद रंग का प्रयोग न करें। फिर सातों पंखों को एक साथ सातों रंग के धागे से बाँध लें तथा बच्चे के ऊपर से तीन बार उतारकर चारपाई के नीचे रख दें।

रात्रि के समय पंखों को पुन: बच्चे के ऊपर से सात बार उतारकर उसी वृक्ष के नीचे फेंक आएँ। इस प्रकार करने से बच्चे की नजर उतर जाती है तथा बच्चा पूर्णत: स्वस्थ हो जाता है।

प्रयोग-३

रविवार के दिन जंगल से किसी बरगद के वृक्ष पर निवास करनेवाले उल्लू के पाँच पंख ले आएँ।

पंखों को रात्रि के समय लाल वस्त्र में रखकर बच्चे के बिछाने के वस्त्रों

में रख दें। प्रात:काल एक पंख को निकालकर सात बार बच्चे के ऊपर से उतारकर चारपाई के नीचे रख दें। सायंकाल के समय दूसरे पंख को निकालकर तथा तीन बार बच्चे के ऊपर से उतारकर पहले पंख के साथ रख दें।

इसके पश्चात् एक पंख को रात्रि के समय बच्चे के ऊपर से सात बार उतारकर दोनों पंखों के साथ रख दें। चौथे पंख को रात्रि १२ बजे बच्चे के ऊपर से उतारकर तीनों पंखों के साथ चारपाई के नीचे रख दें। तथा प्रात:काल पाँचवें पंख को तीन बार बच्चे के ऊपर से उतारकर चारपाई के नीचे रख दें। इसके पश्चात् पाँचों पंखों को सायंकाल के समय चूल्हे में जला दें तो बच्चे की नजर उतर जाती है।

परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए

प्रयोग-१

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो, उस दिन बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू के पाँच पंख लेकर आएँ।

पंखों को पाँच रंग के रेशम से बाँधकर अपने शयन कक्ष में बिछाने के वस्त्रों में रख दें। प्रात:काल शीघ्र उठकर स्नान आदि करें तथा इसके पश्चात् पंखों को लोबान की धूनी दें तथा धागों को निकालकर अपने बाएँ हाथ में बाँध लें। इसके पश्चात् पंखों में पुनः पाँच रंग का रेशम बाँध दें तथा पंखों को पुनः अपने सिरहाने रखकर सोएँ। प्रात:काल शीघ्र उठकर तथा नित्यकर्मों से निवृत्त होकर पंखों को पुनः लोबान की धूनी दें तथा पहले रेशम को खोलकर अपने बाएँ हाथ में बाँध लें तथा पंखों पर पुनः पाँच रंग का रेशम बाँधकर पंखों को अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

इस प्रकार पाँच दिन तक यही प्रक्रिया दोहराते रहें। इसके पश्चात् परीक्षा के दिन प्रात:काल शीघ्र उठकर स्नान आदि करें तथा धागों को लोबान की धूनी देकर अपनी बाईं भुजा में बाँध लें तथा परीक्षा में सफल होने के लिए प्रार्थना करें तो परीक्षा में सफलता अवश्य मिलती है।

प्रयोग-२

परीक्षा से ग्यारह दिन पूर्व किसी शुभ तिथि में उल्लू के सात पंख

लेकर आएँ तथा पंखों को एक हाथ लम्बे सफेद सूत में बाँध दें।

पंखों को अपने शयन कक्ष में अपने सिरहाने रख दें। इस बात का ध्यान रखें कि कोई अन्य पंखों को स्पर्श न करें। रात्रि के समय पंखों को लोबान तथा गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें तथा पंखों को पुनः सिरहाने रखकर सो जाएँ।

दूसरे दिन पुनः पंखों को लोबान तथा गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें तथा इसके पश्चात् पंखों को सिरहाने रखकर सो जाएँ।

एक सप्ताह तक पंखों को इसी प्रकार लोबान तथा गुग्गल की धूनी देते रहें तथा पुनः सिरहाने रख दें। इसके पश्चात् रात्रि के समय पाँच पंखों को ले जाकर गुप्त रीति से परीक्षा कक्ष से बाहर भूमि में दबा दें। यह कार्य पूर्णतः गुप्त रीति से करें। परीक्षा से एक दिन पूर्व पंखों को पुनः रात्रि के समय लोबान तथा गुग्गल की धूनी देकर सिन्दूर से पूजा करें।

परीक्षा के दिन प्रातः उठकर स्नान करें तथा श्वेत वस्त्र पहनें तथा एक पंख को अपनी दाईं जेब में रखकर परीक्षा के लिए जाएँ तो सफलता अवश्य मिलती है।

ज्वर नाश के लिए

शनिवार की रात्रि को किसी उल्लू के तीन पंख प्राप्त करें तथा पंखों को भली प्रकार धोकर छाया में सुखा लें।

इसके पश्चात् पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा पंखों को श्वेत वस्त्र में लपेटकर रख दें। प्रात:काल ताँबे के पात्र में स्वच्छ पानी लें तथा उसमें पंखों को डाल दें। पानी इतना हो कि पंख पूर्णतः डूब जाएँ। पंखों को रात भर ओस के नीचे खुला छोड़ दें तथा प्रात:काल पानी को धीमी आँच पर उबालें। पानी को तब तक उबालते रहें जब तक वह आधा न रह जाए। इसके पश्चात् पानी को लोबान की धूनी दें।

प्रयोग के समय रोगी को यह पानी पिलाएँ तथा रोगी के शरीर पर पानी के छींटे दें। इस प्रयोग से ज्वर पूर्णतः समाप्त हो जाता है तथा रोगी को आराम मिलता है।

रोग दूर करने के लिए

शुक्रवार के दिन किसी उल्लू के चार पंख लेकर आएँ तथा पंखों को धोकर सुखा लें।

इन पंखों को रोगी व्यक्ति के सिरहाने रख दें। प्रात:काल इन पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा लाल रंग के सूत से बाँधकर रोगी के सिरहाने रख दें। रात्रि के समय पंखों को पुनः गुग्गल की धूनी दें तथा पंखों को जलाकर चूर्ण बना लें इसके पश्चात् पानी अथवा दूध में मिलाकर यह चूर्ण रोगी को दें तो व्यक्ति का रोग दूर हो जाता है।

उल्लू के पंखों से झाड़ा

रविवार के दिन उल्लू के पंख लेकर आएँ तथा पंखों को धोकर सुखा लें। इसके पश्चात् पंखों को लाल कलावे में बाँधकर रोगी के सिरहाने रख दें। प्रात:काल पंखों से इक्कीस बार रोगी को झाड़ें तथा कलावे को रोगी के बाएँ हाथ में बाँध दें तो सभी प्रकार के रोगियों को लाभ मिलता है।

पुरुष वशीकरण के लिए

रविवार के दिन किसी उल्लू के तीन पंख प्राप्त करें तथा पंखों को सात रंग के रेशम में बाँध दें।

इसके पश्चात् पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें। तीन दिन तक इसी प्रकार पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें। ऐसा करते हुए तीन दिन के पश्चात् पंखों से रेशम को खोल लें तथा इच्छित व्यक्ति के हाथ में बाँध दें तो व्यक्ति तुरन्त वश में हो जाता है।

अधिकारी वशीकरण के लिए

शुक्रवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो किसी उल्लू के पाँच पंख प्राप्त करें। इसके पश्चात् पंखों को कपूर की धूनी दें। रात्रि के समय पंखों को जलाकर चूर्ण कर लें।

तत्पश्चात् तिल के तेल में इस चूर्ण को मिलाकर तिलक करके

इच्छित व्यक्ति के पास जाएँ तो व्यक्ति तुरन्त वश में हो जाता है तथा प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है।

किसी भी व्यक्ति का वशीकरण

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो किसी उल्लू के तीन पंख प्राप्त करें तथा पंखों को धोकर छाया में सुखा लें। पंखों को कपूर तथा गुग्गल की धूनी दें तथा पंखों को जलाकर चूर्ण बना लें। रात्रि में मिट्टी के दीपक में तिल का तेल डालकर दीपक जलाएँ तथा उसकी कालिख को किसी पात्र पर उतार लें।

प्रयोग के समय दीपक की कालिख तथा पंखों के चूर्ण को नीलगिरि के तेल में मिलाकर आँखों में लगाएँ तो तुरन्त ही प्रत्येक व्यक्ति वश में हो जाता है।

मारण प्रयोग

शनिवार के दिन किसी उल्लू के नौ पंख प्राप्त करें तथा कीकर के नौ काँटों के साथ बाँधकर काले रंग के रेशम से माला बना लें। इसके पश्चात् श्मशान की मिट्टी किसी एकान्त कक्ष में बिछाकर बैठ जाएँ। इसके बाद ब्रह्माडंडी, बच तथा कूट को कपूर की धूनी दें। पंखों की माला को सिन्दूर से पूजकर कपूर की धूनी दें तथा यह समस्त सामग्री एक काले रंग के वस्त्र में शत्रु के चित्र पर उसका नाम लिखकर उसी के साथ बाँधकर रख दें। शनिवार की रात्रि को जब कृतिका नक्षत्र हो तब यह समस्त सामग्री ले जाकर श्मशान भूमि में दो हाथ की भूमि खोदकर गाड़ दें तथा भूमि को समतल कर दें।

यह समस्त कार्य पूर्ण गुप्त रीति से करें।

शत्रु की तत्काल मृत्यु

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की रात्रि को किसी उल्लू के सात पंख लेकर आएँ। उल्लू के पंखों को काले वस्त्र में बाँधकर रख दें। दो दिन के

बाद पंखों को कपूर की धूनी देकर पुनः वस्त्र में बाँधकर रख दें। शनिवार की रात्रि को चिता की अग्नि लाकर पंखों को जलाकर चूर्ण बना लें। इसके पश्चात् चूर्ण को सिन्दूर में मिलाकर किसी पात्र में रख दें।

रविवार के दिन किसी ऐसे गधे का पेशाब लाएँ जिसका एक कान कटा हुआ हो, इसके पश्चात् गधे के पेशाब में पंखों का चूर्ण मिलाकर गोली बना लें। दो गोली बनाएँ तथा गोली को सिन्दूर से लपेटकर चाँदी के वर्क में रख लें। अमावस्या के दिन एक गोली को ले जाकर श्मशान भूमि में एक हाथ लम्बा गड्ढा खोदकर गाड़ दें। दूसरी गोली को कपूर तथा गुग्गल की धूनी देकर काले वस्त्र में बाँध लें।

इसके पश्चात् प्रयोग के समय शनिवार की रात्रि को १२ बजे गोली को कपड़े से निकालकर शत्रु के घर के बाहर मुख्य दरवाजे पर गाड़ दें। सम्पूर्ण कार्य गुप्त रीति से करें। जिस दिन भी शत्रु का पैर उस स्थान पर पड़ेगा शत्रु की तत्काल मृत्यु हो जाएगी।

शत्रु विनाश के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े में एक श्वेत वस्त्र बिछा दें। उल्लू को किसी एकान्त कक्ष में बिल्ली इत्यादि से बचाकर रखें तथा ऐसे स्थान पर पिंजड़े को रखें जहाँ पूर्णतः अन्धेरा हो।

प्रातःकाल उल्लू को दूध में चने भिगोकर खिलाएँ तथा पानी के स्थान पर दही दें। दोपहर के समय उल्लू को दही तथा चीनी एवं रात्रि के समय कुछ न दें। तब तीन दिन उल्लू को समय पर इसी प्रकार भोजन देते रहें, चौथे दिन उल्लू को उसी वृक्ष के नीचे ले जाकर मार दें तथा उसके पंख तथा अस्थियों को वृक्ष की जड़ में दबा दें। उल्लू के रक्त को मिट्टी के पात्र में भरकर घर ले आएँ किन्तु इस बात का स्मरण रखें कि रक्त भूमि पर न गिरे।

इसके पश्चात् पिंजड़े में बिछे वस्त्र को उल्लू के रक्त में भिगोकर

छाया में सुखा लें। वस्त्र सूखने के पश्चात् वस्त्र को कपूर की धूनी दें तथा वस्त्र को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें।

शनिवार की रात्रि को गेहूं के आटे से एक पुतला बनाएँ तथा पुतले को भी छाया में सुखा लें। सूखने तक प्रतिदिन पुतले को गन्धक तथा कपूर की धूनी देते रहें तथा पुतले को छुपाकर रखें।

अमावस्या की रात्रि को तीन आँखड़े के पुष्प, तीन चमेली के पुष्प, मिष्ठान तथा मिट्टी का दीपक लें। इसके पश्चात् उल्लू के रक्त में भिगोया हुआ वस्त्र पुतले को ओढ़ा दें तथा सिन्दूर से पूजन करें। आधी रात्रि के समय पुतले को शत्रु के खेत अथवा गुप्त रूप से मुख्य द्वार पर गाड़ दें तथा शत्रु की मृत्यु एक सप्ताह के भीतर हो जाती है।

यदि शत्रु के परिवार में किसी की मृत्यु चाहें तो सफेद के स्थान पर काले वस्त्र का प्रयोग करें तथा पुतले के गले में एक कील गाड़ दें। पुतले को एक कोरी हांडी में रखकर तथा रक्त में भीगा हुआ वस्त्र लपेटकर शत्रु के आंगन में किसी प्रकार गाड़ दें। इस प्रयोग को करने से शत्रु के परिवार में किसी की मृत्यु तीन दिन के भीतर हो जाती है।

चेतावनी—किसी भी प्रकार के मारण प्रयोग, विनाश प्रयोग, मृत्यु प्रयोग की अनुमति तन्त्र नहीं देता, प्रयोग कर्ता स्वयं समझकर कदम बढ़ाएँ। किसी भी प्रकार की स्वयं की हानि भी सम्भव है। अतः इसके लिए लेखक, प्रकाशक या मुद्रक उत्तरदायी नहीं है।

शत्रु के कार्य बिगाड़ने के लिए

शुक्रवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो जंगल जाकर बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले नर उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उसे किसी अन्धेरे स्थान पर रख दें।

प्रातःकाल उल्लू को बाजरे की रोटी तथा दही दें तथा दोपहर को उसे कुछ न दें। रात्रि के समय उल्लू को दही तथा शक्कर का मिश्रण दें। दूसरे दिन उल्लू को सायंकाल तक कुछ न दें तथा रात्रि के समय उसे दही तथा चावल खाने को दें तथा पानी में भी शक्कर घोल दें।

रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसके रक्त को पात्र में भर लें तथा

उल्लू को काले वस्त्र में बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें। इसके पश्चात् श्मशान की मिट्टी लाकर उल्लू के रक्त में भिगोकर तीन गोले बना लें। गोलों को छाया में सुखा लें तथा उन पर सिन्दूर का लेप करें और तब गोलों को गुग्गल की धूनी देकर लाल वस्त्र में लपेटकर रख दें।

तीन दिन तक गोलों को अपने कक्ष में रखें तथा इसके पश्चात् गोलों को पुनः गुग्गल की धूनी दें।

शनिवार की रात्रि को एक गोले को शत्रु के मुख्य द्वार पर गाड़ दें, दूसरे गोले को शत्रु के आने-जाने के रास्ते में गाड़ दें तथा तीसरे गोले को गुप्त रीति से शत्रु की छत पर रख दें।

इस प्रयोग के करने से निश्चित रूप से शत्रु के बनते कार्य बिगड़ने लगते हैं। किंतु अकारण ही किसी को कष्ट न दें। अत्यधिक आवश्यकता पड़ने पर ही इस प्रयोग को करें।

शत्रु की बुद्धि विनाश के लिए

रविवार के दिन जब पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र हो तो जंगल से किसी उल्लू को पकड़कर लाएँ। उल्लू को किसी पिंजड़े में बन्द कर किसी गुप्त एवं अन्धेरे स्थान पर रख दें। यह कार्य पूर्णतः गुप्त रूप से करें। उल्लू को तीन दिन तक एक समय मीठा भोजन तथा दूसरे समय नमकयुक्त भोजन दें। चौथे दिन उल्लू को मारकर उसके रक्त को किसी मिट्टी की कोरी हंडिया में भर लें तथा उल्लू को उसी वृक्ष के नीचे दबा दें।

इसके पश्चात् रक्त को गुग्गल एवं लोबान की धूनी दें तथा रक्त में चार खेतों की मिट्टी डालकर उसे शत्रु के मुख्य द्वार के आगे एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें तो शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

आय में वृद्धि के लिए

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में जब भरणी नक्षत्र आए तो जंगल से किसी घने वृक्ष पर निवास करनेवाले उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को काले थैले में बन्द कर दें तथा थैले को बिल्ली इत्यादि से बचाकर किसी

अन्धेरे कक्ष में रख दें। आधी रात्रि के समय उल्लू को थैले से निकालकर मार दें तथा उल्लू के रक्त को किसी मिट्टी के पात्र में भर दें। इसके पश्चात् उल्लू को उसी वृक्ष के नीचे दबा दें जहाँ से उसे पकड़कर लाए थे।

अब आँगन की मिट्टी लेकर तथा उल्लू के रक्त को मिलाकर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें। गोलियों को छाया में सुख लें तथा गोलियों को सूखने तक किसी लकड़ी की डिब्बी में बन्द करके रखें। सूखने के पश्चात् गोलियों को सिन्दूर से पूजकर चाँदी के वर्क में लपेट लें तथा गोलियों को गुग्गल की धूनी दें। तीन दिन तक इसी प्रकार गोलियों को गुग्गल की धूनी देते रहें तथा सिंदूर से पूजते रहें। चौथे दिन रात्रि के समय गोलियों को चार भागों में विभक्त कर लें तथा घर के चारों कोनों पर गोलियों को एक-एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। यह प्रयोग करने से व्यापारी की आय में अकस्मात ही अभूतपूर्व वृद्धि होने लगती है।

पदोन्नति के लिए

शुक्रवार की रात्रि को जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो जंगल से बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को लाल रंग के थैले में बन्द कर किसी अन्धेरे तथा एकान्त कक्ष में रख दें। सायंकाल को स्नान कर काले वस्त्र पहनें तथा उल्लू को थैले से बाहर निकालकर मार दें। मारकर उल्लू के रक्त को किसी ताँबे के पात्र में भर लें तथा इस बात का ध्यान रखें कि रक्त भूमि पर न गिरे। उल्लू को लाल थैले में बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें तथा चुपचाप घर लौट आएँ। घर आकर रक्त के पात्र में एक ताँबे का सिक्का, एक चमेली का फूल, थोड़े सफेद तिल आदि डाल दें। इसके पश्चात् पात्र को घर के आँगन में बीचोंबीच गाड़ दें तो निश्चित रूप से पदोन्नति हो जाती है।

बिक्री बढ़ाने के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो, उस दिन रात्रि के समय किसी पीपल के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी श्वेत

वस्त्र में बाँधकर किसी अन्धेरे स्थान पर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त किसी मिट्टी के पात्र में भर लें। जिस वस्त्र में उल्लू को बाँधा था उसी वस्त्र में उल्लू के शरीर को बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें।

इसके पश्चात् दुकान की मिट्टी लाकर उस रक्त में डाल दें तथा पात्र को रात्रि के समय दुकान से एक मीटर की दूरी पर एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। इस प्रयोग से बिक्री में आशातीत वृद्धि होगी।

व्यवसाय में सफलता के लिए

रविवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के दूसरे पहर में बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू को पकड़ लाएँ। उल्लू को किसी लाल रंग के थैले में बन्द कर किसी एकान्त तथा अन्धेरे कक्ष में ऊँचे स्थान पर रख दें। रात्रि के चौथे पहर में उल्लू को मारकर उसके रक्त को किसी पीतल के पात्र में भर लें। इस बात का ध्यान रखें कि रक्त की एक बूँद भी भूमि पर न गिरे। इसके पश्चात् जिस थैले में उल्लू को बन्द किया था उसी थैले में उल्लू को बन्द कर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें। तत्पश्चात् श्मशान भूमि की मिट्टी तथा उल्लू के रक्त को मिलाकर एक पात्र बनाएँ तथा पात्र को छाया में सुखा लें। सूखने पर पात्र के अन्दर एक चाँदी का सिक्का रखकर पात्र व्यवसाय द्वार पर गाड़ दें तो उस कार्य में सफलता मिलती है।

बिक्री बढ़ाने का उपाय

रविवार की सप्तमी तिथि को एक उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ तथा रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त निकाल दें। इसके बाद सात हाथ लम्बे सफेद सूत को उल्लू के रक्त में रंगकर उसमें हल्दी की सात गाँठ बाँधें तथा इसके पश्चात् सूत को दुकान के द्वार पर लटका दें तो निश्चित रूप से बिक्री बढ़ जाती है।

उच्चपद की प्राप्ति के लिए

रविवार को जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के दूसरे पहर में किसी घने वृक्ष से उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को काले थैले में बन्द कर अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

प्रात:काल उल्लू को थैले से निकालकर उसकी चोंच खोलकर उसमें थोड़ा पारा डाल दें तथा उल्लू को पुनः थैले में बन्द कर दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त निकाल लें तथा उल्लू को पुनः उसी वृक्ष की जड़ में दबा दें। घर आकर उल्लू के रक्त को किसी काँच की बोतल इत्यादि में भरकर भली प्रकार बन्द कर दें ताकि रक्त में वायु प्रवेश न कर सके। तीन दिन तक रक्त को अपने शयन कक्ष में रखें तथा समय-समय पर बोतल को हिलाते रहें।

तत्पश्चात् रविवार को नवमी के दिन रात्रि के दूसरे पहर में उसी वृक्ष की जड़ खोद लाएँ जिस वृक्ष के नीचे उल्लू को दबाया था। जड़ को घर लाकर भली प्रकार पानी से धोकर साफ कर लें तथा जड़ को लाल वस्त्र में लपेट कर रख दें। प्रात:काल किसी कुम्हार से एक बिना पका हुआ कच्चा घड़ा लेकर आएँ तथा घड़े को लाल रंग से रंग लें।

रात्रि के समय रक्त को बोलत से निकालकर घड़े में डाल दें तथा ऊपर से घड़े में जड़ को डाल दें। तब घड़े को सुरक्षित रूप से घर के आँगन में एक हाथ की भूमि खोदकर गाड़ दें।

एक सप्ताह तक घड़े को इसी प्रकार आँगन में गड़ा रहने दें तथा

तथा बबूल के पत्तों की धूनी दें तथा घड़े के मुख पर लाल वस्त्र बाँधकर रख दें। दूसरे दिन रात्रि के समय उसी वृक्ष के नीचे से थोड़ी मिट्टी खोदकर लाएँ तथा घड़े में डाल दें। घड़े का मुख उसी प्रकार वस्त्र से बाँधकर घड़े को किसी गुप्त एवं सुरक्षित स्थान पर रख दें। तीसरे दिन किसी घोड़े के पाँव के नीचे की मिट्टी लेकर आएँ तथा मिट्टी को घड़े में डाल दें।

अब मंगलवार की रात्रि के तीसरे पहर घड़े को नीम, बबूल तथा कपूर की धूनी देकर उसी वृक्ष के नीचे दो हाथ भूमि खोदकर गाड़ दें तो शीघ्र ही उच्चपद की प्राप्ति होती है।

नौकरी में तरक्की पाने के लिए

शनिवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को किसी काले वस्त्र में बाँधकर अपने सिरहाने रख दें तथा सो जाएँ। प्रातःकाल उल्लू को वस्त्र से निकालकर उसकी चोंच में थोड़ा कपूर डाल दें तथा उल्लू को पुनः वस्त्र में बाँधकर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त निकाल लें तथा उल्लू को एक कोरी हांडी में बन्द कर उसी वृक्ष के नीचे गाड़ दें।

तीन दिन के पश्चात् उल्लू के रक्त वाले पात्र में थोड़ा सा कपूर डाल दें तथा पात्र को हिलाकर पुनः उसी स्थान पर रख दें।

रविवार की रात्रि के वृक्ष के नीचे से रात्रि के समय हांडी को निकाल कर घर ले आएँ। इस समय तक उल्लू का शरीर मिट्टी में परिवर्तित हो गया होगा। इस मिट्टी को निकाल किसी कोरी हांडी में लाल वस्त्र बिछाकर उसमें रख दें। तथा ऊपर से बरगद के तीन पत्ते रख दें तथा हांडी के मुख को लाल वस्त्र से बन्द कर दें। दूसरे दिन रात्रि के दूसरे पहर में हांडी को गुग्गल तथा लोबान की धूनी देकर उसी वृक्ष के नीचे गाड़ दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था तथा उन्नति के लिए प्रार्थना करें।

यह प्रयोग पन्द्रह दिन के भीतर अपना प्रभाव दिखाता है।

यात्रा में थकान न हो

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन किसी उल्लू को पकड़क लाएँ।

घर लाकर उल्लू को एक सफेद थैले में बन्द कर अपने शयनकक्ष में चारपाई के नीचे रख दें। प्रातःकाल उल्लू की चोंच खोलकर उसके मुँह में थोड़ा पारा डाल दें तथा पुनः उल्लू को थैले में बन्द कर दें। रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसका मांस निकाल लें तथा पंख एवं अस्थियों को वृक्ष के नीचे दबा दें। इसके पश्चात् मांस को एक पात्र में शहद तथा दो बूँद चमेली का इत्र डालकर रख दें। पात्र को भली प्रकार ढक दें तथा रात भर मांस को शहद में भीगा रहने दें।

प्रातःकाल गुलाब का एक ताजा पुष्प तोड़कर लाएँ तथा उसकी पत्तियों को मांस के पात्र में डाल दें। थोड़ा सा कपूर तथा एक जामुन का पत्ता भी पात्र में डाल दें तथा पात्र को गुग्गल की धूनी दें। रात्रि के समय समस्त सामग्री को मिट्टी के पात्र में डालकर महीन पीस लें। पीसकर समस्त सामग्री को महीन लेई जैसा बना लें तथा मिश्रण में चार बूँद गुलाब जल डालकर पुनः पीसें।

इसके पश्चात् मिश्रण से छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें तथा गोलियों को छाया में सुखा लें। सूखने के पश्चात् गोलियों पर चाँदी का वर्क लपेट लें तथा गोलियों को एक लकड़ी की डिब्बी में बन्द करके रख दें।

प्रयोग के समय गोलियों को कपूर की धूनी देकर यात्रा के समय अपने मुँह में रख लें तो यात्रा में थकान नहीं होती तथा यात्रा आराम से पूर्ण होती है।

यात्रा में उल्टी-चक्कर न आएँ

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में जब भरणी नक्षत्र आए तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी गुप्त एवं अन्धेरे स्थान पर रख दें तथा रत्रि में सो जाएँ। प्रातःकाल उल्लू को थोड़ा सा पारा खिला दें तथा उसकी चोंच पर काला धागा बाँध दें। रात्रि के समय उल्लू को

एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें।

इसके पश्चात् कुम्हार से एक कच्ची हंडिया लेकर आएँ तथा मांस को हंडिया में डालकर उसके मुख को लाल वस्त्र से बन्द कर दें। प्रात:काल हंडिया का मुख खोलकर उसमें दो बूँद केसर, दो बूँद गुलाब जल तथा गुलाब की कुछ पंखुड़ियाँ डाल दें तथा ऊपर से शक्कर की एक पर्त बिछा दें। इसके पश्चात् हंडिया के मुख को पुन: बन्द कर दें तथा हंडिया को भूमि में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। तीन दिन हंडिया को भूमि में दबा रहने दें तथा रात्रि के समय हंडिया को भूमि से निकाल लें। इसके पश्चात् मांस तथा समस्त सामग्री को खरल में डालकर महीन पीस लें तथा इस मिश्रण को गुग्गल की धूनी दें।

तत्पश्चात् मिश्रण को चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर ऊपर से शहद डाल दें तथा इस मिश्रण को धीमी आँच पर पका लें। मिश्रण को ठण्डाकर किसी पात्र में भर लें तथा पात्र को कपूर की धूनी दें।

प्रयोग के समय पात्र को अपने पास रखें तथा चक्कर या उल्टी आने पर थोड़ा सा मुँह में डाल दें।

इस प्रकार करने से जिन व्यक्तियों को चक्कर या उल्टी आदि की शिकायत रहती है वे लम्बे से लम्बी यात्रा का पूर्ण आनन्द उठा सकते हैं।

•

धन-धान्य की वृद्धि हेतु

भाद्रपद के कृष्ण पक्ष में जिस दिन भरणी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर लाएँ। इस उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी गुप्त तथा एकान्त कक्ष में ऊँचे स्थान पर लटका दें। सायंकाल तक उल्लू को पिंजड़े में बन्द रहने दें तथा रात्रि के समय उल्लू की चोंच में थोड़ा पारा डाल दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका मांस निकाल लें तथा उल्लू के पंख इत्यादि को एक काले वस्त्र में बाँधकर उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था।

इसके पश्चात् उल्लू के मांस को एक कोरी हंडिया में रखकर ऊपर से थोड़ा सा सिरका डाल दें तथा हंडिया का मुख बन्द करके हंडिया को आँगन

में एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें। तीन दिन तक हंडिया को भूमि में दबा रहने दें। तब हंडिया को भूमि से बाहर निकाल लें। इसके पश्चात् हंडिया में श्मशान की मिट्टी तथा साबुत नमक भरकर हंडिया को नीम की धूनी दें। हंडिया को रात भर के लिए एक खाली कक्ष में रख दें तथा बाहर से कक्ष का द्वार बन्द कर दें। प्रात:काल हंडिया को निकालकर तथा लोबान की धूनी देकर आँगन में उसी स्थान पर दबा दें जहाँ पहले हंडिया को दबा रखा था।

इस प्रयोग को करने से धन धान्य की वृद्धि होती है तथा घर में धनागम होता है।

धन की सुरक्षा के लिए

किसी भी शुभ तिथि को रात्रि के समय किसी बरगद के वृक्ष से एक उल्लू को पकड़ लाएँ। रात्रि के तीसरे पहर में उल्ले को मारकर उसका मांस अलग कर लें तथा अस्थियों एवं पंखों को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। इसके पश्चात् चार घड़ों को जल से भरकर किसी खाली कक्ष में रात भर के लिए रख दें। प्रात:काल जो घड़ा ओछा दिखाई दे उसमें मांस, सिरका, आँखड़े के पुष्प तथा एक चाँदी का सिक्का रखें।

इसके पश्चात् पूर्णिमा की रात्रि को इस घड़े को उस कक्ष में एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें जिसमें धन आदि रखा जाता हो।

सुख-शान्ति के लिए

किसी शुभ दिन तथा शुभ तिथि को रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। सायंकाल तक उल्लू को एक पिंजड़े में बन्द करके किसी अन्धेरे स्थान पर रख दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका मांस निकाल लें तथा पंख इत्यादि को किसी वस्त्र में बाँधकर उल्लू के निवास पर भूमि में दबा दें। इसके पश्चात् मांस को धोकर उसका रक्त इत्यादि साफ कर लें तथा मांस को रात भर पानी में भिगो दें।

प्रात:काल मांस को पानी से निकाल कर भली प्रकार निचोड़ लें तथा मांस को रुई में लपेटकर धूप में सूखने के लिए रख दें। सूखने पर मांस को

चमेली के इत्र में रात भर के लिए भिगो दें तथा इसके पश्चात् मांस को इत्र से निकालकर तथा निचोड़कर पुनः सुखा लें। जिस पानी में पहले मांस को भिगोया था वह पानी तथा चमेली का इत्र किसी पात्र में अलग-अलग भरकर रख दें। सूखने पर मांस को कपूर की धूनी दें तथा सिंदूर से पूजकर मांस को किसी लाल वस्त्र में लपेट कर रख दें।

इसके पश्चात् कुम्हार से अपने सामने एक हंडिया बनवाकर लाएँ तथा कुम्हार के पैर के नीचे की मिट्टी तथा जहाँ कुम्हार घड़ों इत्यादि को आग में पकाता है वहाँ की मिट्टी भी ले आएँ। हंडिया में मांस को रख दें तथा हंडिया में कुछ मात्रा में साबुत नमक भर दें। इसके पश्चात् मांस के पानी तथा चमेली के इत्र को धीमी आंच पर किसी ताँबे के पात्र में पका लें। मिश्रण को तब तक पकाएँ जब तक वह आधा न रह जाए। इसके पश्चात् मिश्रण को ठण्डा कर लें। मिश्रण को मिट्टी में मिलाकर एक रोटी सी बना लें तथा इसे छाया में सुखा लें। इस बात का ध्यान रखें कि यह टूटने अथवा चटखने न पाए। बहुत सावधानी से इसे सुखाएँ। सूखने के पश्चात् मिट्टी पर सिन्दूर का एक टीका लगाएँ तथा उसे मांस की हंडिया में रख दें।

तत्पश्चात् हंडिया पर लाल वस्त्र बाँधकर हंडिया को रात्रि के समय मुख्य द्वार पर गाड़ दें तो परिवार की सुख शान्ति बरकरार रहती है।

वशीकरण के लिए

रविवार के दिन जब सप्तमी तिथि हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर लाएँ।

घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी ऊँचे स्थान पर लटका दें तथा उल्लू की गर्दन में एक हाथ लम्बा सफेद रंग का सूत बाँध दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। तत्पश्चात् उल्लू का मांस निकाल लें तथा शेष अस्थियों इत्यादि को उसी स्थान पर भूमि खोदकर दबा दें। घर आकर मांस को भली प्रकार पानी से धोकर स्वच्छ कर लें तथा अपने वस्त्र बदल लें।

प्रातःकाल मांस को किसी पात्र में डालकर उस पर कुछ बूँदे गुलाब

जल, मोगरे का इत्र तथा एक गुलाब का पुष्प डालकर पात्र को रात्रि भर रखा रहने दें। अगले दिन समस्त सामग्री को मांस के साथ महीन लेई जैसा पीस लें। पीसने के पश्चात् इस मिश्रण में दो बूँद केसर डाल दें तथा मिश्रण को रात्रि भर ओस में रख दें।

प्रातःकाल इस मिश्रण की छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें तथा उन गोलियों को सिन्दूर में लपेटकर छाया में सुखा लें। सूखने पर गोलियों को कपूर की धूनी देकर चाँदी के वर्क में लपेट कर रख लें।

फिर किसी शुभ दिन तथा शुभ समय एक गोली को निकालकर तथा गुग्गल की धूनी देकर अपने आँगन में गाड़ दें। दूसरे दिन दूसरी गोली को अपने मुख्य द्वार पर रात्रि के समय गाड़ दें।

मिश्रण की कम-से-कम छह गोली बनाना अति आवश्यक है। गोलियों की संख्या कम नहीं होनी चाहिए। तीसरी गोली को अपने आने-जाने के रास्ते पर गुप्त ढंग से एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें। चौथी गोली को इच्छित व्यक्ति के आने-जाने वाले रास्ते में गाड़ दें तथा अगले दिन पाँचवीं गोली को इच्छित व्यक्ति के मुख्य द्वार पर गाड़ दें।

छठी गोली को डिब्बी में बन्द कर अपने पास रखें। यह सब कार्य गुप्त रूप से करें तो निश्चित ही इच्छित व्यक्ति को वश में किया जा सकता है। यह प्रबल वशीकरण प्रयोग है।

सम्मोहन के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी वस्त्र में बाँधकर अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

प्रातःकाल उल्लू को निकालकर उसकी चोंच में थोड़ा सा पारा भर दें तथा पुनः उल्लू को वस्त्र में बाँध दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। फिर उल्लू का मांस निकाल लें तथा पंखों एवं अस्थियों को वहीं दबा दें तथा अपने घर लौट आएँ। मांस को भली प्रकार धोकर मिट्टी के पात्र में डाल दें तथा पात्र को

रात भर के लिए ओस में खुला रख दें।

प्रात:काल मांस को निचोड़कर उसमें तिल का तेल भर दें। तेल इतना हो कि मांस पूर्णतया डूब जाए। तीन दिन मांस को इस तेल में पड़ा रहने दें, तब तेल को धीमी आँच पर पकाएँ। तेल को तब तक पकाते रहें जब तक वह एक चौथाई भाग न रह जाए। तब तेल को ठण्डा कर लें। ठंडा होने पर तेल को मिट्टी के कोरे पात्र में भर लें तथा तेल को गुग्गल की धूनी दें।

इसके पश्चात् तेल का दीपक जलाकर उसकी कालिख को किसी कोरी ठीकरी पर उतार लें। इस कालिख को किसी पात्र में भर लें तथा उसमें दीपक का तेल मिलाकर काजल बना लें।

प्रयोग के समय इस काजल को गुग्गल की धूनी दें तथा प्रथम अपने दाएँ नेत्र में लगाएँ तथा इसके पश्चात् बाएँ नेत्र में लगाएँ। काजल लगातार किसी सभा इत्यादि में जाएँ अथवा जनसमूह के समक्ष जाएँ तो देखते ही प्रत्येक व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है।

समाज सम्मोहन तिलक

उल्लू के मांस को धोकर रात भर के लिए ओस में खुला छोड़ दें तथा प्रात:काल मांस को निचोड़कर उसमें चार बूँद गोरोचन मिला लें। इसके पश्चात् मांस को महीन पीस लें तथा मिश्रण में चमेली का दो बूँद इत्र डालें। प्रयोग के समय इस मिश्रण का माथे पर तिलक करें तो प्रत्येक व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है।

शत्रु घर छोड़कर भाग जाए

शनिवार के दिन जब पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र हो तो रात्रि के समय किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को किसी एकान्त तथा अँधेरे स्थान पर बिल्ली इत्यादि से बचाकर रख दें। रविवार के दिन उल्लू की चोंच में कपूर भर दें तथा पुनः उल्लू को उसी स्थान पर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें तथा उल्लू की अस्थियाँ निकाल लें। इसके पश्चात् उल्लू के पंख एवं अस्थियों को किसी

काले वस्त्र में बाँधकर उसी स्थान पर दबा दें तथा प्रात: से पूर्व घर लौट आएँ तथा स्नान करें।

स्नान करके अस्थियों को पानी में धोकर भली प्रकार साफ कर लें तथा अस्थियों को कपूर की धूनी दें। रात्रि के समय श्मशान जाकर वहाँ से थोड़ी मिट्टी लेकर आएँ तथा पीछे मुड़कर देखे बिना घर लौट आएँ। अगले दिन कुम्हार के पास जाएँ तथा उससे अपने सामने एक घड़ा अथवा हंडिया बनवाएँ तथा हंडिया बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाली मिट्टी में श्मशान की मिट्टी मिला दें। इस हंडिया को सब पात्रों से अलग पकवाएँ तथा तैयार हो जाने पर हंडिया को घर ले आएँ।

इसके पश्चात् किसी गधे का पेशाब लेकर आएँ तथा उसमें सिन्दूर घोलकर हंडिया पर शत्रु का नाम लिखें।

तत्पश्चात् हंडिया में अस्थियों को लाल रंग के रेशम में बाँधकर रख दें तथा अस्थियों के ऊपर एक चुटकी सिन्दुर, एक चमेली का पुष्प तथा नमक की तीन साबुत डलियाँ रख दें।

अब हंडिया का मुख लाल वस्त्र में बन्द कर उसे शत्रु के मुख्य द्वार पर एक हाथ की भूमि खोदकर दबा दें। तीन दिन में शत्रु घर छोड़कर भाग जाएगा।

शत्रु उच्चाटन प्रयोग

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो रात्रि के समय किसी घने वृक्ष से एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को काले रंग के थैले में बन्द कर किसी अँधेरे स्थान पर रख दें।

रात्रि के समय उल्लू को मार दें तथा उल्लू को किसी कोरी हंडिया में रखकर उस पर थोड़ा नमक अथवा सिरका डाल दें तथा हंडिया को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। एक सप्ताह तक प्रतिदिन आंखड़े का एक पुष्प सायंकाल के समय तोड़कर लाएँ। एक सप्ताह के पश्चात् रात्रि के समय हंडिया को जहाँ दबाया था वहाँ से निकालकर घर ले आएँ। हंडिया काम मुँह खोलें तथा हंडिया में से उल्लू की अस्थियों को चुन

लें तथा हंडिया को पुनः उसी स्थान पर दबा दें। अस्थियों को धोकर छाया में सुखा लें तथा अस्थियों पर सात हाथ लम्बा काले रंग का रेशम लपेटकर कपूर की धूनी देकर रख दें।

इसके पश्चात् किसी कुम्हार से कोरी हंडिया लेकर आएँ तथा उसमें गधे का पेशाब भर लें। तत्पश्चात् हंडिया में अस्थियों को रख दें तथा हंडिया में साबुत नमक की सात डलिया रख दें तथा हंडिया को लोबान की धूनी देकर शत्रु के मुख्य द्वार पर किसी प्रकार से गाड़ दें। यह कार्य गुप्त रूप से तथा रात्रि के समय करें। उच्चाटन का प्रबलतम प्रयोग है।

दुश्मन की कोई चाल सफल न हो

अमावस्या के दिन रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर लाएँ तथा उल्लू को रात्रि के समय मारकर किसी मिट्टी के पात्र में रखकर उसे आँगन में दबा दें। एक सप्ताह के पश्चात् उल्लू के पात्र को भूमि से बाहर निकाल लें तथा उसमें से अस्थियों को अलग कर लें। पात्र को उल्लू के निवास स्थान पर भूमि में दबा दें तथा अस्थियों को पानी से भली भाँति धोकर साफ कर लें।

इसके पश्चात् अस्थियों को लोबान की धूनी देकर किसी लाल वस्त्र में बाँध लें तथा ऊपर से सात हाथ लम्बा काला रेशम लपेट लें। शनिवार की रात्रि को अस्थियों को शत्रु के मुख्य द्वार पर एक हाथ की भूमि खोदकर दबा दें। शत्रु कोई भी प्रयोग करे वह सफलता नहीं पा सकेगा।

जुए में जीतने के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी अँधेरे स्थान पर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसकी अस्थियाँ निकाल लें तथा पंख एवं अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। घर लाकर अस्थियों को भली प्रकार धोकर साफ कर लें तथा छाया में अस्थियों को सुखा लें। सूखने के पश्चात् अस्थियों को किसी श्वेत

वस्त्र में बाँधकर अँधेरे स्थान पर रख दें, इससे पूर्व अस्थियों को गुग्गल तथा लोबान की धूनी दें।

मंगलवार के दिन गधे का ऐसा पेशाब लाएँ जो भूमि पर न गिरा हो। अस्थियों को गधे के पेशाब में भिगो दें। अस्थियों को तीन दिन इसी प्रकार भीगा रहने दें। तीन दिन के पश्चात् अस्थियों को पेशाब से निकालकर धो लें तथा पुनः छाया में सुखा लें। सूखने पर अस्थियों को कपूर की धूनी दें तथा किसी लाल रंग के वस्त्र में लपेट लें। वस्त्र में रखने से पूर्व वस्त्र में कोई इत्र लगा लें अन्यथा अस्थियों से दुर्गन्ध आएगी। इसके पश्चात् अस्थियों को किसी कोरे घड़े में रखकर घड़े को बन्द करें तथा इसके पश्चात् घड़े को श्मशान भूमि में ऐसे स्थान पर गाड़ आएँ जहाँ कोई चिता जली हो।

घड़े को गाड़ने के पश्चात् उस स्थान पर कोई चिह्न अंकित कर दें ताकि स्थान ढूँढ़ने में कठिनाई न हो। तीन दिन के पश्चात् घड़े को भूमि से बाहर निकालकर घर ले आएँ।

अस्थियों को घड़े से बाहर निकाल लें तथा घड़े को पुनः उसी श्मशान भूमि में गाड़ आएँ। फिर अस्थियों के गुग्गल की धूनी देकर अस्थियों में सात रंग का रेशम बाँध दें।

प्रयोग के समय अस्थियों को पुनः गुग्गल की धूनी देकर अस्थियों को अपनी दाहिनी भुजा में बाँधें तथा जुआ खेलने जाएँ।

इस प्रयोग को करने से अवश्य ही जुए में विजय होती है।

शत्रु को रोगग्रस्त करने के लिए

अमावस्या की रात्रि को किसी बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े को किसी अँधेरे ऊँचे स्थान पर टाँग दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें तथा उसकी अस्थियाँ निकाल लें। उल्लू के पंख तथा अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उसे पकड़ा था। अस्थियों को घर ले आएँ तथा पानी से भली प्रकार धो लें तथा इसके पश्चात् छाया में सुखा लें। सात हाथ लम्बे सूत को लाल रंग से रंगकर उसमें

अस्थियों को बाँध दें तथा अस्थियों को कपूर की धूनी दें। शनिवार की रात्रि को अस्थियों को श्मशान भूमि में ले जाकर गाड़ दें। तीन दिन के पश्चात् अस्थियों को श्मशान भूमि से निकाल लाएँ तथा एक श्वेत वस्त्र में बाँध लें।

तत्पश्चात् अस्थियों को लोबान की धूनी देकर रात्रि के समय शत्रु के घर में अथवा मुख्य द्वार पर दो हाथ भूमि खोदकर दबा दें तो शत्रु बीमार हो जाता है।

शत्रु का कष्ट बढ़े

रविवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। दूसरे दिन रात्रि के समय उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। मारने के पश्चात् उल्लू की अस्थियाँ निकाल लें तथा पंखों एवम् अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें। इसके पश्चात् अस्थियों को घर लाकर पानी से धो लें तथा छाया में सुखा लें। सूखने के पश्चात् अस्थियों को लाल रंग के रेशम में बाँधकर किसी घड़े में रख दें।

इसके पश्चात् घड़े में चिता की राख, श्मशान भूमि की मिट्टी तथा बरगद के तीन पत्ते रखकर घड़े को शत्रु के मुख्य द्वार पर गाड़ दें।

इस प्रयोग को करने से निश्चित रूप से शत्रु पर कष्ट का प्रकोप बढ़ जाता है।

विद्वेषण के लिए

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी अँधेरे एवं गुप्त स्थान पर रख दें। प्रात:काल उल्लू की चोंच खोलकर उसके मुँह में मोम भर दें तथा सायंकाल तक उल्लू को पिंजड़े में बन्द रहने दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसकी अस्थियों को निकाल लें तथा पंख इत्यादि को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। इसके पश्चात् अस्थियों को लेकर घर आ जाएँ तथा अस्थियों को भली प्रकार पानी से धो लें।

एक कच्चे घड़े में अस्थियों को रखकर शनिवार की रात्रि को किसी तिराहे पर गाड़ दें।

तीन दिन के पश्चात् रात्रि के समय ही घड़े को निकाल लाएँ तथा अस्थियों को गुग्गल की धूनी देकर पुनः घड़े में रख दें। फिर किसी कुँवारी कन्या से चार हाथ लम्बा सूत लेकर आएँ तथा सूत को सिन्दूर में रंग लें। अस्थियों को घड़े से निकालकर दो भागों में विभक्त कर दें तथा इस सूत से अलग-अलग बाँध दें। घड़े में तीन आंखड़े के पुष्प, तीन घोड़े के बाल तथा बिल्ली के सिर के बाल डालकर घड़े को तिराहे पर उसी स्थान पर गाड़ दें जहाँ पहले गाड़ा था।

शनिवार की रात्रि को अस्थियों को लोबान की धूनी दें तथा इच्छित व्यक्तियों के घर के मुख्य द्वार अथवा खेत पर गाड़ दें तो दोनों व्यक्ति परस्पर शत्रु बन जाते हैं।

यह कार्य पूर्णतः गुप्त रूप से करें। इस बात का ध्यान रखें कि अस्थियाँ गाड़ते समय कोई व्यक्ति देख न ले अन्यथा प्रयोग निष्फल हो जाता है।

दो पक्षों में वैर कराने के लिए

शनिवार की रात्रि को उल्लू को मारकर उसकी अस्थियाँ निकाल लें तथा अस्थियों को धोकर सुखा लें। इसके पश्चात् घोड़े की पूँछ के छह बाल लेकर अस्थियों में बाँध दें तथा अस्थियों को दो भागों में विभक्त कर इच्छित व्यक्तियों के घर के द्वार पर गाड़ दें।

उल्लू द्वारा मारण प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को जंगल से किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उल्लू को गर्दन में काले रंग का एक हाथ लम्बा धागा बाँध दें। अगले दिन सायंकाल को उल्लू की चोंच खोलकर उसके मुँह में थोड़ा पारा भर दें। रात्रि के समय उल्लू को जहाँ से पकड़ा था उसी वृक्ष के नीचे एक हंडिया में मारकर दबा

दें। दबाने से पूर्व हंडिया में सरसों का तेल डाल दें तथा हंडिया के मुख पर लाल वस्त्र बाँध दें। मारने से पूर्व उल्लू की गर्दन में बँधा हुआ धागा खोलकर अपने पास रख लें।

एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को रात्रि के समय जाकर निकाल लाएँ तथा उसमें से अस्थियाँ निकाल लें। हंडिया को उसी प्रकार लाल वस्त्र से मुँह बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें। घर लाकर अस्थियों को पानी से भली प्रकार धोकर पानी से साफ कर लें।

शनिवार के दिन कुम्हार से एक कोरी हंडिया लेकर आएँ तथा हंडिया में गधे का ऐसा पेशाब भर लें जो भूमि पर न गिरा हो। फिर हंडिया में कुछ मुट्ठी उड़द, एक मुट्ठी पीली सरसों तथा अस्थियों को रखकर श्मशान भूमि में गाड़ दें तथा उस स्थान पर कोई चिह्न अंकित कर दें। एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को रात्रि के समय श्मशान भूमि से निकाल कर ले आएँ। शनिवार के दिन हंडिया में से अस्थियों को निकालकर उस पर उल्लू की गर्दन वाला धागा बाँध दें जो खोलकर रखा हुआ था।

इसके पश्चात् अस्थियों को तीन भागों में विभक्त करें तथा सात रंग के रेशम से अलग-अलग बाँध लें। रात्रि के समय एक भाग को शत्रु के खेत पर गाड़ दें तथा दूसरे भाग को किसी तिराहे पर गाड़ दें। तीसरे भाग को शत्रु के मुख्य द्वार पर एक हाथ की भूमि खोदकर दबा दें। यह कार्य पूर्णतः गुप्त रीति से करें। इस प्रयोग को करने से एक सप्ताह के भीतर इच्छित व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। किसी अति दुष्ट आदमी पर प्रयोग करें अन्यथा प्रभाव अपने पर आ सकता है।

नोट—ऐसे प्रयोग करने से पूर्व व्यक्ति अपना भला-बुरा भी स्वयं सोच ले।

वशीकरण के लिए

कार्तिक मास की पूर्णिमा की रात्रि को किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को काले रंग के थैले में बन्द करके किसी अँधेरे स्थान पर रख दें। प्रातःकाल उल्लू की चोंच में कपूर तथा पारा भर दें तथा उल्लू को पुनः थैले में बन्द कर उसी स्थान पर रख दें। रात्रि के दूसरे पहर

में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। मारने के पश्चात् उल्लू का दिल सावधानी पूर्वक निकाल लें तथा पंख और अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें। उल्लू के दिल को लेकर घर आ जाएँ तथा दिल को पानी से भली प्रकार धोकर साफ कर लें।

इसे एक ताँबे के पात्र में रख लें तथा पात्र में चमेली का इत्र भर दें। प्रातःकाल इत्र को निकाल कर भली भाँति निचोड़ लें तथा दिल को छाया में सुखा लें। रात्रि के समय दिल को पुनः एक मिट्टी के पात्र में रखकर पात्र में चुटकी भर सिन्दूर डालकर रात भर के लिए ओस में खुला छोड़ दें।

प्रातःकाल दिल को पात्र में से निकालकर छाया में सुखा लें। तत्पश्चात् प्रातःकाल किसी उद्यान में से ऐसे गुलाब के पुष्प को तोड़कर लाएँ जो पूर्ण विकसित न हों। फिर गुलाब की पत्तियों को एक लकड़ी की डिब्बी में बिछा दें तथा उसमें उल्लू के दिल को रखकर ऊपर से पुनः पत्तियाँ बिछा दें।

रात्रि के समय गुप्त रूप से यह डिब्बी इच्छित व्यक्ति, स्त्री अथवा पुरुष के आने-जाने के रास्ते में गाड़ दें। जिस दिन भी व्यक्ति का पैर उस स्थान पर पड़ेगा वह तुरन्त वशीभूत हो जाएगा।

घर कीलने के लिए

कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन रात्रि के समय किसी बरगद के वृक्ष से एक उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उसकी गर्दन में एक हाथ लम्बा काला धागा बाँध दें।

प्रातःकाल उल्लू का मुख खोलकर उसके मुख में शहद की दो बूँदे डाल दें तथा पुनः उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें। रात्रि के समय उल्लू को जिस वृक्ष के नीचे से पकड़ा था उसी वृक्ष के नीचे ले जाकर मार दें। उल्लू के दिल को सावधानीपूर्वक निकाल लें तथा अस्थियों एवं पंखों को उसी वृक्ष की जड़ में गाड़ दें। सूर्योदय से पूर्व दिल को लेकर घर आ जाएँ तथा पानी से भली प्रकार धोकर साफ कर लें। उल्लू को मारने से पूर्व उसकी गर्दन में बँधा धागा निकाल लें तथा धागे को अपने पास रख लें। रात्रि के समय

श्मशान भूमि जाकर वहाँ से थोड़ी मिट्टी खोद लाएँ।

प्रात:काल कुम्हार के पास जाकर उससे एक हंडिया बनवाएँ तथा हंडिया की मिट्टी में श्मशान की मिट्टी मिला लें।

इस हंडिया को सब पात्रों से अलग पकवाएँ तथा जिस स्थान पर बर्तन पकाए जाते हैं उस स्थान की राख ले आएँ। हंडिया में किसी तालाब का पानी तथा आंवे की राख डालकर ढक कर रख दें।

इसके पश्चात् किसी मिट्टी के पात्र में चमेली का इत्र भर कर दिल को उसमें भिगो दें। तीन दिन तक इसी प्रकार दिल को चमेली के इत्र में भीगा रहने दें तथा चौथी रात को दिल को ओस में खुला छोड़ दें। तत्पश्चात् हंडिया में दिल तथा इत्र आदि को डालकर श्मशान भूमि में दबा दें।

दबाने के पश्चात् उस स्थान पर कोई चिह्न अंकित कर दें ताकि स्थान को पहचानने में कठिनाई न हो। एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को श्मशान भूमि से निकाल लाएँ तथा उसमें थोड़ा कपूर डाल दें।

हंडिया के ऊपर लाल वस्त्र बाँधकर उसी धागे को हंडिया के चारों ओर लपेट दें जो उल्लू की गर्दन में बँधा था। इसके पश्चात् इस हंडिया को इच्छित घर के मुख्य द्वार पर गाड़ दें।

शत्रु का हार्ट फेल हो

शुक्रवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े को किसी अँधेरे स्थान पर रख दें। दो दिन पश्चात् उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। मारने के पश्चात् उल्लू का दिल सावधानीपूर्वक निकाल लें तथा पंख एवं अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें। घर आकर उल्लू के दिल को पानी से धोकर साफ कर लें तथा उसे किसी पात्र में रखकर रात भर ओस में खुला छोड़ दें। प्रात:काल स्नान आदि करके उल्लू के दिल को पात्र से निकाल कर निचोड़ लें।

इसके पश्चात् पात्र में दिल को डालकर उसमें थोड़ा सा पानी डाल दें

तथा पात्र में कपूर डाल दें। कपूर को पानी में भली प्रकार घुलने दें। इसके पश्चात् पुनः पात्र को रात भर ओस में खुला छोड़ दें। प्रात:काल दिल को पात्र से निकालकर भली प्रकार निचोड़ लें तथा दिल को लोबान की धूनी दें। फिर दिल को लाल वस्त्र में लपेटकर छाया में सुखा लें तथा सूखने पर लाल वस्त्र से निकाल लें। तब मिट्टी की कोरी हंडिया में चार बूँद चमेली का तेल, दो बूँद केवड़ा तथा दो बूँद केसर डाल दें। इस हंडिया में दिल को डालकर हंडिया के मुख पर लाल वस्त्र बाँध दें। हंडिया को रात्रि के समय ले जाकर उसी स्थान पर दबा दें जहाँ उल्लू के पंख तथा अस्थियों को दबाया था। एक रात्रि हंडिया को उसी स्थान पर गड़ा रहने दें तथा दूसरे दिन रात्रि के समय हंडिया को निकाल लाएँ। तत्पश्चात् श्मशान भूमि की मिट्टी तथा गधे के पाँव की मिट्टी लेकर आएँ तथा पात्र में डाल दें। फिर किसी लोहार से एक लोहे की सात इंच की कील बनवाकर लाएँ।

प्रयोग के समय शत्रु का नाम लेकर तथा दिल को हंडिया से निकालकर दिल में लोहे की कील ठोंक दें। इस प्रकार शत्रु का दिल कार्य करना बन्द कर देता है तथा उसकी मृत्यु हो जाती है।

विशेष—ऐसा प्रयोग केवल उन्हीं पर करें जो समाज के लिए घातक व मानवता पर कलंक हों अन्यथा कर्ता का स्वयं का विनाश हो जाया करता है।

शत्रु के घर में कलह कराने के लिए

शनिवर की रात्रि को किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को किसी पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उल्लू की गर्दन में सात हाथ लम्बा काला रेशम बाँध दें। दूसरे दिन रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसके पंजे पैरों की अस्थियों के साथ अलग कर दें। पंजों को अलग करके उल्लू के शरीर को किसी वस्त्र में बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। घर लाकर पंजों को भली प्रकार पानी से साफ कर लें तथा किसी मिट्टी के पात्र में बन्द कर लें।

अगले दिन प्रात:काल कुम्हार से कोरी हंडिया लेकर आएँ तथा उसमें काले तिल का तेल तथा थोड़ा सिरका डालकर रात भर ओस में खुला छोड़

दें। प्रात:काल पंजों को हंडिया में डाल दें तथा हंडिया के मुख पर लाल वस्त्र बाँध कर हंडिया को श्मशान भूमि में गाड़ दें। एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को श्मशान भूमि से निकालकर घर ले आएँ तथा पंजों को निकाल लें। इसके बाद पंजों को पानी से भली प्रकार धोकर सुखा लें तथा पंजों को लोबान की धूनी दें। शनिवार के दिन लाल रंग का एक हाथ वस्त्र लेकर आएँ तथा वस्त्र में तीन नमक की डलियाँ, तीन कीकर के काँटे तथा तीन घोड़े की पूँछ के बाल रख दें।

इसके पश्चात् वस्त्र में उल्लू के पंजों को भी रख दें तथा वस्त्र को काले रेशम से तीन गाँठ देकर बाँध दें। रात्रि के समय वस्त्र को शत्रु के मुख्य द्वार पर अथवा खेत इत्यादि में दो हाथ की भूमि खोदकर गाड़ दें तो उसके घर में क्लेश रहने लगेगा।

शत्रु के घर में सर्प दिखाई दें

रविवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के समय किसी घने वृक्ष से उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी पिंजड़े में बन्द करके अँधेरे एवं गुप्त स्थान पर रख दें। दूसरे दिन रात्रि के समय उल्लू को मारकर एक कोरी हंडिया में बन्द करें तथा हंडिया के मुख पर काला वस्त्र बाँध दें। इसके पश्चात् हंडिया को उल्लू के निवास स्थान पर वृक्ष की जड़ में एक हाथ भूमि खोदकर दबाएँ। मंगलवार की रात्रि को जंगल जाकर किसी सर्प की पूंछ की अस्थि लेकर आएँ।

एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को वृक्ष के नीचे से ले आएँ तथा हंडिया में से उल्लू की अस्थियों को निकाल लें। हंडिया को पुन: बरगद के वृक्ष की जड़ में दबा दें तथा दबाने से पूर्व हंडिया में थोड़ा गंगा जल डाल दें। इसके पश्चात् पंजों को धो लें तथा लोबान एवं गंधक की धूनी देकर रुई में लपेटकर रख लें। शनिवार की रात्रि को चिता की राख तथा चिता के जलते हुए कोयले लेकर आएँ। फिर चिता के कोयले से अग्नि जलाएँ तथा साँप की पूंछ की अस्थि एवं पंजों का चूर्ण बना लें।

तत्पश्चात् रविवार की रात्रि को चिता की राख तथा अस्थियों के

मिश्रण को शत्रु के घर में डाल दें तो उसे घर के चारों ओर साँप ही साँप दीखते हैं।

शत्रु का अन्न खराब करने के लिए

शुक्रवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी थैले में बन्द कर अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

प्रात:काल उल्लू के मुख में थोड़ी गन्धक डाल दें तथा पुन: उल्लू को बन्द कर दें।

रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसके पंजे अलग कर लें तथा पंख इत्यादि को वृक्ष के नीचे दबा दें। इसके पश्चात् किसी कुंवारी कन्या से एक हाथ लम्बा सूत कतवा कर लाएँ तथा पंजों को बाँधकर शत्रु के भण्डार गृह में गाड़ दें तो शत्रु का समस्त अन्न खराब हो जाता है।

प्रेत बाधा निवारण के लिए

शनिवार की रात्रि को तीसरे पहर में किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ।

दूसरे दिन रात्रि के समय जाकर उल्लू के घोंसले को वृक्ष से उतार लाएँ तथा उल्लू को किसी अन्य वृक्ष पर छोड़ आएँ। इसके पश्चात् घोंसले को नीम तथा गुग्गल की धूनी दें तथा घोंसले को जलाकर उसका चूर्ण बना लें। तत्पश्चात् सम्बन्धित व्यक्ति के सिर पर यह चूर्ण डाल दें तो प्रेम व्यक्ति को छोड़कर भाग जाता है।

घर पर कोई संकट न आए

रविवार की पंचमी तिथि को किसी वृक्ष से उल्लू की अनुपस्थिति में घोंसला उतार लाएँ।

घर आकर घोंसले को गुग्गल, लोबान तथा गन्धक की धूनी देकर किसी पात्र में बन्द कर श्मशान भूमि में गाड़ आएँ। एक सप्ताह के पश्चात्

घोंसले को पात्र से निकालकर घर ले आएँ तथा घोंसले को नीम की धूनी दें। तत्पश्चात् चिता के कोयले लाकर उन्हें किसी कोरी हंडिया में डाल दें तथा हंडिया में कपूर तथा गन्धक डालकर तीन बार सम्बन्धित व्यक्ति के सिर के चारों ओर से उतारें। फिर हंडिया में घोंसला डालकर जलाकर चूर्ण बना लें तथा हंडिया को बन्द करके रख दें। दूसरे दिन रात्रि के समय स्नान कर श्वेत वस्त्र पहनें तथा मृग चर्म के आसन पर बैठकर सरसों के तेल का दीपक जला लें।

प्रेतग्रस्त व्यक्ति को भी यदि सम्भव हो तो स्नान कराने के पश्चात् अपने सम्मुख बैठा लें तथा व्यक्ति के सिर पर इस राख को डाल दें। इस प्रयोग को करने से व्यक्ति प्रेतमुक्त हो जाता है तथा यदि हंडिया को घर में ही रखें तो घर पर कोई संकट नहीं आता।

कुछ अन्य प्रयोग

- उल्लू को निम्न मन्त्र द्वारा ७१०८ बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर के दरवाजे पर फेंक दिया जाएगा, उसका घर वीरान हो जाएगा। ***मन्त्र—'ॐ नमो कालरात्रि'।***
- इसकी आँख को कस्तूरी में रगड़कर जिसकें ऊपर डाल दिया जाए वह मित्र बन जाएगा।
- इसकी हड्डी को जलाकर जिसके सिर में वह राख डाल दी जाए वह आवारा फिरता रहेगा।
- इसका मांस सुखाकर जिसको खिलाया जाए वह परेशान रहेगा।
- इसकी जिह्वा को दूध में थोड़ी सी केसर के साथ मिलाकर जिस किसी को पिला दिया जाए तो वह व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त करेगा।
- इसके पैरों की राख जिसको खिला दी जाए वह सदा चिन्तातुर रहेगा।
- इसकी विष्ठा सुपारी के साथ किसी को खिला दी जाए तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाएगी।
- इसकी दोनों आँखों को पानी में डाल दें। जो सीधी रहे वह सोने वाली और जो उल्टी पड़ी रहे वह जागने वाली आँख है। यदि सीधी आँख को किसी के सिराहने रख दें तो उसका उठने का मन न चाहे और उल्टी आँख को अँगूठी में जड़ाकर पास में रखें तो जो पहने उसको नींद नहीं आएगी।
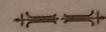
आप सबकी जानकारी बढ़ाने और तन्त्र के विस्तार को विस्तृत रूप से समझने के लिए अब मैं कौवा तन्त्र नामक अगले अध्याय की ओर बढ़ता हूँ। आप इस ग्रन्थ में बताए सभी प्रयोग शत-प्रतिशत सफल पाएँगें क्योंकि ये सब मेरे अनुभव किए हुए और प्रयोग किए जा चुके हैं। आपको केवल निष्ठावान होकर विधि-विधान अनुसार प्रयोग करना है। यदि सफलता न मिले तो भी निराश न हों क्योंकि साधना में दोष अपना होता है अत: दुबारा प्रयास करें—ईश्वर सच्चे को सफलता देने वाला है।

—लेखक

कौवा तन्त्र

कौवा नामक पक्षी, जिसे 'काक', 'कागा', 'कौवा' आदि नामों से भी पुकारा जाता है, न केवल भारतवर्ष में अपितु संसार के प्रायः सभी देशों में पाया जाता है।

कौवे आमतौर पर तीन प्रकार के होते हैं—

१. छोटे कद के, जिनका रंग काला होता है, परन्तु गर्दन कुछ सफेदी लिए होती है अर्थात् गर्दन वाला स्थान हल्के काले रंग का होता है।

२. छोटे कद के, जिनका सम्पूर्ण शरीर काले रंग का होता है।

३. बड़े कद के, जो आमतौर पर गहरे काले रंग के ही पाए जाते हैं। इन्हें 'डोडर कौवा' अथवा 'पहाड़ी कौवा' भी कहा जाता है।

आमतौर पर कौवे का कद १५ इंच लम्बा होता है और ऊँचाई ६ इंच होती है। इसकी पूंछ के पंखों की लम्बाई ९ इंच के लगभग होती है। कौवे की चोंच की लम्बाई २ इंच होती है और वह अत्यन्त काली होती है।

कौवे के पंख काले होते हुए भी चमकीले होते हैं। इसकी दो टाँगें होती हैं तथा पंख चार भागों में विभक्त होते हैं। यों, देखने में तो कौवे लम्बे होते हैं, अन्य पक्षियों की भाँति इसकी उम्र की कोई सीमा नहीं आँकी जा सकती। कहते हैं कि यदि कौवा दुर्घटना का शिकार न हो तो वह हजारों वर्ष तक जीवित रहता है अर्थात् एक प्रकार से यह पक्षी अमर है। स्वाभाविक मृत्यु से नहीं मरता। कोई-न-कोई दुर्घटना इसके प्राणों की ग्राहक बनती है। इस सम्बन्ध में एक कहानी प्रचलित है, जिसे नीचे दिया जाता है—

कौवे की कहानी

कहा जाता है कि अत्यन्त प्राचीन काल अर्थात् सतयुग में कौवे के शरीर का रंग सफेद होता था। एक बार किसी ऋषि ने एक कौवे से कहा कि तुम जाकर अमृत के स्रोत का पता लगा लाओ। साथ ही यह चेतावनी भी कर दी कि जब तुम्हें अमृत के स्रोत का पता चल जाए, तब तुम सीधे मेरे पास चले आना, उस अमृत का पान स्वयं मत करना।

ऋषि की आज्ञा शिरोधार्य कर, वह कौवा अमृत के स्रोत की खोज में उड़ चला। निरन्तर एक वर्ष तक स्थान-स्थान पर भ्रमण करने के उपरान्त एक दिन वह अमृत के स्रोत के समीप जा पहुँचा। अपने परिश्रम को सफल हुआ देखकर कौवे को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उस समय वह अत्यन्त थका हुआ था और उसे प्यास भी जोर की लग रही थी। अतः अमृत के स्रोत को देखते ही, वह अपने ऊपर नियन्त्रण न रख सका और उसने ऋषि के निषेध की परवाह न करते हुए अमृत के कुछ घूँट पी लिए।

इसके पश्चात् वह कौवा लौटकर ऋषि के समीप पहुँचा और उन्हें बताया कि मैं अमृत के स्रोत का पता लगा आया हूँ, वह अमुक स्थान पर है। साथ ही यह भी कह दिया कि प्यास से विवश एवं गन्ध से आकर्षित हो जाने के कारण मैंने आपके निषेध के बावजूद भी उस अमृत से कुछ घूंट पी लिए हैं।

कौवे की बात सुनकर ऋषि ने कहा, 'हे कौवे तूने अमृत के स्रोत का पता लगा लिया, यह तो ठीक रहा, परन्तु मेरे निषेध के बावजूद भी तूने उसे अपनी चोंच से अपवित्र कर दिया, यह अच्छा नहीं किया। ऐसी स्थिति में मैं तुझे श्राप देता हूँ कि आज से तू प्राणीमात्र के लिए घृणा एवं अविश्वास का पात्र बन जाएगा। तेरी अन्य सजातियों की भी यही दशा होगी। संसार का कोई भी प्राणी तुझसे प्रेम नहीं करेगा, यहाँ तक कि अन्य नभचर पक्षी भी तुझसे दूर ही रहा करेंगे। तू अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करेगा, अतः सब लोग तेरी निन्दा करेंगे। चूँकि तूने अमृत का पान कर लिया है, अतः तेरी स्वाभाविक मृत्यु नहीं होगी और तू जरा-व्याधि से भी मुक्त रहेगा, परन्तु मृत्यु का कारण दुर्घटनाएँ हुआ करेंगी।

यह कहकर ऋषि ने उस गौर वर्ण कौवे को अपने हाथ में पकड़ कर,

समीप स्थित एक लोटे में, जिसमें किसी अन्य कार्य के लिए काले रंग का द्रव्य भरा हुआ था, डुबा दिया। उस काले रंग के द्रव्य में डुबकी लगाने के कारण श्वेत वर्ण कौवे के शरीर का रंग काला हो गया। गर्दन तथा पेट के जिस भाग को मुनि ने अपने हाथ से पकड़ रखा था, उस भाग पर काले रंग के पानी का प्रभाव अधिक नहीं पड़ा, इसीलिए उतना हिस्सा कुछ-कुछ सफेदी लिए हुए हल्के काले रंग का रहा तथा शेष भाग पूर्णरूपेण काला हो गया। उसी दिन से सम्पूर्ण कौवा जाति का रंग श्वेत से बदलकर काला हो गया और तभी से वह जरा-व्याधि से वंचित रहकर केवल दुर्घटना का शिकार होकर ही मृत्यु को प्राप्त होता है। उसी समय से कौवा जाति अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करती है और संसार के सभी प्राणी उसे घृणा एवं तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

कहा जाता है कि उस ऋषि के शाप के कारण ही मनुष्य इसके मांस को भी घृणित एवं अभक्ष्य मानकर उसका सेवन नहीं करते। केवल मनुष्य ही क्यों, अन्य कोई पशु-पक्षी भी जीवित अथवा मृत कौवे के मांस का भक्षण नहीं करता है।

कौवों में जातीय एकता अन्य पशु-पक्षियों की तुलना में बहुत अधिक पाई जाती है। यदि किसी एक कौवे पर संकट आ जाए अथवा कोई कौवा किसी दुर्घटना का शिकार हो जाए तो पलभर में ही सैकड़ों-हजारों कौवे उसके समीप घिर कर जोर-जोर से कांव-कांव करना आरम्भ कर देते हैं।

यद्यपि देखने में कौवे की दो आँखें मालूम होती हैं, परन्तु यथार्थ में उन दोनों आँखों की पुतली एक ही होती है, जिसे वह अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक इस आँख से उस आँख के गोलक में घुमा लेता है। इसी कारण कुछ लोग कौवे को 'काना पक्षी' भी कहते हैं।'

इसकी आवाज अत्यन्त कर्कश होती है और इसकी बोली 'कांव-कांव' की ध्वनि उत्पन्न करती है। यह लगातार बहुत देर तक अपनी 'कांव-कांव' की आवाज में चिल्लाता रहता है। यह पक्षी बहुत तेज उड़ान भरता है। अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करता है तथा अत्यन्त चालाक होता है। इसीलिए इसे 'नीच' अथवा 'शूद्र' पक्षी की कोटि में रखा जाता है।

कौवे से सम्बन्धित अनेक प्रकार की कहावतें और मुहावरे समाज में प्रचलित हैं, जैसे चालाक मनुष्य को कौवे की ही उपमा दी जाती है। इस पक्षी की चालाकी का एक उदाहरण यह भी पाया जाता है कि मादा कौवा जब अण्डा देने को होती है, तब वह अपने अण्डे कोयल के घोंसले में रख आती है। कोयल और कौवे के अण्डे शक्ल-सूरत में एक जैसे होते हैं अत: बेचारी मादा कोयल कौवों के अण्डों को अपना अण्डा समझकर सेती रहती है। जब अण्डे फूट कर बच्चे निकलते हैं तो वे भी शक्ल-सूरत और आकार-प्रकार में कोयल के बच्चों जैसे ही होते हैं। बेचारी कोयल उन बच्चों को स्वयं दाना खिलाकर पालती है, परन्तु जब उन बच्चों के पंख निकल आते हैं और वे उड़ने लायक हो जाते हैं, तब वे कोयल के घोंसले से निकलकर अपनी बिरादरी में जा मिलते हैं और तब बेचारी कोयल अपनी भूल पर पछताती हुई रह जाती है।

कौवे की मृत्यु दुर्घटना से ही होती है। जैसे ओले अथवा बिजली के गिरने से कहीं दब जाने अथवा कट जाने से, बिजली के तार से करंट का स्पर्श हो जाने आदि कारणों के द्वारा। किसी रोग अथवा वृद्धावस्था के कारण कौवे को मरते हुए किसी ने नहीं देखा।

कौवे का उपयोग

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कौवे को केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु अन्य पशु-पक्षी भी घृणित एवं निन्दित प्राणी समझ कर, उसके मांस तक का सेवन भी नहीं करते। संक्षेप में, जो लोग नहीं जानते वे कौवे को सृष्टि का अभागा और व्यर्थ का प्राणी अनुभव करते हैं। परन्तु जैसी कि कहावत है कि ईश्वर ने संसार में किसी भी प्राणी को अनुपयोगी बनाकर उत्पन्न नहीं किया, यह बात दूसरी है कि हम इसके यथार्थ उपयोग के विषय में अनभिज्ञ हों, उसी प्रकार कौवा भी वास्तव में अनुपयोगी अथवा व्यर्थ का प्राणी नहीं है।

विद्वानों ने बहुत कुछ अनुसंधान एवं अनुभवों के बाद जो निष्कर्ष निकाले हैं, उनमें कौवे की भी उपयोगिता प्रमाणित हुई है। उदाहरण के लिए

अच्छे-बुरे शकुन, भविष्य-ज्ञान, तान्त्रिक प्रयोग एवं चिकित्सा कार्यों में कौवे का महत्त्व प्रतिपादित हुआ है। इस पुस्तक में कौवे के महत्त्व से सम्बन्धित विभिन्न विषयों को संकलित किया गया है। जिज्ञासुओं को इन संकलित प्रयोगों के सम्बन्ध में अनुभव प्राप्त करके लाभ उठाने की आवश्यकता है।

कौवे की बोली

सामान्य रूप में कौवे के बोलने पर हमें 'कांव-कांव' की ध्वनि ही आती हुई प्रतीत होती है, परन्तु जो लोग पशु-पक्षियों की बोलियों का अध्ययन करने वाले हैं, उनका कहना है कि इस 'कांव-कांव' की ध्वनि में एक सम्पूर्ण भाषा का समावेश रहता है, जिसके द्वारा कौवा अपने मन की भावनाओं को अपने सजातियों तथा अन्य प्राणियों पर प्रकट करने का प्रयत्न करता है। जो मनुष्य उसकी बोली के रहस्य को समझ सकते हैं, वे उसके यथार्थ अर्थ को जान लेते हैं।

कहा जाता है कि नील नदी में जब बादशाह फरऊन का लश्कर डूबा था, उसकी भविष्यवाणी एक कौवे ने बहुत पहले ही कर दी थी। कोई तान्त्रिक, जो कौवे की बोली समझता था, एक दिन कौवे पर किसी तान्त्रिक प्रयोग को कर रहा था, उसी समय कौवे ने उसे यह बताया कि अमुक दिन शाह फरऊन का लश्कर नील नदी में डूब जाएगा। तान्त्रिक ने यह बात बादशाह के लोगों को बताई परन्तु उन्होंने उसे हँसी में उड़ा दिया। परन्तु ज़ब कुछ दिनों बाद यथार्थ में वैसी ही घटना घटी, तो लोगों को विश्वास करना पड़ा।

इसी प्रकार दास वंश के प्रथम बादशाह को बादशाहत मिलने की भविष्यवाणी भी एक कौवे ने ही की थी, ऐसा सुना जाता है। इस प्रकार यह पक्षी भविष्यवाणी करने वाला प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस पक्षी को भविष्य में घटने वाली घटनाओं का वर्षों पहले से ज्ञान हो जाता है।

भारतवर्ष में आमतौर पर यह विश्वास प्रचलित है कि यदि किसी दिन घर की मुंडेर पर बैठा हुआ कोई कौवा जोर-जोर से कांव-कांव शब्द करे, तो उस दिन या तो घर में किसी अतिथि का आगमन होता है अथवा किसी अन्य प्रकार से खर्च में वृद्धि होती है। इससे भी स्पष्ट है कि कौवा आने वाले

भविष्य के विषय में गृह स्वामी को सचेत कर जाता है।

कहते हैं कि यदि कौवे को बचपन से ही पाला-पोसा जाए और उसे उचित अहार देकर तोते की भाँति मनुष्य की बोली बोलना सिखा दिया जाए तो उस स्थिति में वह कौवा ऐसी-ऐसी भविष्यवाणियाँ करता है, जिन्हें सुनकर कोई भी मनुष्य आश्चर्यचकित हो सकता है।

ईराक निवासियों के विषय में कहा जाता है कि वे लोग कौवे द्वारा भविष्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे पकड़ कर किसी ताँबे के तार वाले पिंजड़े में बन्द कर देते हैं तथा दिन में दाना खिलाकर रात्रि के समय दूध और घी के साथ एक विशेष प्रकार का पौष्टिक आहार खिलाते हैं। सूखे अंगूर के दाने खिलाने की बात भी सुनी जाती है। इस प्रकार दो-तीन मास में वे कौवे को हिला लेते हैं। तदुपरान्त किसी एक रात को वे उसे अंगूरी शराब पिला देते हैं, जिसके नशे में आकर वह एक विचित्र प्रकार का नृत्य करता है तथा अनेक प्रकार की बोलियाँ बोलता है। उसी समय वह अपने हृदय के भीतर छिपे हुए रहस्यों को उगलना आरम्भ कर देता है तब पक्षियों की बोली समझने के विशेषज्ञ लोग, उसकी भाषा का मर्म समझ कर उसके द्वारा की हुई भविष्यवाणियों को नोट कर लेते हैं। समय आने पर जब उनका परीक्षण किया जाता है, तब वे शत प्रतिशत सत्य सिद्ध होती हैं।

कौवे को विभिन्न अवस्थाओं में लाने की विधियाँ

कौवे को विचित्र अवस्थाओं में लाकर, उस स्थिति में उसकी बोली द्वारा भविष्य ज्ञान प्राप्त करने की कुछ विधियाँ आगे लिखे अनुसार बताई जाती हैं—

१. किसी कौवे को पकड़कर तीन दिन और तीन रात तक पिंजड़े में बन्द रखें। इस बीच उसे खाने के लिए उबले हुए चावल, गेहूँ और पानी दें। चौथे दिन प्याज के छह माशे, अर्क में चार रत्ती कश्मीरी केशर, एक रत्ती कस्तूरी तथा छह माशे शहद मिलाकर इन सब वस्तुओं को शुद्ध पानी में घोलकर पिला दें। इस मिश्रण के पिलाने पर कौवा एक प्रकार के नशे में आ जाता है और

अपने मुँह से अनेक प्रकार की बोलियाँ बोलता है, जिनमें भविष्यवाणियाँ भी होती हैं।

२. गेहूँ के आटे की रोटी में गाय का शुद्ध घी तथा चीनी मिलाकर कौवे को भरपेट खिला दी जाए, तो वह खाने के एक घण्टे बाद प्रसन्नतापूर्वक उड़ता हुआ आबादी से बाहर किसी वृक्ष पर जा बैठता है और कुछ-कुछ तोते जैसी बोली में आधा घण्टे तक भविष्यवाणियाँ करता रहता है। तदुपरान्त वह मूर्च्छित हो जाता है। फिर एक घण्टे तक नींद में बेहोश सा रहने के बाद अपनी स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त होकर अन्यत्र उड़ जाता है।

३. कीकर का गोंद एक माशा, कपूर आधा माशा और चीनी का बूरा छह माशा—इन सब वस्तुओं को पीसकर एक तोले पानी में मिलाकर शर्बत सा बना लें। फिर उस शर्बत में खमीरी रोटी के टुकड़े भिगोकर कौवे को खिला दें तो वह बुल-बुल जैसी मीठी आवाज में बहुत देर तक बोलता रहता है, जिसमें अनेक प्रकार की भविष्यवाणियाँ भी होती हैं।

४. जायफल चार माशा, हल्दी दो रत्ती और कस्तूरी चार रत्ती—इन सबको वेदमुश्क के अर्क में पीसकर उसमें एक छटांक चीनी मिलाकर शर्बत बना लें। फिर उसमें गेहूँ के आटे की रोटियों के टुकड़े डालकर भीग जाने पर उन्हें इस तरह मसल दें कि हलुआ सा हो जाए। फिर वह हलुवा सायंकाल के समय कौवे को खिलाकर, उसे पिंजड़े में बन्द कर दें। दो घण्टे बाद कौवे को पिंजड़े में से निकालकर एक ऐसे बन्द कमरे में छोड़ दें, जिसमें हल्का-हल्का प्रकाश हो। स्वयं किसी शीशे की खिड़की में से कमरे के भीतर का दृश्य देखें अथवा कमरे के भीतर ही बिछी हुई किसी चारपाई पर लेटकर देखें तो ज्ञात होगा कि कुछ समय तक चकित सा रहने के उपरान्त वह कमरे में रखी हुई किसी वस्तु अथवा आले (ताख) आदि में बैठ गया है और मस्ती में आकर कुछ गुनगुना रहा है। साथ ही वह विचित्र प्रकार से नृत्य

भी करता रहेगा। कुछ देर और बीत जाने पर वह उतार-चढ़ाव के साथ विभिन्न प्रकार की बोलियाँ बोलने लगेगा, जिसमें अनेक रहस्यों का उद्घाटन भी होगा।

५. भंग की पत्तियों को पानी के साथ घोंटकर छान लें। फिर उस पानी में चने के बेसन को गूँदकर, उस बेसन की तिल के तेल में पकौड़ियाँ तल लें। उन पकौड़ियों को कौवे को खिला दें। कुछ देर बाद कौवा झूमता हुआ उड़कर किसी वृक्ष पर बैठेगा और कोयल जैसी बोली में गाता हुआ अनेक प्रकार की भविष्यवाणियाँ करना आरम्भ कर देगा।

६. धनिये का छिलका उतारकर उसके मगज को भैंस के दूध में खीर की भाँति गाढ़ा पकाकर बर्फी की तरह जमा दें फिर उसके टुकड़े काटकर कौवे को खिला दें। यदि धनिये को दूध में उबलते समय, पीला रंग लाने के लिए थोड़ी सी पीसी हुई हल्दी भी डाल दी जाए तो अधिक अच्छा होगा। दूध में चीनी डालना भी आवश्यक है। इन टुकड़ों को कौवे को खिला दें तो वह कुछ देर बाद ही चिड़िया की भाँति फुदक-फुदक कर नाचना तथा बोलना आरम्भ कर देगा। उस समय उसके द्वारा भविष्यवाणियाँ भी कर दी जाएँगी।

कौवे से अन्य प्रकार की बोलियाँ बुलवाना

कौवे की स्वाभाविक आवाज के अतिरिक्त यदि उससे अन्य प्रकार की बोलियाँ सुनने की इच्छा हो तो निम्नलिखित प्रयोगों को काम में लाना चाहिए—

१. मक्की के दानों को थूहर के दूध में चौबीस घण्टे तक भिगोकर, छाया में सुखा लें फिर उन्हें कौवे को खिला दें तो वह पागलों की भाँति इधर-उधर चक्कर काटता हुआ मेंढक जैसी बोली बोलना आरम्भ कर देगा।

२. भेड़ के सूखे हुए रक्त को गेहूँ के आटे में मिलाकर उसकी रोटी

बनाकर कौवे को खिला दें तो खाने के आधा घण्टे बाद ही वह कौवा भेड़ जैसी आवाज में बोलने लगेगा।

३. किसी कौवे को जायफल का पानी पिला दिया जाए तो वह थोड़ी देर बाद मुर्गे की तरह अन्य कौवों से लड़ना और एक विचित्र प्रकार की आवाज में गुर्राना प्रारम्भ कर देगा। वह मीलों तक अन्य कौवों का पीछा करता चला जाएगा और थक जाने पर किसी वृक्ष पर जा बैठेगा। इस समय उसमें घण्टों तक उड़ने की शक्ति नहीं रहेगी।

४. यदि किसी कौवे को बाज के पोते का पानी पिला दिया जाए तो वह थोड़ी देर बाद बाज की तरह कठोर स्वर में बोलना तथा उसी तरह उड़कर अन्य छोटे-मोटे पक्षियों पर झपट्टा मारना आरम्भ कर देगा परन्तु उन पक्षियों को पकड़ लेने के बाद छोड़ दिया करेगा और स्वयं तेजी से आगे की ओर उड़ता चला जाएगा। जब बहुत थक जाएगा तब वह मूर्च्छित होकर किसी स्थान पर गिर जाएगा और एक घण्टे बाद ही उठ सकेगा।

५. बरगद के रस में मंजीठ की जड़ को घिसकर, उसमें चील के मांस का कीमा मिला दें। उस कीमे को किसी कौवे को खिला दें तो वह चील के समान बोलना तथा चील के घोंसलों में घुसना आरम्भ कर देगा। लगभग दो घण्टे तक इसकी यही अवस्था बनी रहेगी।

६. ईसबगोल की भूसी को भेड़ के दूध में डालकर खीर पकाएँ उसमें शक्कर के स्थान पर शहद मिलाकर थोड़ा सा गुलाब जल डाल दें फिर सिंघाड़े के आटे की रोटी बनाकर उस रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करें तथा उन टुकड़ों को उक्त खीर में डालकर किसी कौवे को खिला दें। टुकड़ों को खाते ही वह कौवा कबूतर जैसी चाल चलता हुआ उसी तरह की बोली बोलने लगेगा तथा रात्रि में शयन करने के लिए किसी कबूतर के घोंसले में ही जा पहुँचेगा यदि वहाँ किसी कबूतर को देखेगा तो उससे लड़ने

लगेगा फिर वहाँ से लड़कर किसी दूसरे कबूतर के घोंसले में चला जाएगा। तात्पर्य यह कि रात भर इसी प्रकार करता रहेगा और कहीं ठहर नहीं पाएगा। अन्त में जब पूर्वोक्त खाद्य का प्रभाव दूर हो जाएगा तब वह अपने ठिकाने की ओर उड़ जाएगा।

७. काले साँप के कच्चे मांस को नारियल के तेल में तलकर कौवे को खिला देने से कौवा अन्धा हो जाएगा। उस समय उसकी बोली छिपकली जैसी होगी उसी स्थिति में यदि उसे लहसुन का अर्क पिला दिया जाए तो आँखें ज्यों की त्यों ठीक हो जाएगी और अपनी स्वाभाविक आवाज में कांव-कांव करता हुआ उड़ जाएगा, मरेगा नहीं।

८. शीशम के पत्तों का एक तोला रस निकालकर उसमें दो माशे भीमसेनी कपूर तथा छह माशे नींबू का रस मिलाकर दही में डाल दें वह दही किसी कौवे को खिला दें तो वह मनुष्य की तरह छींकना आरम्भ कर देगा तथा उसकी आवाज ऊँट जैसी हो जाएगी।

कौवे की विभिन्न बोलियों से भविष्य ज्ञान

सामान्यतः कौवे की बोली का कांव-कांव शब्द ही सुनाई देता है परन्तु यदि ध्यानपूर्वक सुना जाए तो उस कांव-कांव ध्वनि में भी स्पष्ट अन्तर जान पड़ता है। उस अन्तर के अनुसार कोवे की बोलियों से भविष्य का ज्ञान नीचे लिखे अनुसार बताया जाता है—

१. यदि कौवा 'क्' शब्द का उच्चारण करे तो विशेष लाभ होने की सम्भावना समझनी चाहिए।

२. यदि कौवा 'क्रेन-क्रेन' शब्द बोले तो किसी सुन्दर स्त्री से संयोग होने की सम्भावना होती है।

३. यदि कौवा 'कोल-कोल' शब्द का उच्चारण करे तो कहीं से अन्न के भण्डार की प्राप्ति होती है।

४. यदि कौवा 'क्रोन-क्रोन' शब्द बोले तो किसी मृतात्मा के स्वप्न

में दर्शन होते हैं।

५. यदि कौवा 'क्रोलन-क्रोलन' शब्द बोले तो सुख होने की आशा की जा सकती है।
६. यदि कौवा 'क्लेतन-क्लेतन' शब्द का उच्चारण करे तो शीघ्र वर्षा होने की सम्भावना रहती है।
७. यदि कौवा 'क्रोतन-क्रोतन' शब्द बोले तो किसी स्थान की लड़ाई का भेद ज्ञात होता है।
८. यदि कौवा 'कीं-कीं' शब्द का उच्चारण करे तो सभी सुखों का नाश समझना चाहिए।
९. यदि कौवा 'क्लीन-क्लीन' शब्द बोले तो किसी आदमी की मृत्यु का समाचार मिलता है।
१०. यदि कौवा 'कोइन-कोइन' शब्द का उच्चारण करे तो किसी राजा की मृत्यु का समाचार मिलता है।
११. यदि कौवा 'कुइन-कुइन' बोले तो धन के नष्ट होने का समाचार सुनने के कारण हार्ट फेल हो जाने की सम्भावना रहती है।

कौवे का विभिन्न घड़ियों में बोलने का फल

'काक चरित्र' के अनुसार एक समय शेषनाग ने धनुर्धर अर्जुन से प्रश्न किया कि किस समय कौवा किस बोली में बोले उसका क्या फल होता है, यह आप मुझे बताने की कृपा करें। उस समय अर्जुन ने दिन के घड़ी प्रमाणानुसार कौवे की बोली के शुभाशुभ फल का जो वर्णन किया, उसे आगे दिया जा रहा है—

पहली घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि प्रातःकाल की पहली घड़ी में कौवा 'अय-अय' शब्द का उच्चारण करे तो सुनने वाले को यह समझ लेना चाहिए कि उसका वह दिन सुख पूर्वक व्यतीत होने की बात कह रहा है।

दूसरी घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि दो घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा अग्नि कोण की ओर 'अय-अय'

शब्द का उच्चारण करे तो इस प्रकार समझना चाहिए।

यदि ऊपर की ओर मुँह करके बोल रहा है तो शोक का कोई कारण उपस्थित होगा और दूर देश से शोक समाचार प्राप्त होगा। परन्तु यदि नीचे की ओर मुँह करके बोल रहा हो तो पुत्र शोक होता है।

तीसरी घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तीन घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा दक्षिण दिशा में मुँह करके 'मुय-मुय' शब्द का उच्चारण करे तो जिस मकान पर बैठकर वह बोल रहा होगा, यह समझना चाहिए कि वह गृहस्वामी को अकस्मात ही धन की प्राप्ति होने की बात कह रहा है।

चौथी घड़ी में कौवे का बोलने का फल

यदि चार घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा नैऋत्यकोण में मुँह करके 'मुय-मुय' शब्द का उच्चारण करे तो चोर अथवा अग्नि का भय होता है। यदि ऊपर की ओर मुँह करके बोल रहा हो तो राज भय होता है और यदि नीचे की ओर मुँह करके बोल रहा हो तो अन्य प्रकार का भय होता है।

पाँचवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि पाँच घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पश्चिम की ओर मुँह करके 'अहा-अहा' शब्द का उच्चारण करे तो उस दिन धन की प्राप्ति होती है।

छटवीं घड़ी में कौवे का बोलने का फल

यदि छह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पश्चिम दिशा में मुँह करके 'कहा-कहा' शब्द का उच्चारण करे तो उस दिन सभी इच्छित कार्य सिद्ध होते हैं।

सातवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि सात घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा 'अहे-अहे' शब्द का उच्चारण करे तो किसी रोग से मृत्यु होती है और यदि 'जा-जा' शब्द करे तो कोई दूसरी ही बात सुनने को मिलती है।

आठवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि आठ घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा ईशान कोण से 'हा-हा' शब्द करे तो कहीं से मृत्यु की सूचना प्राप्त होती है।

नवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि नौ घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा मस्तक के ऊपर उड़ता हुआ 'हा-हा' शब्द करे तो उस दिन प्रार्थना की बात सुनने में आती है।

दसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि दस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा 'आवा-आवा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि कोई शुभ सन्देश प्राप्त होगा।

ग्यारहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि ग्यारह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा अग्नि कोण में 'भज-भज' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह पुत्र उत्पन्न होने की सूचना दे रहा है।

बारहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि बारह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा वायु कोण में 'जय-जय' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह कोई शोक की बात कह रहा है।

तेरहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तेरह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा नैऋत्य कोण में 'का-का' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह किसी बड़े दु:ख की बात कह रहा है।

चौदहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि चौदह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा उत्तर दिशा में 'कोवा-कोवा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि वह शत्रु से भय प्राप्त होने की बात कह रहा है।

पन्द्रहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि पन्द्रह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा ईशान कोण में 'जा-जा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह महान् दु:ख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

सोलहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि सोलह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पूर्व दिशा में 'कौवा-कौवा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि वह मित्र से भेंट होने की बात कह रहा

है।

सत्रहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का मन्त्र

यदि सत्रह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा दक्षिण दिशा में 'आय-आय' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह बड़े दु:ख की बात कह रहा है।

अठारहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि अठारह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा वायु में 'खाबा-खाबा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि वह किसी बड़े काम को पूरा होने की बात कह रहा है।

उन्नीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि उन्नीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पूर्व दिशा में 'महा-महा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह विदेश गमन की बात कह रहा है।

बीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि बीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा उत्तर दिशा की ओर मुँह करके 'अय-अय' ध्वनि का उच्चारण करे तो धन-लाभ होने की बात कह रहा है।

इक्कीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि इक्कीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा सिर के ऊपर मंडराता हुआ 'सा-सा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि उस मनुष्य को पृथ्वी का लाभ होगा।

बाईसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि बाईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पूर्व दिशा की ओर 'आका-आका' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह किसी अपूर्व वस्तु के लाभ की बात कह रहा है।

तेईसवी घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तेईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा अग्नि कोण में 'अद्वय-अद्वय' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह आनन्द प्राप्त होने की बात कर रहा है।

चौबीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि चौबीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा दक्षिण दिशा 'ओंवा-ओंवा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि कौवा अकाल पड़ने की बात कह रहा

है।

पच्चीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि पच्चीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा नैऋत्य कोण में 'खाये-खाये' शब्द का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह सर्प से भय प्राप्त होने की बात कह रहा है।

छब्बीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि छब्बीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पश्चिम दिशा में 'आहा-आहा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह सब ओर से लाभ होने की बात कह रहा है।

सत्ताईसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि सत्ताईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा उत्तर दिशा के कौने से 'आका-आका' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह उत्पन्न सुख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

अट्ठाईसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि अट्ठाईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा ईशान कोण में 'सा-सा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह मनोकामना सिद्ध होने की बात कह रहा है।

उन्तीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि उन्तीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा मस्तक के ऊपर मंडराता हुआ 'आँखा-आँखा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह सुख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

तीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पृथ्वी पर बैठकर 'आवा-आवा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह दुःख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

पहर के अनुसार कौवे के शब्द का फलाफल

एक दिन के चार पहर होते हैं। उनमें से किसी भी पहर में किसी भी

दिशा में बैठकर कौवे के बोलने का फलाफल अलग-अलग होता है। उसे नीचे लिखे अनुसार बताया गया है।

पहले पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के पहले पहर में कौवा यदि पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में बैठकर बोले तो उसके फलस्वरूप मित्रों से भेंट, खोई हुई वस्तु की प्राप्ति, शुभ सूचना की प्राप्ति अथवा शत्रु की पराजय होती है।

यदि उत्तर दिशा अथवा उत्तर-पूर्व दिशा के कोण में बोले तो आग लगती है अथवा कोई अन्य दुर्घटना होती है।

यदि उत्तर और पश्चिम दिशा के कोण में बोले तो लाभ होता है तथा कार्य में सफलता मिलती है।

यदि दक्षिण दिशा की ओर बोले तो कोई अशुभ समाचार प्राप्त होता है।

यदि पश्चिम और दक्षिण के कोण में बोले तो मित्र से भेंट होती है।

यदि पूर्व और दक्षिण के कोण में बोले तो बीमारी आती है।

दूसरे पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के दूसरे पहर में कौवा यदि पूर्व दिशा में बोले तो घर में किसी अतिथि का आगमन होता है अथवा चोरी होती है।

यदि पूर्व और दक्षिण दिशा के कोण में बोले तो झगड़ा होता है।

यदि दक्षिण दिशा में बोले तो मित्र से भेंट होती है।

यदि दक्षिण और पश्चिम दिशा के कोण में बोले तो आरोग्य लाभ होता है अथवा मित्र या किसी स्त्री से भेंट होती है अथवा स्वादिष्ट भोजन मिलता है।

यदि उत्तर दिशा में बोले तो धन मिलता है एवं शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

यदि पूर्व और उत्तर के कोण में बोले तो चोरी का भय होता है।

तीसरे पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के तीसरे पहर में कौवा यदि पूर्व दिशा में बोले तो वर्षा होती है। चोर का भय होता है अथवा शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

पूर्व और दक्षिण के कोण में बोले तो झगड़ा होता है अथवा कोई अशुभ सूचना मिलती है अथवा अप्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

यदि दक्षिण दिशा में बोले तो झगड़ा होता है अथवा अशुभ समाचार मिलता है।

यदि पश्चिम और दक्षिण के कोण में बोले तो बीमारी होती है अथवा वर्षा होती है।

यदि पश्चिम दिशा में बोले तो शुभ सूचना अथवा मिष्ठान्न की प्राप्ति होती है। शत्रु से छुटकारा मिलता है, नया नौकर मिलता है अथवा मनोभिलाषित कार्य पूरा होता है।

यदि पश्चिम और उत्तर के कोण में बोले तो वर्षा और आँधी आती है अथवा अशुभ समाचार मिलता है।

यदि उत्तर दिशा में बोले तो शुभ सूचना प्राप्त होती है।

यदि उत्तर और पश्चिम की ओर बोले तो रोग से छुटकारा मिलता है।

यदि ऊपर मंडराता हुआ बोले तो भोजन की प्राप्ति होती है।

चौथे पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के चौथे पहर में कौवा यदि पूर्व दिशा में बोले तो धन तथा उच्च पद की प्राप्ति होती है।

यदि पूर्व और दक्षिण के कोण में बोले तो शुभ सूचना मिलती है, मित्रों से भेंट होती है अथवा बीमारी होती है।

यदि दक्षिण दिशा में बोले तो शत्रु का भय अथवा बीमारी होती है।

यदि दक्षिण-पश्चिम के कोण में बोले तो मित्र से भेंट होती है अथवा कहीं से भय प्राप्त होता है अथवा चोरों से झगड़ा होता है।

यदि पश्चिम दिशा में बोले तो मित्र से भेंट अथवा कोई अन्य लाभ होता है।

यदि पश्चिम और उत्तर के कोण में बोले तो किसी स्त्री से भेंट अथवा यात्रा में सुख की प्राप्ति होती है अथवा वर्षा होती है।

यदि उत्तर दिशा में बोले तो किसी सुन्दर स्त्री से भेंट होती है अथवा यात्रा करनी पड़ती है।

यदि उत्तर और पूर्व के कोण में बोले तो मित्रों से भेंट होती है अथवा किसी श्रेष्ठ वस्तु की प्राप्ति होती है।

यदि कहीं जाते समय कौवा बोले तो बीमारी होती है, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है।

यदि लकड़ी पर बैठकर कौवा बोले तो शत्रुओं तथा बीमारी से छुटकारा मिलता है।

यदि ऊपर मंडराता हुआ बोले तो लाभदायक है तथा कोई शत्रु समाचार मिलता है।

विभिन्न अवसरों पर कौवे की बोली का फल

विभिन्न समयों तथा अवसरों पर कौवे की बोली का फलाफल भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। विद्वानों ने उसे नीचे लिखे अनुसार बताया है—

१. प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर कौवा बोले तो स्त्री तथा हीरे-मोती आदि का लाभ होता है एवं मन की चिन्ताएँ दूर होती हैं।
२. प्रातःकाल पूर्व और दक्षिण के कोण में कौवा बोले तो शत्रु का नाश होता है।
३. प्रातःकाल दक्षिण दिशा की ओर कौवा बोले तो कष्ट प्राप्त होता है।
४. प्रातःकाल पश्चिम तथा दक्षिण के कोण में कौवा बोले तो राज दण्ड प्राप्त होता है।
५. प्रातःकाल पश्चिम दिशा की ओर कौवा बोले तो किसी स्त्री द्वारा लाभ होता है। अन्न तथा वस्त्र की प्राप्ति होती है अथवा किसी के आगमन का समाचार मिलता है।
६. प्रातःकाल पूर्व और उत्तर के कोण में कौवा बोले तो दुःख प्राप्त होता है अथवा किसी दूसरे की अचल सम्पत्ति मिलती है।
७. तीर्थ यात्रा के लिए जाते समय यदि कौवा बोले तो यात्रा में सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है।
८. यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय यदि कौवा यात्री के घर की

ओर मुँह उठाकर अच्छे स्वरों में बोले तो यह समझना चाहिए कि मार्ग में ही किसी ऐसे मेहमान से भेंट होगी, जो यात्री के घर आ रहा होगा।

९. यदि यात्रा के समय कौवा पागल कुत्ते की भाँति बुरी तरह चिल्लाना आरम्भ करे तो उसे अत्यन्त अशुभ समझना चाहिए। उस स्थिति में यात्री को रोग एवं मृत्यु का भय बना रहता है।

१०. राजदरबार में अथवा किसी राज्याधिकारी से भेंट करने के लिए जाते समय घर से बाहर निकलते ही पूर्व दिशा की ओर कोई कौवा बोल उठे अथवा बोलता हुआ उड़ जाए अथवा पश्चिम की ओर उड़ जाए तो उस व्यक्ति को अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

११. उपर्युक्त समय यदि कौवा पश्चिम की ओर उड़ता हुआ उत्तर की ओर मुड़ जाए तो काम होगा तो अवश्य, परन्तु विलम्ब से होगा।

१२. उपर्युक्त समय यदि कौवा दक्षिण की ओर उड़ जाए तो सफलता नहीं मिलेगी।

१३. उपर्युक्त अवसर पर यदि पश्चिम दिशा की ओर कोई कौवा बोल उठे अथवा बोलता हुआ उड़ जाए तो जिस कार्य के लिए वह व्यक्ति जा रहा होगा, वह काम उसके पहुँचने से पहले ही पूरा होगा ऐसा समझ लेना चाहिए।

१४. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा पश्चिम से उड़कर उत्तर की और चला जाए तो वह काम किसी अन्य व्यक्ति के पक्ष में सम्पन्न हो चुका होगा, फिर भी अधिकारी उस व्यक्ति को भी सन्तुष्ट तथा सम्मानित करने का प्रयत्न अवश्य करेगा।

१५. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा उत्तर दिशा में बैठा हुआ बोले अथवा उत्तर दिशा की ओर उड़ जाए तो भी कार्य में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

१६. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा दक्षिण दिशा में बोले तो काम का

होना कठिन अथवा असम्भव रहेगा।

१७. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा दक्षिण से पूर्व दिशा की ओर चला जाए तो काम होगा तो अवश्य परन्तु वह कुछ समय बाद ही हो पाएगा।

१८. यदि प्रातःकाल के समय कौवा आकाश की ओर मुँह उठाकर जोर-जोर से बोले तो यह समझना चाहिए कि उस वर्ष में बीमारियाँ कम होंगी तथा साग-सब्जी एवं फल-फूलों की अधिकता रहेगी।

१९. यदि मध्याह्न काल में कौवा आकाश की ओर मुँह उठाकर जोर-जोर से बोले और उस समय धूप अधिक तेज न हो तो यह समझना चाहिए कि इस वर्ष वर्षा ठीक नहीं होगी, इस कारण अन्न, तेल तथा दूध की मात्रा में कमी तथा मूल्य में वृद्धि होगी अलबत्ता लाल रंग की वस्तुएँ कुछ सस्ती हो जाएँगी।

२०. यदि सायंकाल में सूर्यास्त के समय जबकि धूप का जो बिल्कुल भी न हो, कोई कौवा आकाश की ओर सिर उठाकर जोर-जोर से बोले तो यह समझ लेना चाहिए कि इस वर्ष वर्षा बहुत अधिक होगी। अन्न, वस्त्र, दूध, दही, घी आदि का उत्पादन खूब होगा तथा ये सभी वस्तुएँ सस्ती भी रहेंगी। कहीं-कहीं हैजा, ज्वर तथा आमाशय के रोगों का प्रकोप होगा, परन्तु कुल मिलाकर प्रजा सुखी रहेगी।

कौवे की छाया से शुभाशुभ का ज्ञान

दिन में जिस समय कोई कौवा बोल रहा हो, उस समय एक सात अंगुल लम्बे तिनके के टुकड़े को लेकर, उसकी छाया को नाप लें। जो भी नाप हो उसको दूना कर लें। उस दूने नाप में सात की संख्या का भाग दें। जो शेष बचे उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. यदि एक शेष बचे तो श्रेष्ठ भोजन की प्राप्ति होगी।

२. यदि दो बचे तो गाँव में किसी के घर में बालक का जन्म होगा।

३. यदि तीन बचे तो घर में किसी की मृत्यु होगी।
४. यदि चार बचे तो अग्नि का भय होगा अथवा कोई अन्य झंझट खड़ा हो जाएगा।
५. यदि पाँच बचे तो कहीं से किसी शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।
६. यदि छह बचे तो अथवा शून्य बचे तो यह समझ लेना चाहिए कि कोई शुभाशुभ नहीं होगा। कौवा वैसे ही बोल रहा है।

कौवे के स्पर्श का फल

यदि कौवे का शरीर के किसी अंग से स्पर्श हो जाए तो उसका फलाफल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. यदि कौवा मस्तक का स्पर्श करे तो धन की हानि होती है अथवा मृत्यु होती है।
२. यदि कौवा कमर अथवा कन्धे का स्पर्श करे तो रोग अथवा किसी अन्य अशुभ फल की प्राप्ति होती है।
३. यदि कौवा किसी सुहागिन स्त्री के मस्तक अथवा कन्धे पर बैठ जाए तो उसके पति अथवा पुत्र की मृत्यु हो जाती है।
४. यदि कौवा किसी युवा पुरुष के मस्तक का स्पर्श करे तो यह समझना चाहिए कि या तो उसे कोई भयानक बीमारी होगी अथवा सुख सौभाग्य नष्ट होगा।
५. यदि कौवा किसी क्वारी कन्या के मस्तक, सिर अथवा कन्धे का स्पर्श कर ले तो यह समझना चाहिए कि उस लड़की का विवाह तो शीघ्र हो जाएगा। परन्तु विवाह के पश्चात् उसका सुख सौभाग्य नष्ट हो जाएगा और पति के साथ निर्वाह होना कठिन रहेगा।
६. यदि मार्ग में चलते हुए कौवा कन्धे पर आकर बैठ जाए तो उस व्यक्ति को यह समझ लेना चाहिए कि शत्रु उस पर विजय प्राप्त करके रहेगा।
७. यदि कौवा पाँवों पर आकर गिर पड़े तो यह समझना चाहिए कि शत्रु या तो नष्ट हो जाएगा अथवा हार मान लेगा।

८. यदि कौवा किसी वस्तु को हाथ में से छीनने के लिए झपटे और वह छीनने में सफल भी हो जाए तो उस स्थिति में वह व्यक्ति यदि कोई मुकद्दमा लड़ रहा होगा, तो उसमें उसकी हार हो जाएगी। परन्तु छीनने में सफल न रहे तो विजय होने की बात समझनी चाहिए।
९. सूर्योदय से पूर्व मार्ग में चलते हुए यदि अचानक ही कोई कौवा आकर पाँवों पर गिर पड़े तो यह समझना चाहिए कि कोई बड़ी उपाधि, पदवी, नौकरी अथवा अन्य प्रकार की उन्नति प्राप्त होगी।

कौवे के शकुन और अशुकनों का वर्णन

कौवे के बैठने, बोलने, मंडराने, गिरने, देखने आदि कारणों से जो शकुन और अशकुन होते हैं, उन्हें नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

अतिथि के आगमन का शकुन

घर की दीवार अथवा मुंडेर पर एक या अधिक कौवे बैठकर जोर-जोर से कांव-कांव करे तो यह समझना चाहिए कि घर में अतिथियों का आगमन होने वाला है।

धन-धान्य की वृद्धि का शकुन

घर के किसी पानी भरे हुए बर्तन में प्रात:काल के समय कौवे को उछालते हुए अथवा स्नान करते हुए दिखाई दें, तो यह समझ लेना चाहिए कि उस घर में लक्ष्मी की अत्यन्त कृपा होने वाली है अर्थात् वहाँ धन धान्य आदि किसी भी वस्तु की कमी नहीं रहेगी।

लक्ष्मी वृद्धि एवं सुख प्राप्ति का शकुन

जिस घर में कौवे प्रतिदिन आकर दाना पानी खाते पीते हों और प्रसन्न होकर जाते हों, वहाँ किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। उस घर में धन-धान्य की वृद्धि होती है तथा सब लोग स्वस्थ बने रहते हैं।

संकटों के दूर होने का शकुन

यदि किसी घर में रखे हुए तेल के बर्तन में कौवा चोंच मारे तो यह

समझ लेना चाहिए कि उस घर से रोग, दुःख, दरिद्रता आदि समस्त संकट दूर होने वाले हैं तथा सब प्रकार के सुखों का आगमन होने वाला है।

सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का शकुन

यदि किसी उड़ते हुए कौवे के मुँह से कोई श्वेत अथवा पीले रंग की मिठाई शरीर के ऊपर आ गिरे तो उस व्यक्ति को सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है।

सफलता प्राप्ति का शकुन

यदि किसी व्यक्ति को मार्ग में चलते हुए ऐसा कौवा उड़ता दिखाई दे जो अपनी चोंच में किसी मीठे फल अथवा मिठाई को दबाए हुए पूर्व से पश्चिम, दक्षिण से उत्तर अथवा पश्चिम से पूर्व की ओर जा रहा हो तो उस व्यक्ति का काम बहुत जल्दी सफल होगा। परन्तु यदि कौवा अपनी चोंच में फल या मिठाई दबाए हुए उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहा होगा तो सफलता देर से और परिश्रम से प्राप्त होगी।

सम्बन्ध पक्का होने का शकुन

यदि कौवा किसी मीठे फलदार वृक्ष के ऊपर बैठा हो और उसी वृक्ष के नीचे से उसी समय किसी लड़के अथवा लड़की का रिश्ता पक्का करने के लिए जाने वाला व्यक्ति गुजरे और कौवा बैठा रहे तो यह निश्चित समझना चाहिए कि वह रिश्ता अवश्य पक्का हो जाएगा। यदि कौवा उल्टी ओर को उड़ जाए तो उस स्थिति में उस व्यक्ति को तुरन्त ही अपने घर लौट जाना चाहिए और वहाँ जाकर थोड़े से भुने हुए चने लेकर, उन्हें अपने सिर से तीस बार उतारकर, पक्षियों को डाल देने चाहिए। इससे कौवे के उल्टी ओर उड़ने का दुष्प्रभाव दूर हो जाएगा। यह क्रिया करने के बाद फिर दूसरे दिन जाने पर रिश्ता पक्का हो जाता है।

रोगी का रोग दूर होने का शकुन

जिस घर में कोई व्यक्ति रोगी हो, उसी घर का कोई अन्य व्यक्ति यदि किसी नदी, नहर अथवा तालाब में किसी कौवे को पानी पीता हुआ देखे तो उसे चाहिए कि वह उसी स्थान के पानी में से थोड़ा सा पानी घर लाकर, उसकी कुछ बूँदें रोगी के ऊपर छिड़क दे तथा भिखारियों को कुछ पैसे बाँट

दे। यदि पैसे न हों तो थोड़े से चावल उबाल कर (भात बनाकर) उसमें थोड़ी सी खांड मिलकर किसी भिखारी को खिला दे तो रोगी का रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

रोजगार प्राप्ति का शकुन

कोई व्यक्ति नौकरी अथवा व्यापार की तलाश में घर से बाहर निकले और उसे रास्ते में किसी स्थान पर गन्दगी (मल) के ऊपर बैठा हुआ ऐसा कौवा दिखाई दे जाए जो उस गन्दगी को खा रहा हो तो वह बहुत अच्छा शकुन होता है और उसे देखने वाले को नौकरी अथवा रोजगार की प्राप्ति शीघ्र हो जाती है।

सन्तान प्राप्ति का शकुन

विवाह-शादी के अवसर पर बाँटी जाने वाली मिठाई में से यदि कोई कौवा मिठाई का दाना लेकर उड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि उस नव-विवाहित दम्पत्ति को शीघ्र ही स्वस्थ, सुन्दर और दीर्घायु पुत्र की प्राप्ति होगी। यदि नमकीन वस्तु ले जाए तो पहले लड़की होगी।

पुत्र प्राप्ति का शकुन

यदि सन्ध्या के समय कौवा किसी विवाहित युवक अथवा युवती के मस्तक के ऊपर मंडराए तो यह समझ लेना चाहिए कि उसे शीघ्र ही पुत्र की प्राप्ति होगी।

विवाह होने का शकुन

प्रात:काल के समय कौवा किसी क्वारी कन्या अथवा क्वारे युवक के मस्तक के ऊपर से उड़ता हुआ निकल जाए तो यह समझ लेना चहिए कि उसका विवाह शीघ्र हो जाएगा।

धन प्राप्ति का शकुन

यदि शनिवार के दिन प्रात:काल सबसे पहले मकान के ऊपर अकेला कौवा बारम्बार 'कांव-कांव' बोलता हुआ दिखाई दे और रोकने से भी न रुके तथा उड़ा देने पर फिर वापिस आ जाए और पुनः बोलने लगे तो उसे अत्यन्त शुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसे घर के स्वामी को चाहिए कि वह उस कौवे को हाथ जोड़कर करे तथा उसे खाने के लिए मिठाई डाले। यदि

कौवा मिठाई खा लेगा तो उससे और अधिक लाभ की सम्भावना बढ़ जाएगी। इस शकुन के फलस्वरूप गृहस्वामी को नौकरी में तरक्की, व्यापार में लाभ, सट्टा, लाटरी, रेस आदि में विशेष धन की प्राप्ति होती है।

मृत्यु सूचक अशकुन

यदि किसी के घर की छत के ऊपर मरा हुआ कौवा मिले तो यह समझना चाहिए कि उस घर का या तो धन नष्ट हो जाएगा अथवा किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी।

बरबादी सूचक अशकुन

यदि किसी बन्द मकान में कौवों ने डेरा डाल दिया हो और वहाँ पर वे अपनी बीठ तथा पंखों को बिखेरते और कांव-कांव करते रहते हों तो यह समझ लेना चाहिए कि उस मकान के मालिक की बरबादी होने वाली है और वह मकान भी बहुत शीघ्र खंडहर के रूप में बदल जाएगा।

दरिद्रता सूचक अशकुन

यदि कौवा किसी के घर से सोने अथवा चाँदी का जेवर उठाकर ले जाए तो यह समझ लेना चाहिए कि अब उस घर के रहने वालों का दुर्भाग्य आरम्भ हो गया है और वहाँ दरिद्रता का निवास हो जाएगा।

घोर दरिद्रता सूचक अशकुन

यदि कोई व्यक्ति दही लेकर आ रहा हो अथवा दही को सामने रखे बैठा हो, उस समय कोई कौवा आकर उस दही में चोंच मार दे और चोंच में दही भरकर ले जाए तो यह समझना चाहिए कि वह व्यक्ति बहुत जल्दी कंगाल हो जाएगा। उसके घर में एक पैसा भी नहीं बचेगा।

अप्रतिष्ठा सूचक अशकुन

यदि कौवा किसी का रेशमी वस्त्र लेकर उड़ जाए तो उसका मान-सम्मान नष्ट हो जाता है। यदि सफेद कपड़ा लेकर उड़ जाए तो उसकी अपने ही भाई बन्धुओं में अप्रतिष्ठा होती है। इसके विपरीत यदि कौवा मैला कपड़ा लेकर उड़ जाए तो उस व्यक्ति को राजदरबार तथा अन्यत्र सब जगह सम्मान की प्राप्ति होती है।

कठिन रोग सूचक अशकुन

रात्रि के समय के अतिरिक्त यदि किसी अन्य समय में कोई व्यक्ति कौवा-कौवी को सम्भोग करते हुए देखे तो वह शीघ्र ही किसी भयानक रोग का शिकार बन जाता है।

अशुभ सूचक अशकुन

यदि किसी वृक्ष के नीचे दही अथवा अन्य भोजन पदार्थ रखे हों और उन्हें आकर कोई कौवा छू जाए तो उसे अशुभ एवं दरिद्रकारक समझना चाहिए।

हानि सूचक अशकुन

यदि कोई मनुष्य किसी कार्यवश घर से बाहर जा रहा हो उस समय यदि उसे अपने सामने आकाश से, वृक्ष से अथवा किसी मकान से कौवा पृथ्वी पर उतरता हुआ स्पष्ट दिखाई दे तो उसका वह काम बन नहीं पाता है। यदि उस कौवे की चोंच में मांस का टुकड़ा भी हो तो हानि होने के साथ-साथ किसी से लड़ाई-झगड़ा हो जाने का भय भी बना रहेगा। ऐसे दिखाई देने पर यात्री को चाहिए कि वह अपनी यात्रा को स्थगित करके घर लौट जाए। यदि जाना बहुत ही आवश्यक हो तो उस स्थिति में थोड़ी सी मिठाई लेकर उसी कौवे अथवा किसी अन्य कौवे को खिला दे तथा थोड़ी सी मिठाई स्वयं भी खाकर पानी पी ले तथा कुछ देर बैठने अथवा लेटने के बाद पुनः यात्रा करें तो अपशकुन का प्रभाव दूर हो जाता है।

असफलता सूचक अशकुन

पूर्वोक्त प्रकार की यात्रा के समय यदि कौवा ऊँचाई से उड़कर नीचे आता हो और उसके मुँह में हड्डी का टुकड़ा हो तो उस स्थिति में यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए। अन्यथा काम में असफलता मिलती है। यदि जाना आवश्यक ही हो तो कौवे को शक्कर युक्त रोटी खिलाने तथा थोड़ी सी रोटी अग्नि में डालकर, स्वयं शर्बत अथवा मीठा दूध आदि पीने के बाद ही जाना चाहिए अन्यथा काम में रुकावटें ही पड़ती चली जाएँगी।

रोगी का अशुभ सूचक अशकुन

रोगी मनुष्य के बिस्तर के समीप कौवा यदि किसी लाल रंग के कपड़े

का टुकड़ा लाकर डाल दे तो उसे बहुत बड़ा अशकुन समझना चाहिए। ऐसा रोगी जल्ल्दी स्वस्थ तो होता ही नहीं, उसके प्राणों पर भी संकट बन आता है। यदि चिकित्सा द्वारा स्वस्थ हो भी जाए, तो भी कुछ दिनों बाद फिर बीमार पड़ जाता है और बार-बार बीमार पड़ता रहता है। इस अशकुन को टालने के लिए उबले हुए चावलों में केशर मिलाकर उन्हें फकीरों भिखारियों को बँटवा देना चाहिए तथा उनसे कह देना चाहिए कि वे चावलों को खाते समय सीधे हाथ का प्रयोग करें। बाँटने से पूर्व उबले हुए चावलों को रानी के दाएँ हाथ का स्पर्श अवश्य करा देना चाहिए। अपने घर के बच्चों को भी ये चावल नहीं खिलाने चाहिए। कौवे द्वारा रोगी के समीप लाई गई वस्तु को बस्ती से बाहर एक गड्ढा खोदकर दबा देना चाहिए।

पराजय सूचक अशकुन

यदि कोई व्यक्ति जुआ, सट्ठा या रेस खेलने के लिए जा रहा हो अथवा अपने साथ किसी पशु-पक्षी का मुकाबला कराने के लिए ले जा रहा हो, उस मार्ग में उसके सिर के ऊपर कांव-कांव करता हुआ कौवा मंडराने लगे तो उसे यह समझ लेना चाहिए कि उसकी अथवा उसके पशु-पक्षी की हार होगी। ऐसी स्थिति में उसे अपनी यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए। यदि किसी कारणवश जाना अत्यन्त आवश्यक ही हो तो उसे वापिस घर लौटकर कुछ देर आराम करना चाहिए, तदुपरान्त मुहल्ले के बच्चों को कुछ पैसे अथवा मिठाई बाँटकर दुबारा प्रस्थान करना चाहिए। ऐसा करने से अशकुन का प्रभाव दूर हो जाता है।

परिवार नाश सूचक अशकुन

यदि किसी मकान की छत पर सुबह के समय बहुत से कौवे इकट्ठे होकर कांव-कांव करते हुए परस्पर लड़े-झगड़ें तो उसे अत्यन्त अशकुन मानकर यह समझ लेना चाहिए कि यह उस परिवार की बरबादी का चिह्न है तथा उस मकान में रहने वालों को धन की हानि का सामना करना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में उचित है कि छत पर जाकर कौवों को तुरन्त उड़ा दें तथा वहाँ परस्पर शरीर की रगड़ होने के कारण कौवों के जितने भी पंख पड़े हुए मिलें उन सबको झाड़ू से किसी स्थान पर एकत्र कर किसी अन्य आदमी से

उठवाकर बस्ती से कहीं बाहर दूर ले जाकर, एक गहरा गड्ढा खुदवाकर, उसमें पंखों को दबवा दें, पंखों को झाड़ने, उठाने, ले जाने, गड्ढा खोदने अथवा गाढ़ने किसी भी कार्य में अपना हाथ नहीं लगाना चाहिए। घर के बाहर के किसी आदमी से ही ये काम करानें चाहिए।

पंखों को दबवा देने के उपरान्त घर की छत के ऊपर लोबान, कपूर, चन्दन का चूरा तथा धूप को जलाना चाहिए तथा अपने घर में तीन दिन तक कथा-कीर्तन आदि मांगलिक कार्य करवाने चाहिए। तत्पश्चात् निर्धन, भिखारियों तथा बच्चों को भोजन, मिठाई, धन आदि देकर प्रसन्न करना चाहिए। इससे अपशकुन का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

वैधव्य सूचक अशकुन

यदि प्रातःकाल के समय कोई विवाहित स्त्री अपने मकान की छत के ऊपर किसी कौवे को मरा हुआ देखे तो यह समझना चाहिए कि वह शीघ्र ही विधवा हो जाएगी। यदि मृत कौवे के समीप रक्त की कुछ बूँदें भी पड़ी हुई हों तो यह समझना चाहिए कि उस स्त्री के पति की हत्या कर दी जाएगी।

इसी प्रकार यदि कोई विवाहित पुरुष प्रातःकाल के समय अपने मकान की छत के ऊपर मरे हुए कौवे को देखें तो उसे समझ लेना चाहिए कि उसकी पत्नी की मृत्यु शीघ्र ही होगी। यदि मृत कौवे के शरीर के पास रक्त की कुछ बूँदें भी दिखाई दें तो यह समझना चाहिए कि उसकी पत्नी की हत्या कर दी जाएगी।

यदि कभी ऐसा अवसर उपस्थित हो तो उस समय अन्य किसी से कोई चर्चा किए बिना मृत कौवे को चिमटे अथवा किसी अन्य वस्तु से बाहर ले जाकर किसी एकान्त स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ देना चाहिए।

ऐसा अवसर उपस्थित होने पर घुड़सवार को चाहिए कि वह तुरन्त ही घोड़े से नीचे उतर पड़े और पंख के दो टुकड़े करके, उसे अपने सिर के ऊपर के हाथ ले जाते हुए पीछे की ओर फेंक दे। पंख को सिर के ऊपर से फेंकते समय जिधर से जा रहा हो, उस ओर को मुँह तथा जिधर से आ रहा हो, उस ओर को पीठ रखनी चाहिए। इसके बाद घोड़े को कुछ देर के लिए किसी वृक्ष से बाँधकर उसकी जीन या काठी खोल दे तथा स्वयं भी कुछ देर के

लिए समीप ही लेट जाए। तत्पश्चात् यात्रा आरम्भ करने पर उसे मार्ग में जहाँ भी जल दिखाई दे, वहाँ पहले दो-चार घूँट पानी पीकर घोड़े को भी थोड़ा पानी पिलाना चाहिए। फिर कुछ देर विश्राम करने के उपरान्त यात्रा आरम्भ करनी चाहिए। इस प्रकार अपशकुन का प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

उपद्रव सूचक अशकुन

यदि किसी मकान की दीवार अथवा मुँडेर पर बैठकर कुछ कौवे परस्पर झगड़ना एवं जोर-जोर से कांव-कांव करना आरम्भ करें तो यह समझना चाहिए कि उस मकान में थोड़े ही दिनों के भीतर उपद्रवों का सूत्रपात आरम्भ होने वाला है और उस घर के निवासी परस्पर एक-दूसरे से लड़-झगड़ कर अलग-अलग हो जाएँगे।

ऐसा अवसर उपस्थित होने पर कौवों को डरा-धमका कर, भगा देना चाहिए अथवा उनके सामने खाने की कोई वस्तु डाल देनी चाहिए। जिसके कारण वे शान्त होकर लड़ना-झगड़ना बन्द कर दें। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे उड़कर किसी पड़ोस की छत पर न जा बैठें अन्यथा पड़ोसी से लड़ाई हो जाएगी। जब वे खूब दूर उड़ कर चले जाएँ तब कोई मीठी चीज बनाकर घर के सब लोगों को खिला देनी चाहिए। इससे अपशकुन का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

झगड़ा एवं हानि सूचक अशकुन

नौकरी पर अथवा व्यापारादि के लिए जाते समय यदि किसी स्थान पर कौवे परस्पर लड़ते-झगड़ते दिखाई दें तो यह चाहिए कि पहले उन कौवों को उड़ा दिया जाए तत्पश्चात् भगवन्नाम का स्मरण करते हुए कुछ देर रुकने के बाद आगे चला जाए। गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के बाद भी दिन भर मन ही मन भगवान् का स्मरण करते रहना चाहिए तथा घर लौटकर बच्चों को मिठाई बाँटनी चाहिए। ऐसा न करने पर यदि वह व्यक्ति सीधा ही अपने दफ्तर अथवा दुकान पर चला जाएगा तो उस दिन वहाँ किसी से उसका झगड़ा हो जाएगा और पूरा दिन खराब बीतेगा। सम्भव है कि किसी शारीरिक चोट का भी शिकार बनना पड़े। अत: अपशकुन के प्रभाव को नष्ट करने का पूर्वोक्त उपाय अवश्य करना चाहिए।

कौवे द्वारा अन्य शुभाशुभ का ज्ञान

कौवे द्वारा अन्य शुभ-अशुभ भविष्य का ज्ञान नीचे लिखे अनुसार समझा जाता है—

१. यदि कौवा किसी विवाहित पुरुष की पगड़ी अथवा टोपी के ऊपर बीट कर दे तो उसके घर में जल्दी ही सन्तान का जन्म होता है। यदि उसकी पत्नी गर्भवती न हो तो शीघ्र ही गर्भवती हो जाती है।

२. यदि कौवा किसी विवाहित स्त्री के वस्त्र पर बीट कर दे तो वह शीघ्र ही सन्तान को जन्म देती है। यदि प्रात:काल बीट की जाए तो लड़का होता है और मध्याह्न काल में बीट की जाए तो लड़की होती है।

प्रात:काल बीट करने पर सन्तान सुन्दर होती है। सन्ध्याकाल में बीट करने पर सन्तान कुरूप होती है। चाँदनी रात्रि में बीट करने पर सन्तान सुलक्षण एवं सुन्दर होती है। अँधेरी रात्रि में बीट करने पर सन्तान कुलक्षण एवं असुन्दर होती है।

३. यदि रविवार के दिन कोई कौवा कुएँ में गिरकर मर जाए तो उस वर्ष वर्षा बहुत कम होगी, गर्मी खूब पड़ेगी, बाढ़ आदि का प्रकोप होगा तथा वस्तुओं के दाम महँगे हो जाएँगे ऐसा समझना चाहिए।

४. यदि रविवार के दिन कोई कौवा किसी तालाब या नदी में गिरकर मर जाए तो उस तालाब अथवा नदी का जितना बड़ा पाट होगा, उतनी ही अधिक मात्रा में वर्षा कम होगी तथा अकाल अधिक पड़ेगा ऐसा समझना चाहिए। ऐसी स्थिति में कथा-कीर्तन आदि धार्मिक कृत्य करना उचित है।

५. कभी जोर की वर्षा के साथ ओले गिरें और कौवे वर्षा का ख्याल न करके, अपने घोंसलों से निकलकर ओलों को अपनी चोंच से उठाकर घोंसलों की ओर भागे तो यह समझना चाहिए कि उस वर्ष श्वेत रंग के अन्न तथा श्वेत रंग की अन्य वस्तुएँ काफी

महँगी हो जाएँगी। श्वेत रंग के अन्न के खेत नष्ट हो जाएँगे तथा देश भर में श्वेत रंग की वस्तुओं का अकाल पड़ जाएगा।

६. यदि दोपहर के समय कोई कौवा किसी ऐसे युवक अथवा युवती के सिर पर मंडराता हुआ दीखे जिसका सगाई सम्बन्ध तो हो चुका हो परन्तु विवाह न हुआ हो तो यह समझ लेना चाहिए कि उस युवक अथवा युवती का वह सम्बन्ध किसी झगड़े, मृत्यु अथवा अन्य कारण से टूट जाएगा।

७. यदि किसी समय ऐसा दिखाई दे कि आकाश पर प्रत्येक दिशा में कौवों के झुंड कांव-कांव करते हुए उड़ते चले जा रहे हैं और उनकी उड़ान अपने घोंसलों में जाकर की समाप्त होती है तो यह समझ लेना चाहिए कि आधा घण्टे के भीतर ही बहुत जोर की आँधी आने वाली है।

८. यदि किसी समय ऐसा दिखाई दे कि आकाश पर प्रत्येक दिशा में कौवों का झुण्ड खामोशी के साथ नीची उड़ान भरते हुए चले जा रहे हैं और उनकी उड़ान अपने घोंसलों में जाकर ही समाप्त होती है तो यह समझ लेना चाहिए कि आधा घण्टे के भीतर ही मूसलाधार वर्षा होगी।

कौवे के सम्बन्ध में स्वप्न विचार

जिस प्रकार मनुष्य को स्वप्न में अन्य अनेक प्रकार की वस्तुएँ दिखाई देती हैं, उसी प्रकार यदि कभी स्वप्न में कौवा दिखाई दे तो उसके शुभाशुभ के फल को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. यदि किसी मंगलवार की रात्रि को स्वप्न में कौवों का ऐसा झुण्ड दिखाई दे, जो परस्पर मिलकर मिष्ठान आदि खा रहा हो और उनमें से कोई कौवा मिष्ठान का टुकड़ा स्वप्न देखने वाले की ओर भी फेंक दे तो यह समझना चाहिए कि यदि उस व्यक्ति का विवाह नहीं हुआ है तो शीघ्र हो जाएगा, यदि सन्तान नहीं है तो शीघ्र हो जाएगी, यदि बेरोजगारी है तो शीघ्र दूर होगी। यदि कोई

मुकद्दमा चल रहा है तो उसमें विजय प्राप्त होगी। तात्पर्य यह कि जो भी मनोभिलाषा पूर्ण नहीं हुई है, वह शीघ्र पूरी हो जाएगी।

ऐसा स्वप्न देखने पर प्रात:काल उठकर भगवन्नाम का जप करते हुए ईश्वर से अपनी मनोभिलाषा पूर्ण करने की प्रार्थना करनी चाहिए तथा स्नानादि निवृत्त होकर बालकों एवं भिखारियों को मिठाई बाँटनी चाहिए, इससे कार्य की सिद्धि शीघ्र हो जाती है।

२. यदि स्वप्न में कौवा पीले, लाल अथवा श्वेत रंग की मिठाई खाता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि कहीं से आकस्मिक धन प्राप्त होने वाला है अथवा स्वप्न देखने वाला व्यक्ति किसी की सम्पत्ति का वारिस बनने वाला है।

३. यदि स्वप्न में कौवा पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर जाता हुआ दिखाई दे तो उस स्थिति में निम्नानुसार फल होता है—

स्वप्न देखने वाला रोगी पुरुष रोग से शीघ्र छुटकारा पा जाता है। निर्धन व्यक्ति को धन प्राप्त होता है। व्यापारी व्यक्ति को व्यापार में बहुत लाभ होता है। बदमाश और बदनाम व्यक्ति ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सज्जन और धर्मात्मा बन जाता है तथा लोग उसकी प्रशंसा करने लगते हैं।

४. यदि स्वप्न में कौवा घर की मुँडेर पर बैठा हुआ कांव-कांव करता दिखाई दे तो उसका फल अत्यन्त शुभ होता है। अविवाहित व्यक्ति का विवाह शीघ्र हो जाता है। अन्य व्यक्ति के घर में कोई मांगलिक आयोजन होता है।

५. यदि स्वप्न में किसी स्थान पर दावत (भोज या ज्योनार) होती हुई दिखाई दे और वहीं पर कोई कौवा भी बार-बार बोलता दिखाई पड़े तो उस व्यक्ति के घर में भी शीघ्र ही किसी दावत का आयोजन होता है।

६. यदि स्वप्न में कौवा दही खाता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने

वाले व्यक्ति को निम्नानुसार फल प्राप्त होगा—

यदि वह दरिद्री है तो धन की प्राप्ति होगी। यदि कोई मुकद्दमा लड़ रहा है, तो उसमें विजयी होगा। यदि कोई परीक्षा दे रहा है तो उसमें सफलता मिलेगी। यदि बेकार है तो उसे नौकरी अथवा व्यापार प्राप्त होगा। यदि कहीं नौकर है तो उसकी पदोन्नति होगी।

७. यदि रात्रि में दो बजे से चार बजे के बीच में स्वप्न में कौवा बैठा हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को शीघ्र ही बहुत तरक्की मिलती है। उसका भाग्योदय हो जाता है अथवा थोड़े ही समय बाद धन, धान्य सम्मान आदि की प्राप्ति होने लगती है।

८. यदि स्वप्न में कौवा दूध पीता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले के घर में शीघ्र ही पुत्र अथवा पौत्र का जन्म होता है। अथवा उसके पुत्र का विवाह शीघ्र ही किसी सुन्दरी एवं गुणवती कन्या के साथ हो जाता है।

९. यदि स्वप्न में कौवा किसी अन्य व्यक्ति का आभूषण लेकर उड़ता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले को शीघ्र ही कहीं से अकस्मात् धन की प्राप्ति होती है, परन्तु वह धन का खर्च भी शीघ्र ही हो जाता है।

१०. यदि स्वप्न में कोई कौवा जाल से छूटता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को मुकद्दमें में सफलता अथवा किसी मिथ्या अभियोग से मुक्ति प्राप्त होती है।

११. यदि स्वप्न में कौवा जाल में फँसा हुआ दिखाई दे और स्वप्न वहीं समाप्त हो जाए तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को बहुत समय तक मुकद्दमा लड़ने के उपरान्त किसी मित्र की सहायता से सफलता प्राप्त होती है।

१२. यदि स्वप्न में कौवा अपने घोंसले में बैठकर अपने बच्चों को दाना खिलाता हुआ दिखाई दे तो वह व्यक्ति जीवन भर ईमानदारी से द्रव्योपार्जन करते हुए अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण

करता है। यद्यपि यह स्वयं कठिनाइयाँ प्राप्त करता है, फिर भी ईमानदार रहने के कारण अन्त में मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग लोक को जाता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर का भक्त, सत्यवादी तथा परिश्रमी होता है।

१३. यदि कोई दरिद्री व्यक्ति स्वप्न में कौवे को आकाश से धरती पर गिरता हुआ देखे तो उसका दरिद्र दूर हो जाता है और उसे धन सौन्दर्य तथा मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

१४. यदि कोई अन्धा व्यक्ति स्वप्न में कौवे को आकाश में उड़ता हुआ देखे तो उसकी नेत्र ज्योति वापिस आ जाती है अर्थात् उसका अन्धापन दूर हो जाता है।

१५. यदि स्वप्न में कौवे का छोटा बच्चा अपने घोंसले में से सिर बाहर निकालकर कांव-कांव करता हुआ दिखाई दे तो उस व्यक्ति को बहुत समय तक कष्ट भोगने के उपरान्त सुख की प्राप्ति होती है।

१६. यदि स्वप्न में कौवा दक्षिण दिशा से पश्चिम दिशा की ओर जाता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाला व्यक्ति अपने घर वालों से लड़-झगड़ कर विदेश चला जाता है, परन्तु वहाँ जाकर उसे यश और धन की प्राप्ति होती है। अन्त में वह सम्पन्न होकर अपने घर वापिस लौट आता है और सर्वत्र उसकी प्रशन्सा होने लगती है।

१७. यदि स्वप्न में कौवा किसी जाल में फँसता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को किसी मुकद्दमे में फँसना पड़ता है, जिसमें बहुत कष्ट उठाने तथा बहुत धन खर्च करने के बाद उसे सफलता प्राप्त होती है।

१८. यदि स्वप्न में ऐसा दिखाई दे कि कोई शिकारी कौवे को अपने जाल में फँसा कर लिए जा रहा है तो उस व्यक्ति को किसी मुकद्दमे में सजा भोगनी पड़ती है।

१९. यदि स्वप्न में कौवा किसी श्वेत वस्त्रधारी व्यक्ति के कपड़ों पर

बीट करता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि उस व्यक्ति की कीर्ति को धब्बा लगेगा और सर्वत्र उसकी बदनामी फैल जाएगी।

२०. यदि किसी धनवान व्यक्ति को स्वप्न में कौवा आकाश से धरती की ओर गिरता हुआ दिखाई दे तो उसका सम्पूर्ण धन थोड़े ही दिनों में नष्ट हो जाता है और उसे दरिद्रता का महान कष्ट भोगना पड़ता है।

२१. यदि स्वप्न में कौवा अपने किसी आभूषण को लेकर उड़ जाता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि घर से लक्ष्मी जाने वाली है और दरिद्रता का आगमन होने वाला है।

२२. यदि स्वप्न में कौवा विष्ठा खाता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि स्वप्न देखने वाला व्यक्ति पाप के मार्ग पर शीघ्र ही अग्रसर होने वाला है और सब लोग उससे घृणा कर उठेंगे।

कौवे के सुनहरी पंख एवं बाल तथा नाखूनों के गुण

आमतौर पर प्रत्येक कौवे के पंख तथा नाखून काले रंग के होते हैं। परन्तु हजारों-लाखों में कोई एक कौवा ऐसा भी निकल आता है, जिसकी पूँछ या केवल एक पंख के बाल सुनहरी रंग के होते हैं अथवा दाएँ पंजे का केवल एक नाखून अथवा सभी नाखून गुलाबी या लाल रंग के होते हैं।

यदि सौभाग्यवश सुनहरे बालों के पंख वाला कौवा कभी दिखाई दे जाए, तो उसे सावधानी से पकड़कर, उसके सुनहरे रंग के पंख को नोंच लेना चाहिए और उस पंख को एक ऐसी डिबिया में जिसमें पहले से ही सिन्दूर तथा कपूर रखा हुआ हो, बन्द करके डिबिया को घर के भीतर किसी सुरक्षित स्थान में रख देना चाहिए। जिस घर में कौवे का सुनहरी पंख रहता है, उस घर में धन-धान्य की निरन्तर वृद्धि होती रहती है तथा उस घर के सभी प्राणी सर्वत्र यश और मान प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार यदि गुलाबी अथवा लाल रंग के नाखून वाला कौवा दिखाई दे जाए तो उसे सावधानी से पकड़कर कैंची द्वारा उसका नाखून काट

लेना चाहिए। उस नाखून को सोने के ताबीज में मढ़वाकर कण्ठ या भुजा में धारण करने से सब प्रकार की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं, राज दरबार में सम्मान मिलता है। मुकद्दमे में जीत, परीक्षा में सफलता तथा इच्छित व्यापार अथवा नौकरी की प्राप्ति होती है।

कौवे की विभिन्न जातियों की विभिन्न विशेषताएँ बताई गई हैं, जो निम्नानुसार हैं—

पहाड़ी कौवे पर्वतीय रहस्यों के विशेषज्ञ होते हैं तथा मैदानी कौवे मैदानी इलाके के रहस्यों के जानकार होते हैं। जो कौवा जिस क्षेत्र का निवासी होता है, उसे अपने क्षेत्र की भूत, वर्तमान एवं भविष्य की सभी घटनाओं का ज्ञान होता है ऐसा कहा जाता है।

जंगली कौवों को पृथ्वी में गड़े हुए धन एवं रहस्यों का विशेष ज्ञान होता है। शहरी अथवा देहाती क्षेत्र के कौवे चोरी आदि की घटनाओं का रहस्य बताने में प्रवीण माने जाते हैं।

कहा जाता है कि प्रत्येक जाति का कौवा अपने तान्त्रिक को, यदि वह धैर्य पूर्वक साधना करता रहे, तो स्वयं ही योग्य बना देता है। इस पक्षी को खिला-पिलाकर जितना अधिक सन्तुष्ट रखा जाए, उतना ही वह अधिक लाभदायक सिद्ध होता है।

कौवे के तान्त्रिक प्रयोग

जिस प्रकार अन्य अनेक वस्तुओं, पशु-पक्षियों आदि के माध्यम से तान्त्रिक साधन किए जाते हैं, उसी प्रकार कौवे के माध्यम से भी अनेक प्रकार के तान्त्रिक साधनों के प्रयोगों का प्रचलन है। इन प्रयोगों के सत्यासत्य के विषय में हमारा अपना निजी कोई मत नहीं है। अस्तु, इस विषय पर उपलब्ध साहित्य-सामग्री को हम खण्ड में संकलित करते हुए साधकों से केवल यही कहना चाहते हैं कि वे इन साधनों का प्रयोग करके स्वयं अनुभव प्राप्त करें। इनमें से किसी भी साधन को अपने ही दायित्व पर करना चाहिए, क्योंकि इनके किसी भी भले-बुरे परिणाम का कोई दायित्व हमारे ऊपर न होगा। विश्वास फलदायकं की उक्ति के अनुसार विश्वासकर्ता के लिए ये

साधन शायद फलदायक भी सिद्ध हो सकेंगे।

व्यापार प्राप्ति के लिए तन्त्र

व्यापार प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार के दिन दोपहर के समय कहीं से एक कौवे को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द करके दाना पानी देते रहें। रविवार के दिन प्रात:काल उस दही में चीनी मिलाकर खाने को दें। मध्याह्न काल में कौवे के भोजन के प्याले में थोड़ा सा चावल का भात, दूध और चीनी मिलाकर डालें तथा सायंकाल को नारियल के पानी में तर किया हुआ बाजरा और ज्वार के दानों को उसके बर्तन में रखें।

फिर सोमवार के दिन प्रात:काल इच्छित स्थान अथवा दुकान में अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए पहुँचे (जिस समय उस स्थान के भीतर प्रवेश करे उस समय यह ध्यान रखें) द्वार के भीतर प्रविष्ट होते समय पहला दायाँ पाँव ही आगे बढ़े। इस साधन के करने से वहाँ पहुँचते ही व्यापार में निरन्तर उन्नति होती चली जाएगी। सायंकाल घर लौट कर कौवे को मीठा हलुआ तथा दही खिलाकर पिंजड़े से बाहर निकालकर उड़ा दें।

नौकरी प्राप्ति के लिए तन्त्र

नौकरी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार के दिन मध्याह्न काल में कहीं से एक कौवे को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द करके रख छोड़ें तथा दाना पानी देते रहें। रविवार के दिन प्रात:काल उसे दही में चीनी मिलाकर खिलाएँ। मध्याह्न काल में दूध और चीनी मिला हुआ भात खाने को दें तथा सायंकाल नारियल के पानी में तर किया हुआ बाजरा और ज्वार के दोनों को उसके खाने के बर्तन में रखें।

दूसरे दिन प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व ही उसे गेहूँ की मीठी और घी से चुपड़ी हुई रोटी खिलाएँ। फिर उसकी नाभि में से रक्त (खून) की बूँद निकालकर, किसी बर्तन में रख लें। तत्पश्चात् नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र

लिखकर, जिस स्थान पर हस्ताक्षर करें, वहाँ पूर्वोक्त कौवे के रक्त की बूँद को स्याही में मिलाकर, कौवे के पंख की कमल बनाकर, उसे उक्त रक्त-मिश्रित स्याही में डुबाकर हस्ताक्षर कर दें। इस विधि से हस्ताक्षर करके भेजा हुआ प्रार्थना-पत्र जहाँ भी भेजा जाएगा, वहाँ से नौकरी का बुलावा अवश्य आएगा।

जब बुलावा आए, उस समय कौवे के उस पंख के बालों, जिसकी कलम बनाई गई थी, को उखाड़कर रुई के एक टुकड़े पर रखें और उसके ऊपर थोड़ी सी केशर रखकर पुड़िया बना लें। उस पुड़िया को अपनी दाईं ओर की जेब में रखकर बुलावेवाले स्थान पर जाएँ जब उस स्थान के द्वार के भीतर प्रवेश करें, उस समय यह ध्यान रखें कि पहले दायाँ पाँव ही आगे बढ़े। इस तन्त्र के प्रभाव से वहाँ प्रथम प्रवेश में ही नौकरी प्राप्त हो जाएगी और वह नौकरी स्थायी होकर निरन्तर पद वृद्धि एवं अन्य प्रकार की तरक्कियाँ कराती चली जाएगी।

नौकरी में तरक्की प्राप्त करने के लिए तन्त्र

नौकरी में तरक्की प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

प्रतिदिन प्रात:काल मीठे चावल कौवों को खाने के लिए डालें। इस नियम का एक सप्ताह तक पालन करें। प्रत्येक बार चावलों को मुट्ठी में भरकर इस प्रकार छितराएँ कि कौवे उन्हें प्राप्त करने के लिए परस्पर एक-दूसरे से रगड़ खाते रहें। इस प्रकार कौवों को बार-बार उड़ते तथा आपस में टकराते रहने के कारण उनके शरीर से छोटे-छोटे पंख रगड़ खाकर भूमि पर गिरते रहेंगे। ये पंख प्राय: कौवे की गर्दन तथा पेट के श्वेत भाग वाले स्थान के होंगे। कौवों के दाना चुगकर उड़ जाने के बाद उन पंखों को इकट्ठा करके रख दिया करें। इस प्रकार एक सप्ताह तक में बहुत से पंख इकट्ठे हो जाएँगे। आठवें दिन उन सभी कोमल पंखों को पहले शहद में भिगाएँ। फिर थोड़े से मोम को गरम करके पिघलाएँ और उन शहद में डूबे हुए पंखों द्वारा पिघले हुए मोम की सहायता से एक धागा बँट लें।

आवश्यकता के अनुरूप तरक्की के लिए प्रार्थना-पत्र लिखते समय अथवा किसी अधिकारी आदि से भेंट करते समय उस धागे को अपनी दाईं कलाई पर बाँध लें। इस विधि से लिखा गया प्रार्थना-पत्र अथवा लिखने वाला व्यक्ति स्वयं ही जब अधिकारी के पास पहुँचेगा, तब अधिकारी प्रसन्न होकर उसे तरक्की दे देगा।

परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए तन्त्र

परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

चौदहवीं के चाँद की रात को जब सूर्यास्त हो रहा हो और प्रकाश बहुत धुँधला हो, उस समय एक कौवे को पकड़कर उसकी गर्दन में सात गाँठों वाला एक लाल रंग का सूती धागा बाँध दें। गाँठें इस प्रकार की हल्की लगी होनी चाहिए कि उन्हें आवश्यकता के समय सुविधापूर्वक खोला जा सके।

पकड़ने के बाद कौवे को एक पिंजड़े में बन्द करके उसे खाने के लिए दाना तथा पीने के लिए शहद मिश्रित पानी देते रहें। तीन दिन बीत जाने पर, तीसरे दिन ठीक उसी समय जिस समय कि कौवे को पकड़ा गया था, उसी स्थान पर छोड़ आएँ, जहाँ से उसे पकड़ा गया अथवा जहाँ उसका निवास था। कौवे को छोड़ते समय उसके गले में बँधे हुए पूर्वोक्त लाल रंग के गाँठदार धागे को खोलकर घर ले आएँ।

जिस दिन परीक्षा देने के लिए जाना हो, उस दिन स्नानादि से निवृत्त हो, स्वच्छ वस्त्र धारण कर, किसी पवित्र स्थान में बैठकर, भगवान् का स्मरण करते हुए उस धागे की एक-एक गाँठ को खोलते जाएँ। जब सब गाँठें खुल जाएँ, तब उस धागे को अपनी दाईं भुजा पर बाँध लें। उसके उपरान्त परीक्षा देने के लिए जाएँ तो परीक्षा में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

यदि परीक्षा एक से अधिक दिनों की हो तो पहले से ही उतनी संख्या में कौवे पकड़कर, उन सबके गले में अलग-अलग गाँठ पर डोरे बाँधकर रखें तथा पूर्वोक्त विधि से उन्हें छोड़ते समय सबके गले से डोरे खोलकर

रख लें। तदुपरान्त आवश्यकतानुरूप प्रतिदिन एक नए डोरे की गाँठें खोल कर उसे दाईं भुजा में बाँधकर परीक्षा देने जाया करें।

परीक्षा की समाप्ति पर घर वापिस आते समय धागे को उतारकर किसी नदी, कुएँ अथवा तालाब में फेंक देना चाहिए।

मुकद्दमे में विजय प्राप्त करने के लिए तन्त्र

मुकद्दमे में विजय प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

यदि कोई व्यक्ति किसी झूठे मुकद्दमे में फँस गया हो तो उसे चाहिए कि वह प्रत्येक मंगलवार के दिन सायं चार और पाँच बजे के बीच गेहूँ की रोटी के चूरे में गाय का शुद्ध घी तथा चीनी मिलाकर कौवों को खिलाया करें। जिस दिन मुकद्दमे की तारीख (पेशी) हो, उस दिन किसी कौवे की पीठ से एक लम्बा पंख लेकर, उसे अपनी दाईं ओर की जेब में डालकर अदालत में उपस्थित हो तो न्यायाधीश उस बयान पर विश्वास करके, उसके प्रति ठीक न्याय करेगा। जब तक मुकद्दमे का फैसला न हों, तब तक प्रत्येक मंगलवार के दिन पूर्वोक्त विधि से कौवों को खिलाना तथा पेशी की प्रत्येक तारीख को जेब में कौवे का पंख डालकर अदालत में जाना आवश्यक है।

सट्टे में लाभ प्राप्त करने के लिए तन्त्र

सट्टे में लाभ प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार को चाँदनी रात्रि में एक कौवे को उसके घोंसले से पकड़ लाएँ। यदि कोई अण्डा हो तो उसे भी उठा लाएँ। कौवे को घर लाकर पिंजड़े में बन्द कर दें। यदि अण्डा भी मिला हो तो उस अण्डे को तोड़कर एक खरल में डाल दें। फिर उस खरल में तीन रत्ती केशर और आधा माशा कपूर डालकर सबको भली-भाँति खरल करें। जब सब एक दिल होकर सूख जाए, तब उसकी एक गोली बना कर रख लें।

पिंजड़े में बन्द कौवे को साधारण दाना-पानी देने के साथ-साथ पाँच

दिन तक नित्य प्रति केशर और शहद मिला हुआ दही खिलाते रहें। तदुपरान्त छठे दिन केशर और शहद युक्त दही का स्वयं भी सेवन करके सट्टा करने के लिए जाएँ। यदि कौवे के अण्डे की गोली भी घर में रखी हो तो उसे अपनी दाईं ओर की जेब में डालकर ले जाएँ। गोली के साथ रहने पर लाखों रुपयों का लाभ होने की आशा रहती है। यदि गोली न हो तो भी सट्टे में बहुत लाभ होने की उम्मीद की जा सकती है।

सट्टे के स्थान से घर लौटने पर पिंजड़े में बन्द कौवे को बाहर निकालकर, उसके मस्तक पर केशर का तिलक लगाकर पूर्व दिशा की ओर छोड़ देना चाहिए।

जब भी सट्टा करना हो, तब इसी विधि के अनुसार कार्य करने से हमेशा लाभ ही होता है, नुकसान नहीं होता।

लाटरी या पहेली में लाभ प्राप्त करने के लिए तन्त्र

लाटरी अथवा पहेली में लाभ प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

किसी कौवे के अपने आप गिरे हुए पंख को कलम बनाकर, उसके ऊपर केशर के छींटे दें, फिर उस कलम के द्वारा लाटरी की टिकट को लिखें अथवा पहेली का हल भरें तो उसके फलस्वरूप लाटरी अथवा पहेली में लाभ प्राप्त होता है।

रेस में जीतने के लिए तन्त्र

रेस में जीतने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

एकादशी के दिन एक कौवे को पकड़कर उसे आधे घण्टे तक गूगल की धूनी दें। फिर उसे मीठा दही तथा अंगूरों का रस खिला-पिलाकर एक हिरन की पीठ से इस प्रकार बाँध दें, जैसे कि कौवा हिरन के ऊपर सवार हो। तदुपरान्त पीठ पर कौवा बँधे हुए हिरन को जंगल में ले जाकर पन्द्रह बीस मिनट तक खूब दौड़ाएँ। फिर हिरन की पीठ से कौवे को खोलकर घर ले आएँ और उसे रात भर एक लोहे के पिंजड़े में बंद रखें। सबेरा होने पर उसे

पुनः मीठे दही तथा अंगूरों के रस का सेवन कराएँ और बाद में गूगल की धूनी दें।

तीन दिन तक इसी प्रकर नित्य करते रहें। चौथे दिन उसे प्रातःकाल भोजनादि देकर दोपहर के समय मार डालें तथा उसके बाएँ पंजे को काटकर अलग रख लें। मृत शरीर के शेष भाग को किसी गड्ढे में दबाकर बन्द कर दें।

कौवे का कटा हुआ पंजा जब भली-भाँति सूख जाए, तब हिरन का थोड़ा सा नाखून लेकर, उसे कौवे के पंजे के साथ मिला रखें। फिर किसी सुनार से चाँदी और सीसे की मिश्रित धातु का ताबीज बनवाकर, उसके भीतर उपर्युक्त दोनों वस्तुओं को बन्द करवाकर ताबीज को मढ़वा लें। जब रेस के लिए जाना हो, उस समय इस ताबीज को अपनी दाईं जाघ में बाँधकर जाएँ। इस ताबीज को दाईं जांघ में बाँधकर रेस में घोड़ा दौड़ाने वाला व्यक्ति पहला नम्बर प्राप्त करता है।

जेब खाली न रहने का तन्त्र

जेब खाली न रहने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

पुष्य नक्षत्र में कौवे के दाएँ पाँव का नाखून लेकर, जेब में रखने से जेब कभी खाली नहीं रहती।

राज-दरबार में सम्मान प्राप्ति के लिए तन्त्र

राज-दरबार में सम्मान प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

प्रातःकाल किसी बड़े मन्दिर, मस्जिद, गिरजा अथवा गुरुद्वारे के शिखर पर बैठे हुए अथवा किसी बाग और मैदान के बड़े वृक्ष के घोंसले में बैठे हुए एक कौवे को पकड़कर लाल रंग के वस्त्र में लपेट लाएँ। लाल रंग का वस्त्र पहले से ही अपने साथ ले जाना चाहिए। घर लाकर उस कौवे को लकड़ी के किसी ऐसे पिंजड़े में बंद दें, जिसके नीचे की तह में पहले से ही एक लाल रंग का कपड़ा बिछा हुआ हो।

उस कौवे को शुद्ध गाय के घी में तली हुई पूड़ियाँ ऐसे दही के साथ खिलाएँ, जिसमें गुलाब और केवड़े का अर्क पड़ा हुआ हो। पूड़ी के प्रत्येक ग्रास के साथ थोड़ा सा शहद भी मिला लेना चाहिए। प्रत्येक ग्रास को अपने हाथ से ही खिलाना चाहिए। प्रात:काल यह भोजन कराकर दोपहर को खाने के लिए कुछ भी दिया जा सकता है। यही स्थिति रात्रि के भोजन की भी है।

रात्रि में पिंजड़े के सम्मुख अगर, कपूर, गुग्गल तथा सफेद चन्दन के बुरादे की धूनी देनी चाहिए। यह क्रिया निरन्तर पाँच दिन तक करनी आवश्यक है।

पाँचवें दिन कौवे के ऊपरी भाग का सबसे बड़ा एक पंख निकालकर, उसे अपने मस्तक के चारों ओर दाईं से बाईं ओर को तीन चक्कर लगाकर छोड़ दें। तदुपरान्त जब कभी राज-दरबार अथवा किसी अन्य बड़े आदमी के घर, सभा-सोसाइटी आदि में जाना हो, उस समय कौवे के उस पंख में थोड़ी सी केशर लगाकर, उसे अपनी पगड़ी या टोपी के अग्र भाग में अथवा दाईं ओर की जेब में रखकर जाए, तो वहाँ हर प्रकार से सम्मान की प्राप्ति होगी।

इस प्रयोग करने से राजा, मन्त्री, अधिकारी आदि साधक को अत्यन्त सम्मान देकर, उसकी हर बात को मान लेंगे।

कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए तन्त्र

कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

किसी कठिन कार्य की सिद्धि के लिए जाते समय घर से निकलने से पूर्व ही अपने हाथ में एक रोटी ले लें। मार्ग में जहाँ भी कौवा अथवा कौवे दिखाई दें, वहाँ उस रोटी के टुकड़े करके डाल दें और आगे बढ़ जाएँ। इससे कठिन कार्यों में भी सफलता प्राप्त होती है। यदि रोटी के टुकड़े खाने के बाद कौवों का झुण्ड आपके पीछे आता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि कैसा भी कठिन कार्य क्यों न हो, उसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

पशु के दूध अधिक देने का तन्त्र

गाय, भैंस, बकरी आदि दुधारू पशुओं द्वारा अधिक दूध देने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

सोमवार को जब चाँदनी रात हो, तब किसी भी समय एक कौवे को पकड़ लाएँ और उसे पिंजड़े में रखकर स्वाभाविक भोजन देते रहें। केवल प्रात:काल और सायंकाल उसे दो तोले की मात्रा में मक्खन, खांड और तिल का तेल मिलाकर अवश्य खिलाना चाहिए। इस प्रकार चौदह दिन तक खिलाएँ।

पन्द्रहवें दिन उस कौवे को मारकर, उसके आमाशय को निकाल लें। मृत शरीर के शेष भाग को बस्ती से दूर किसी गड्ढे में ले जाकर दबा दें।

फिर गरम पानी में थोड़ा सा नमक डालकर उसमें कौवे के आमाशय को एक घण्टे तक पड़ा रहने दें। तदुपरान्त उसे निकाल भली-भाँति साफ करके, उसमें थोड़ा सा मक्खन और आधा माशे भर चाँदी का एक टुकड़ा डालकर हरे रंग के ओधे से इस प्रकार सी दें कि न तो उसमें से मक्खन बाहर निकल सके और न चाँदी का टुकड़ा ही। फिर उसके ऊपर मक्खन चुपड़ें और उसके सब ओर काले तिल इस प्रकार चिपका दें कि वह आमाशय की थैली तिलों से एक दम ढक जाए।

इसके बाद गेहूँ का आटा गूँथकर, उसकी एक थैली बनाएँ और उसके भीतर आमाशय वाली थैली को बन्द करके सुखा लें। फिर उस आमाशय की थैली युक्त आटे की थैली को एक लाल रंग के सूती वस्त्र में लपेट कर ऊपर से लाल रंग के डोरे द्वारा इस प्रकार सी दें कि वह एक गोला सा बन जाए। बस, अब यह तैयार है।

उपर्युक्त गोले को घरेलू पशु की नांद के नीचे गड्ढा खोदकर दबा दें इसके प्रभाव से वह पशु बहुत अधिक दूध देने लगेगा।

यदि कोई गौशाला, डेरी फार्म अथवा बड़ी पशुशाला हो तो उसके ठीक बीचो-बीच किसी स्थान में गड्ढा खोदकर, उपर्युक्त गोले को गाढ़ दें। तो उसके प्रभाव से उस पशुशाला में रहने वाले सभी दुधारू पशु अधिक दूध देना आरम्भ कर देंगे।

घोड़े की चाल तेज करने का तन्त्र

घोड़े की चाल को तेज करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

शबेरात के दिन दोपहर के समय एक जवान तथा निरोग कौवे को उसके घोंसले मैं से पकड़ लाएँ। दिन में दाना बगैरह खिलाकर रात्रि को पिंजड़े में बन्द कर दें। पिंजड़े के नीचे वाले हिस्से में लाल रंग का कपड़ा बिछा देना चाहिए। कौवे को पीने के लिए पानी के स्थान पर एक छटांक गुलाब जल रख देना चाहिए।

प्रात: सूर्योदय से पूर्व पाँच बजे के लगभग कीकर की लकड़ी से एक अंगीठी में अग्नि जलाएँ। जब कोयले खूब दहकने लगें और धुआँ निकलना बन्द हो जाए, तब उसके ऊपर लाल चन्दन का बुरादा और गूगल डाल दें। इन वस्तुओं को इतनी मात्रा में डालें कि एक घण्टे तक सुगन्धित धुआँ उठता रहे। जब धुएँ के कारण कमरा खूब सुगन्धित हो जाए, तब उस कमरे में कौवे का पिंजड़ा रखकर, एक छटांक गाय के दूध के दही में दो तोले शहद मिलाकर कौवे के पिंजड़े में रख दें, ताकि वह उसे खा ले और स्वयं कमरे से बाहर निकल जाएँ।

दोपहर के समय कौवे के पिंजड़े को किसी आम के वृक्ष पर लटका दें और उसमें खाने के लिए चावल भात में शक्कर मिलाकर रख दें। रात के बारह बजने पर कौवे को पिंजड़े में से निकालकर मार डालें और उसके खून को किसी शीशी में भरकर रख दें। मृत शरीर को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर दबा दें।

सुबह होने पर शीशी में भरे हुए रक्त को खरल में डालें, उसमें एक माशे असली कस्तूरी तथा तीन माशे कश्मीरी केशर मिलाकर तब तक घौंटते रहें, जब तक कि वह मैदा की तरह महीन और खुश्क न हो जाए। तत्पश्चात् उस चूर्ण को लाल रंग की शीशी भर कर रख लें।

उपर्युक्त शीशी में भरे हुए चूर्ण को सुरमे की भाँति घोड़े की आँखों में लगाएँ तो उस घोड़े की चाल बहुत तेज हो जाएगी। यदि किसी घोड़े को रेस की दौड़ में दौड़ाना हो तो निश्चित तिथि के चालीस दिन पहले से उसकी

आँखों में पूर्वाक्त अंजन लगाते रहें तो रेस की दौड़ में वह घोड़ा सबसे पहला स्थान प्राप्त करेगा।

यदि किसी नए घोड़े को रेस में दौड़ाना हो, जिसकी आँखों में चालीस दिन पहले से उक्त अंजन न लगाया गया हो तो रेस में दौड़ाने से एक घण्टा पूर्व उस घोड़े की आँख में इस अंजन को लगा दें तथा एक रत्ती भर चूर्ण उसकी जीभ पर और दो-दो रत्ती चूर्ण उसके चारों सुम्मों पर छिड़क दें। इस क्रिया के प्रभाव से वह नया घोड़ा भी पन्द्रह-बीस मिनट के भीतर इतना शक्ति सम्पन्न हो जाएगा कि रेस की दौड़ में वह अन्य सभी घोड़ों को पीछे छोड़ देगा।

फसल की रक्षा का तन्त्र

फसल की रक्षा के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

खेत में एक या दो स्थानों पर छोटी-छोटी लकड़ी गाढ़ दें और उन लकड़ियों पर कौवे के दो-दो चार-चार पंख बाँध दें अथवा एक या दो (जितनी लकड़ी हों) कौवों को मारकर प्रत्येक लकड़ी पर एक मरे हुए कौवे को लटका दें। इसके प्रभाव से अन्य किसी भी जाति के पक्षी उस खेत की फसल को नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे।

उजड़े वृक्षों को फलदार करने का तन्त्र

उजड़े वृक्ष को फलदार करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

जिस फल देने वाले वृक्षों पर कौवों के घोंसले होते हैं वे कौवों की छाया पड़ने तथा उनका मल-मूत्र गिरते रहने के कारण फल देना कम कर देते हैं। कुछ वृक्ष तो फल देना बिलकुल ही बन्द कर देते हैं और दिन-प्रतिदिन सूखते चले जाते हैं। यदि ऐसे वृक्ष दिखाई दें तो सर्वप्रथम उनमें से कौवों के घोंसलों को बिल्कुल हटा दें, तदुपरान्त कौवों के कुछ पंख लेकर उन वृक्षों की टहनियों से यत्र-तत्र बाँध दें इससे कौवे उन वृक्षों पर दुबारा अपना घोंसला नहीं बना सकेंगे।

वृक्षों पर पहले से पड़े हुए दुष्प्रभाव को नष्ट करने के लिए निम्नलिखित प्रयोग करें—

एक मादा-कौवी को पकड़कर तीन दिन तक एक लकड़ी के पिंजड़े में बन्द रखें। उसे खाने के लिए साधारण दाना-पानी के अतिरिक्त प्रतिदिन प्रात:काल तिल के तेल में भीगे हुए दाने तथा सायंकाल तिल का तेल और चीनी मिला हुआ थोड़ा सा दूध अवश्य दें। कौवी को पकड़ने का कार्य चाँदनी रात में द्वादशी तिथि को करें। पूर्णिमा की रात्रि में ठीक बारह बजे कौवी के पिंजड़े को दुष्प्रभावयुक्त वृक्षों के नीचे लाकर, कौवी को पिंजड़े में से निकाल कर मार डालें तथा उसके रक्त को उन वृक्षों की टहनियों एवं तनों के ऊपर छिड़क दें। कौवी के मृत शरीर को उन्हीं वृक्ष में से किसी एक के नीचे गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। दूसरे दिन सुबह से उन वृक्षों को पानी देना आरम्भ करें तथा प्रतिदिन पानी देते रहें।

इस प्रयोग से दुष्प्रभावित वृक्ष दुबारा न केवल अपनी सामान्य अवस्था को प्राप्त कर लेंगे, अपितु अधिक फल देना आरम्भ कर देंगे और उनके फल पहले से अधिक मीठे तथा स्वादिष्ट भी होंगे।

खट्टे आमों को मीठा करने का तन्त्र

खट्टे आमों को मीठा करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बैशाख की पहली तिथि को दोपहर के समय एक कौवे को पकड़कर उसके सब पंखों को नोंचकर साफ कर दें। तत्पश्चात् उसके साफ शरीर को एक कोरे मटके में डालकर पानी भर दें। उसी मटके में एक से अंगूर अथवा आधा सेर किशमिश डालकर, ऊपर ढक्कन लगा दें तथा ढक्कन के ऊपर एक कपड़ा मजबूती से बाँध दें।

इसके उपरान्त जमीन में एक गहरा गढ्डा खोदकर, उसमें घड़े को रख दें। घड़े को कम-से-कम तीन फुट की गहराई में गाढ़ना चाहिए। ऊपर से मिट्टी ढककर गड्ढे को बन्द कर दें। नौ महीने तक घड़े को गड्ढे में दबा रहने दें।

उक्त अविधि के बाद जमीन को खोदकर गड्ढे में से घड़े को निकाल लें तथा पानी को धीरे-धीरे निथारकर अलग रख लें।

जब आम पर बौर आने को हो, उससे पन्द्रह-बीस दिन पहले पूर्वोक्त निथरे हुए पानी को, एक सेर की मात्रा में खट्टे आम वाले वृक्ष के तने के चारों ओर एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर डाल दें। इस प्रकार एक सप्ताह तक पानी डालते रहें। हम क्रिया के प्रभाव से उस वर्ष उस वृक्ष में जो फल लगेंगे वे अत्यन्त मीठे तथा अधिक मात्रा में होंगे। यह क्रिया प्रतिवर्ष करनी चाहिए।

बिना ताली के ताला खोलने का तन्त्र

बिना ताली के ताला खोलने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

रविवार के दिन दोपहर के समय एक दम नंगा होकर कौवे के घोंसले के पास जाकर, उसे उतार लाए। फिर गुग्गल की धूनी देकर, श्मशान में ले जाए और वहाँ चिता की अग्नि में घोंसले को जलाकर राख कर ले। उस राख को किसी शीशी में भरकर अथवा पुड़िया में बाँधकर रख लें।

इस चुटकी भर राख को बन्द ताले के ऊपर डालने से वह बिना ताली लगाए ही खुल जाता है।

इच्छानुसार वर्षा होने का तन्त्र

इच्छानुसार वर्षा होने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय जंगल में पहुँचकर किसी ऐसे बेरी के वृक्ष को ढूँढ़े, जिस पर कौवे का घोंसला हो और उस घोंसले में मादा-कौवा रहती हो यदि ऐसा घोंसला मिल जाए तो ठीक, अन्यथा एक घण्टे बाद घर वापिस लौट आएँ। सूर्यास्त के एक घण्टे बाद खोजबीन का काम न करें। दूसरे शनिवार को फिर खोज करें। इस प्रकार खोज का कार्य केवल शनिवार के दिन पूर्वोक्त समय के भीतर करना चाहिए। जब भी मादा कौवा के बारे में जानकारी हो जाए, तब उस स्थान का भली-भाँति ध्यान कर लें।